डिंडा कुड़

कुँआरी कन्या

आदित्य प्रसाद सिन्हा

डिंडा कुइ (कुँआरी कन्या)

डॉ. आदित्य प्रसाद सिन्हा

विकल्प प्रकाशन
दिल्ली-110094

ISBN : 978-93-82695-89-9

मूल्य : चार सौ रुपये

प्रथम संस्करण : 2018

प्रकाशक : विकल्प प्रकाशन
2226/बी, प्रथम तल, गली नं. 33,
पहला पुस्ता, सोनिया विहार,
दिल्ली–110090
मोबाइल : 9211559886

आवरण : मंतोष

शब्द–संयोजन : मुस्कान कम्प्यूटर्स, दिल्ली–110094

मुद्रक : आर्यन डिजिटल प्रेस नई दिल्ली – **110002**

Dinda Kuei (Kunwari Kanya)
by *Aditya Prasad Sinha*

Price 400.00

प्राक्कथन

पश्चिमी सिंहभूम के कोल्हान क्षेत्र में अपने सेवा काल की लम्बी अवधि में हो जनजाति के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन के अवलोकन एवं सम्मिलन के फलस्वरूप वहाँ के प्रचलित रीति–रिवाज, पारम्परिक मान्याताएँ, धार्मिक आस्था, लोक विश्वास, आदि की जानकारी प्राप्त करने का मुझे अवसर मिला। उनके पर्व–त्योहार, शादी–विवाह, मृत्यु संस्कार में भी सामिल होने का यथेष्ट अवसर प्राप्त हुआ। इन सभी के माध्यम से उनकी सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों और विविधताओं की जानकारी प्राप्त हुई।

हो समाज में आंदि या विवाह का महत्त्व एवं परम्परा अनादि काल से प्रचलित है। मानव सृष्टि संबंधी मुनुजगर (मिथक) में लुकु हड़म और लुकुमि बुड़ि को हो जनजाति का आदि सृजनकर्त्ता माना गया है और हो समाज में वे ही प्रथम पूर्वज के रूप में पूज्य हैं।

हो मिथको में सिंगिबोंगा (सूर्यदेव) और ओतेएंगा (धरती माता) के प्रणय आंदि की लोक कथा बा, बाहा, सरहुल आदि से जुड़ी हुई है। इस मिथक में सूर्य एवं धरती का डिंडा सेपेड और डिंडाकुइ (कुँआरा युवक एवं कुँआरी युवती) के रूप में मानवीकरण किया गया है। आंदि से जुड़ी दूसरी कथा 'गोनोङ' (वधु मूल्य) भी आदि काल से चली आ रही परम्परा पर आधारित है। 'गोनोङ' की प्रथा के रूढ़ हो जाने के कारण अनेक हापानुम (युवतियाँ) 'डिंडाकुइ' का दंश झेलने को विवश हो जाती हैं।

इस सन्दर्भ में तत्कालीन प्रधान वन संरक्षक योगेन्द्र नाथ सिन्हा का उपन्यास 'वन के मन में' देखने को मिला। इस उपन्यास के केन्द्र में दो प्रेमियों–लुकना हो और मेजो कुइ' की व्यथा–कथा 'गोनोङ' से जुड़ी हुई है। गरीब प्रेमी लुकना को 'गोनोङ' की राशि जुटाने में दिन–रात संघर्ष करना पड़ता है। जब वह मेहनत–मजदूरी कर 'गोनोङ' देने में समर्थ हो जाता है तब 'आंदि' की अनुमति समाज द्वारा उसे प्रदान की जाती है। तब दोनों हेरेल–येरा (पति–पत्नी) बनकर दाम्पत्य जीवन में प्रवेश कर पाते हैं।

इस उपन्यास के लेखन की प्रेरणा मुझे कोलगुरू लको बोदरा के सुधारवादी आदर्शों से भी मिली। चाईबासा में अपने पदस्थापन काल में

झींकपानी अवस्थित उनकी शक्तिपीठ 'एटेः तुरतुङ अक्हड़ा' में जाने तथा उनके सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक कार्यक्रमों से अवगत होने का सुअवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने 'गोनोङ' के विरोध में भी अपना सुधार वादी अभियान चलाया था और उनके कई शिष्य एवं अनुयायी 'गोनोङ' रहित आंदि द्वारा आदर्श प्रस्तुत कर दाम्पत्य जीवन में प्रविष्ट हुए थे। गुरू लको बोदरा का यह सुधार वादी आदर्श आज भी प्रासंगिक एवं अनुकरणीय है।

'डिंडाकुइ' (कुँआरी कन्या) शीर्षक इस उपन्यास को आठ भागों में प्रस्तुत किया गया है, जिनमें अलग–अलग अनेकों पात्र और घटनाएँ हैं। परन्तु सभी के केन्द्र में कोई–न–कोई 'डिंडाकुइ' अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। उनके जीवन–संघर्षों की व्यथा कथा के साथ–साथ उनकी सफल जीवन–यात्रा को भी चरमोत्कर्ष तक पहुँचाने का प्रयास किया गया है।

इस 'डिंडाकुइ' की कथा यात्रा का स्रोत 'उत्पत्ति कथा' से संबंधित एक मिथ या मुनुजगर है, जिसमें सिंगिबोंगा (सूर्यदेव) एवं ओते एंगा के प्रणय एवं आंदि (केपेया आंदि) या प्रेम–विवाह का प्रसंग आता है। इस धर्मगाथा का रूपक बा, बाहा, सरहुल आदि पर्व से जुड़ा हुआ है। इसमें सूर्यदेव एवं धरती माता का मानवीकरण किया गया है। इस भाग में केपेया आंदि (प्रेम विवाह) का आदि स्रोत इस प्रसंग में प्रस्तुत किया गया है।

इस उपन्यास के द्वितीय भाग में 'गोनोङ' (वधु मूल्य) की उत्पत्ति के आदि स्रोत को एक पौराणिक एवं प्रचलित कथा के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। इसके मुख्य पात्र रान्दो (गुपिकोड़ा) और मानी कुई हैं। रान्दो मानी को बाघ के हमले से बचाकर अपने घर लाकर 'येरा' (पत्नी) बनाकर रखता है। मानी केघर से निस्कासन का मुख्य कारण 'जम्हाई' संबंधी प्रचलित एक अन्धविश्वास है। आगे चलकर वह अपने होने वाले होंयर (ससुर) को यथेष्ट 'गोनोङ' देकर मना लेता है और इस शादी की सामाजिक मान्यता मिल जाती है।

तीसरे भाग का कथानक बुधराम सोय (डिंडा सेपेड) और गुरबारी पुरती (डिंडाकुइ) के संघर्षमय जीवन एवं आदर्श प्रेम प्रसंग पर आधारित है। प्रारम्भ में गुरवारी के पिता सिंगराय पुरती (मानकी) इसका विरोध करते हैं और बुधराम के साथ गुरवारी के बपला (वैवाहिक संबंध) के लिए तैयार नहीं होते हैं। परन्तु जब बुधराम एक योग्य एवं समर्थ 'फौजी' जवान बन जाता है, तो वह अपनी प्रेमिका गुरवारी को पाने और उसे 'येरा' (पत्नी) बनाने में सफल हो जाता है। यह आदर्श विवाह बिना गोनोङ की बाध्यता के राजी–खुशी से

सम्पन्न हो जाता है।

उपन्यास का चतुर्थ भाग डोबरो सुन्डी नामक सेपेड (युवक) से संबंधित है, जो अपने गाँव की हापानुम डिंडाकुइ (कुँआरी युवती) मानी सुन्डी से अनजाने में प्रेम करने लगता है। परन्तु एक ही 'सुन्डी' गोत्र होने के कारण प्यार को खुलकर वह सामाजिक मर्यादा और भय से व्यक्त नहीं कर पाता है। धीरे–धीरे मानी का प्रेम उसके अर्न्तमन (सबकन्सस) में इतना गहरा बैठ जाता है, कि वह चाह कर भी उसे भुला नहीं पाता। वह रात में जब भी सोता है, मानी को सपने में देखकर वह बेचैन होकर जग जाता है। बार–बार मानी के सपने से घबरा कर वह मानी से कहता है– 'देखो मानी, तुम अपने जादू–मंतर से मुझे रात में तंग मत करो वरना उसका अंजाम बुरा होगा।'

काफी प्रयास के बाद भी जब वह उस भयावह स्वप्न से मुक्त नहीं हो पाता तो उसे विश्वास हो जाता है कि मानी जरूर डइया (डायन) विद्या जानती है। इसी अन्ध विश्वास से विवश होकर वह एक दिन मानी की हत्या कर देता है। इस प्रकार एक निरीह एवं निर्दोष डिंडा मानी कुइ विकृत यौन मानसिकता एवं अन्ध विश्वास का शिकार हो जाती है। डोबरो भी हत्या के जुर्म में हवालात में चला जाता है। इस उपन्यास में यह एकमात्र नकारात्मक (निगेटिव) घटना पर आधारित कथानक है।

पंचम भाग मंगल गगराई (सेपेड होन) और हापानुम डिंडाकुइ (कुँआरी युवती) सोनामुनि कोड़ा के जीवन पर आधारित प्रेम कथा है। दोनों दो गाँव के निवासी थे परन्तु अच्छे सहिया थे। दोनों की दोस्ती प्यार के रूप में विकसित होती है। मंगल की नियुक्ति जब शिक्षक के पद पर हो जाती है, तो वह चाहता है कि अब सोना से उसकी आंदि (शादी) की बात होनी चाहिए। मंगल की माँ इस रिस्ते के लिए तैयार हो जाती है। पर उसके पिता लंकेश्वर गगराई तैयार नहीं होते हैं। काफी प्रतीक्षा करने के बाद सोना मंगल से कहती है–'अब निश्चित समझ लो कि मैं तुम्हें शीघ्र अपना हाम–हेरेल (पति) बनाकर रहूँगी। अब मैं 'ओपोर तिपि' बपला (भाग या भगाकर शादी) विधि से अपने संकल्प को अंजाम तक पहुँचाऊँगी।'

अपने दृढ़ संकल्प के साथ एक दिन अपनी सहेलियों के साथ अपने प्रेमी मंगल के घर में प्रवेश कर जाती है। मंगल की माँ उसे रख लेती है और मंगल भी उसे स्वीकार कर लेता है।

सोना मंगल के घर में कुछ दिनों तक की परिविक्षा (प्रोवेशन) अवधि में अपने होने वाले ससुर को अपने आचार–व्यवहार, सेवा और शील से सन्तुष्ट कर देती है।

अन्ततः दोनों की शादी सोल्लास मंगल के घर पर सम्पन्न हो जाती है। यह आंदि भी गोनोंङ रहित सम्पन्न हो गई।

उपन्यास के छठे भाग में साधुचरण होनहागा की 'डिंडा होन कुइ' (कुँआरी बेटी) दयामनी और रणधीर का डिंडा होनसेड (भतीजा) बलराम की रोमांचक और सुखान्त जीवन–यात्रा को प्रस्तुत किया गया है। रणधीर सिंह चाईबासा में लोक निर्माण विभाग के कार्यपालक अभियन्ता के पद पर स्थानान्तरित होकर आए, जिस कार्यालय में साधुचरण चतुर्थ वर्गीय पद पर कार्यरत था। रणधीर सिंह के साथ उनका भतीजा भी चेनमैन पद पर कार्यरत था और लगभग चालीस वर्ष की आयु में भी अविवाहित था। साधु की बेटी दयामनी भी लगभग छत्तीस वर्ष की डिंडा कुइ थी। दोनों की शिक्षा–दीक्षा बहुत कम स्तर की थी।

दयामनी के संबंध में रणधीर सिंह को साधु से बातचीत में पता चला था कि कम पढ़ी–लिखी होने के कारण उसके बपला (विवाह) के संबंध में बातचीत के लिए कोई 'अगुआ'(बिचवान) नहीं आया। साधु को आशंका थी कि अब उसकी बेटी आजीवन डिंडाकुइ (कुँआरी कन्या) रह जायेगी।

इस गम्भीर समस्या के समाधान के लिए रणधीर सिंह ने अपने भतीजे बलराम से दयामनी की शादी का प्रस्ताव रखा और साधु को आश्वस्त किया कि दयामनी उनके घर की 'कुलवधु' बन कर सुखी रहेगी।

साधु ने इस सन्दर्भ में अपनी येरा (पत्नी) अपनी होन कुइ (बेटी) और अपने होनसेड (भतीजा) डोबरो मानकी से बातचीत की। सभी ने इस संबंध में अपनी सहमति दे दी।

निर्धारित तिथि एवं शुभ दिन को चाईबासा के मन्दिर में 'दीकु आंदि (गैर हो परम्परा की शादी) सम्पन्न हुई। इसके पश्चात् जिला अवर निबन्धक, चाईबासा के कार्यालय में दोनों–बलराम और दयामनी के विवाह का निबन्धन भी विधिवत सम्पन्न हुआ।

शादी के बाद नया वस्त्र एवं आभूषण से सुसज्जित नववधु के रूप मे दयामनी जब ससुराल पहुँची तो वहाँ परिछावन से उसका स्वागत हुआ और उसे गृह प्रवेश कराया गया।

विवाह सम्पन्न होने के बाद 'चौठारी पूजा' (कुलदेवता के साथ सती चौरा की पूजा) के बाद दयामनी ने वहाँ 'उलिदरू' (आम के वृक्ष) में पीला सूता बांध कर 'उलिसाखी' की रश्म भी पूरा की।

इस प्रकार एक साधारण परिवार की 'डिंडा कुइ' दयामनी को एक सम्पन्न एवं प्रतिष्ठित क्षत्रीय परिवार की कुलवधु होने का सौभाग्य प्राप्त

हुआ। उसने अपने अर्न्तमन से 'सिंहबोंगा' को नमन और जोहार किया।

उपन्यास के सप्तम भाग का कथानक का मुख्य पात्र बोरजो जोंको नामक श्रमिक की होनसेड (पुत्री) डिंडा कुइ सुनीता जोंको पर केन्द्रित है। उसके सफल जीवन–यात्रा के सहभागी किरिबुरू के माइन्स मैनेजर अमित मुखर्जी, श्रीमती अनामिका मुखर्जी और उसका संहिया बिमल जामुदा है।

आठवीं पास सुनीता जब मिस्टर मुखर्जी के घर सेविका बनकर आई थी तो उसके गाँव वाले उसके पिता बोरजो को 'आकरिंग कुइ होन (बेटी बेचने वाला) कहते हुए इसका विरोध किया था।

परन्तु श्री मुखर्जी और मिसेज मुखर्जी ने उसे अपनी पुत्री की तरह रखा। सुनीता उनकी सहायता और मार्गदर्शन से मैट्रिक पास कर ए0एन0एम0 बन गई। इस प्रतिष्ठित पद पर पदस्थापित होकर उसे अपने जीवन की सर्वोच्च मंजिल मिल गई। वह अपने परिश्रम और संघर्ष से अपने परिवार को गरीबी के दलदल से मुक्त कराने में सफल हुई।

उसका बचपन का सहिया बिमल जामुदा को भी आइ0टी0आइ0 करने के बाद मुखर्जी साहब के सहयोग से किरिबुरू कारखाना में नौकरी मिल गई थी।

अन्ततः अपने–अपने कैरियर की वांछित मंजिल पाकर बिमल और सुनीता प्रणय सूत्र में बंधकर हेरेल–एरा (पति–पत्नी) बन गए। बोरजो के साथ–साथ श्री मुखर्जी और मिसेज मुखर्जी ने बिमल को अपना 'जमाई बाबू' मान कर सम्मानित भी किया।

उपन्यास का अन्तिम–आठवां परिच्छेद 'ईंट भट्ठा नलाबसा' से जुड़ी एक डिंडाकुइ गीता गगराई के जीवन पर केन्द्रित है। इस कथानक की पृष्ठभूमि के रूप में ईंट के आदि निर्माता एवं वास्तु कला के आदि प्रस्तुतकर्त्ता–असुर– का प्रसंग प्रस्तुत किया गया है। साथ ही, गांगेय घाटी में ईंट भट्ठा के उद्‌भव और विकास, उसके उत्कर्ष और अपकर्ष, उनमें डिंडाकुइ के संघर्ष एवं शोषण आदि को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

इसमें गीता के सहिया विजय सवैया के जीवन, उसके संघर्ष और उसकी सफलता की गाथा भी इस कथानक की महत्त्वपूर्ण कड़ी है।

प्रासंगिक ईंट भट्ठा में एक डिंडा कुइ के शोषण की व्यथा कथा है तो दूसरी ओर गीता अपनी चारित्रिक दृढ़ता, नैतिक मूल्यों के साथ विजय के संरक्षण के कारण अपने अस्मिता को सुरक्षित रखने में सफल होती है।

आगे चलकर विजय और गीता 'ईंट भट्ठा' के विषाक्त जीवन से मुक्त

हो जाते हैं। विजय चिड़िया माइन्स में नौकरी करने लगता है। तदोपरान्त वह गीता से विधिपूर्वक आदर्श 'आंदि' के माध्यम से अपने सुखद दाम्पत्य जीवन का शुभारम्भ करता है। 'ईंटा भट्ठा' के नारकीय जीवन को अपनी कृति 'ईंटा भट्ठा नलाबसा' के रचयिता कमललोचन कोड़ाह 'हो' का उद्धरण भी प्रस्तुत किया गया है, जो अत्यन्त मार्मिक है।

इस प्रकार 'डिंडा कुइ' उपन्यास के माध्यम से 'डिंडा कुइ' (कुँआरी कन्या) के जीवन–यात्रा को सम्पूर्णता में तथा उसके सकारात्मक प्रसंगो के चित्रण के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। उपन्यास के प्रमुख पात्र किसी–न–किसी रूप से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। इस उपन्यास में जितनी घटनाएँ वर्णित हैं, प्राय सभी 'डिंडाकुइ' के उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जाती हैं। जीवन संघर्ष को एक चुनौती मानकर सभी प्रमुख नारी पात्र (डिंडा कुइ हापानुम) उसका दृढ़ता पूर्वक सामना करती हैं और अपनी मंज़िलें पाने में समर्थ होती हैं। इसमें 'हो' सेपेड (युवा वर्ग) की भूमिका भी अहम् रही है, जिन्होंने नैतिक जीवन को अपना आदर्श बनाया है। केवल एक कथानक में 'डइया' या डायन प्रथा के प्रचलन को एक सच्ची घटना के सन्दर्भ में प्रस्तुत किया गया है।

आशा है, प्रस्तुत 'डिंडा कुइ' उपन्यास सभी सुधि पाठकों का यथेष्ट मनोरंजन करने में सार्थक होगा। साथ ही, इसमें प्रस्तुत पात्रों के जीवनवृत्त, घटनाओं, आदर्शों आदि से कुछ प्रेरणा एवं जानकारी भी मिल सकेगी।

–आदित्य प्रसाद सिन्हा

अलिञः जगर (अपनी बात)

हो भाषा और साहित्य के विकास के क्षेत्र में डॉ. आदित्य प्रसाद सिन्हा का उल्लेखनीय योगदान रहा है। पूर्व में हो भाषा एवं साहित्य संबंधित शोध आधारित पुस्तकें– हो लोक कथा : एक अनुशीलन, हो भाषा और साहित्य का इतिहास तथा हो कोअः कजि जुड़ि कजि को (हो कहावत आदि) हो साहित्य की मूल्यवान धरोहर हैं। इन पुस्तकों के प्रकाशित होने से हो भाषा के विद्यार्थियों तथा शोधकर्त्ताओं को यथेष्ट पाठ्य सामग्रियाँ अध्ययन के लिए उपलब्ध हुई हैं।

डॉ0 सिन्हा द्वारा लिखित वर्तमान उपन्यास 'डिंडा कुइ (कुँआरी कन्या) में हो समाज की सामाजिक व्यवस्था, संस्कृति, रीति–रिवाज, लोक विश्वास तथा आदिकाल से प्रचलित परम्पराओं के साथ–साथ हो समाज में 'डिंडा कुइ' के जीवन संघर्ष, समर्पित होकर सेवा भाव, शील आदि को भी सम्पूर्णता में प्रस्तुत करने का प्रशंसनीय प्रयास किया गया है। 'गोनोङ (वधुमूल्य) की परम्परा के रूढ़ हो जाने से कुँआरी युवती के बपला एवं आंदि (विवाह) में कई कारणों से अड़चने आती हैं और कभी–कभी वे आजीवन 'डिंडा कुइ' का दंश झेलती हैं। इसी के विकल्प के रूप में केपेया आंदि (प्रेम विवाह), ओपोर तिपि(भागकर या भगाकर शादी) आदि की परम्परा का प्रार्दुभाव हुआ है। इस उपन्यास में इन सभी रीति–रिवाजों का जीवन्त वर्णन विविध पात्रों के माध्यम से कथानक रूप में प्रस्तुत किया गया है।

डॉ0 सिन्हा ने हो समाज की 'डिंडा कुइ' के साथ–साथ डिंडा सेपेड (कुँआरा युवक) के जीवन संघर्ष और उनकी उपलब्धियों को भी जीवन्त रूप में प्रस्तुत किया है। डिंडा कुइ को अपने भावी जीवन के निर्माण हेतु कितना संघर्ष करना पड़ता है, उसका उल्लेख भी इस कृति में मिल जाता है।

इस उपन्यास में 'डिंडा कुइ' को केन्द्र में रखकर उन्हें मुख्य पात्र की भूमिका में रखा गया है। कतिपय 'डिंडा कुइ' की उपन्यास में मुख्य भूमिका है, जिनके नामकरण हैं–गुरबारी पुरती, मानी कुइ, सोनामुनि, दयामनी, सुनीता, गीता, आदि। इन सभी को कथानक के केन्द्र में रखकर उनके जीवन

संघर्ष के साथ–साथ उनके उज्जवल भविष्य की उपलब्धियों को भी बड़े ही रोचक तथा सार्थक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

'डिंडाकुइ' के जीवन संघर्ष में साथ देने वाले उनके सहपाठी एवं दोस्त की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण है। अन्य लोगों में किरिबुरू के माइन्स मैंनेजर तथा उनका परिवार, कार्यपालक अभियंता और उनके परिवार की सकारात्मक भूमिका भी सराहनीय है।

डिंडा सेपेड होन (कुँआरे युवक) के रूप में प्रस्तुत बुधराम सोय, मंगल गगराइ, बिमल जामुदा, विजय सवैया आदि ऐसे चरित्रवान और आदर्श युवक हैं जिन्होंने अपने संघर्ष से सफलता प्राप्त कर अपनी जुड़िया (सहिया) डिंडा कुइ के जीवन को मंजिल तक पहुँचा कर उसके साथ गोनोङ रहित आदर्श आंदि के माध्यम से सुखद एवं सफल दाम्पत्य सूत्र में बंध गए।

डॉ0 सिन्हा ने बा पर्व के धर्मगाथा के आधार पर सिंगिबोंगा (सूर्यदेव) तथा ओतेएंगा (डिंडा कुइ) के कथानक को बड़े ही रोचक और रोमांचक ढंग से प्रस्तुत किया है। 'डइया' या 'डायन' प्रथा से संबंधति अंधविश्वास पर आधारित भी एक दुखद धटना का उल्लेख किया गया है।

डॉ0 सिन्हा द्वारा लिखित 'डिंडा कुइ' उपन्यास हो लिखित साहित्य का एक बहुमूल्य धरोहर माना जायेगा। यह उपन्यास मनोरंजन के साथ–साथ हो समाज के लिए एक आदर्श एवं उत्प्रेरक कृति सिद्ध होगा।

आशा है, डॉ0 सिन्हा भविष्य में भी हो भाषा और साहित्य की विविध विधाओं एवं विषयों से संबंधित सृजन कार्य करते रहेंगे।

(कमल लोचन कोड़ाह हो)
से.नि.अवर सचिव
कार्मिक, एवं प्रशासनिक सुधार
एवं राजभाषा विभाग
झारखण्ड सरकार

1

डिंडा-कुइ (कुँआरी कन्या)

'डिंडा कुइ' उपन्यास की कथा–यात्रा का स्रोत एक मुनुजगर (उत्पत्ति मिथक या कथा) है, जिसके प्रमुख नायक सिंगिबोंगा (सूर्यदेव) एवं नायिका ओते एंगा (धरती माता) हैं। इस रूपक में सूर्यदेव एवं धरती का मानवीकरण किया गया है जो 'हो' समाज में धर्मगाथा के रूप में अनादिकाल से प्रचलित है। इसमें सूर्य एवं धरती के बपला या आंदि (विवाह) का मिथक बा, बाहा या सरहुल पर्व के रूप में सम्पन्न होता है।

आदिकाल में ओते एंगा की होन कुइ (बेटी) जब यौवन सम्पन्ना होकर सौन्दर्य की अभिसारिका बनी मधुमय वसन्त में मदहोस होकर विचरण कर रही थी तो वह कामदेव की प्रेयसी रति की तरह आकर्षक लग रही थी।

नोगोड वसन्त (मधुमय वसन्त) के आगमन से सम्पूर्ण धरती का वन्य प्रदेश पुष्पों से आच्छादित हो गया था। ऋतुराज ने सुगन्धित पुष्पों में पराग का मधुरस घोलकर प्रकृति के सभी जड़–चेतन प्राणियों में नव यौवन का संचार कर दिया था।

वसन्तागमन पर प्रकृति नटी ने यौवन सम्पन्न ओते डिंडा कुइ को सरसों और सुरगुजिया के पीले पुष्पों की साड़ी, अलसी के नीले पुष्पों की कंचुकि (बुडिस) से सुसज्जित कर दिया था। उसके कानों में पलास के रक्तरंजित पुष्पों का हतरमुरकी (कर्णफूल), गले में अमलतास के पीत पुष्पों के हिसिर (हार) और कुंचित केसों में सरई (साल) के सुगंधित पुष्प गुच्छ का सुपीड (जुड़ा बन्धन) से सुसज्जित कर मनोमुग्धकारी नायिका बना दिया था। सम्पूर्ण उपवन उसके मदमस्त यौवन सम्पन्न सौन्दर्य से आलोकित हो गया था।

मधुमय वसन्त के अवसर पर सिंगिबोंगा (सूर्यदेव) भी यौवन सम्पन्न एक डिंडा सेपेड (कुँवारे युवक) के रूप में उस उपवन के प्राकृतिक सौन्दर्य से आकर्षित हो भ्रमण का आनन्द ले रहे थे। उनकी दृष्टि अनायास उस सौन्दर्यमयी ओते डिंडा कुई पर पड़ गई और वे उसके सौन्दर्य पर मोहित हो

गए। अभी तक उन्हें इतनी रूपवती डिंडा कुई का दर्शन नहीं हुआ था।

सिंगि बोंगा उस रूपवती के पास जाकर उसके रूपलावण्य की भूरि–भूरि प्रशंसा की और उसका परिचय पूछा। युवती ने अपना परिचय ओते एंगा (धरती माता) की डिंडा होन कुइ के रूप में मुस्कुरा कर दिया।

सिंगबोंगा बोले –"मैं तुम्हारे दिव्य यौवन सौन्दर्य से काफी प्रभावित हूँ। मैं तुम्हें अपनी प्रियतमा और येरा (जीवन संगीनी) बनाना चाहता हूँ।"

सिंगिदेव द्वारा बपला (विवाह) के इस रोमांचित प्रस्ताव से उसका मुख मंडल खिल उठा। वह सूर्यदेव के दिव्य सौन्दर्य से काफी मोहित हो गई थी।

उसने सिंगिदेव से कहा – इस प्रस्ताव के सम्बन्ध में आपको मेरे ओते एंगा से मिलना होगा। वही इस संबंध में निर्णय ले सकेगी।

सिंगिबोंगा –एसु बुगिन कजिगे (बहुत अच्छी बात है)

ऐसा कहकर सिंगि देव ओते कुइ के साथ उसकी माँ के पास चले गए। उन्होंने बपला संबंधी अपना प्रस्ताव करबद्ध होकर 'जोअर' करते हुए ओते एंगा के समक्ष रख दिया।

ओते एंगा – "हे सिंगि देव! मैं अभी अपनी होन कुइ के बपला के सम्बन्ध में सोचा नहीं हूँ। उसके 'सादोर बपला' के लिए मुझे कुछ समय चाहिए।" ऐसा कह कर वह चली गई।

इधर सिंगिदेव ओते कुइ से शीघ्र विवाह करने हेतु संकल्पित थे। डिंडा ओते भी उनकी येरा (प्रेयसी) बनना चाहती थी और वह शीघ्र बपला के लिए तैयार थी।

सिंगिदेव उसे मना कर अपने दिव्य रथ पर बैठाकर प्रेम विवाह (केपेया आंदि) के लिए अपने महल में लेकर चले गए। वहाँ उन्होंने विधि पूर्वक अपनी येरा (पत्नी) बनाकर अपनी पटरानी के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया।

जब ओते एंगा को मालूम हुआ कि उनकी पुत्री सूर्यदेव के प्रेमपाश में बंधकर उनके महल में चली गई है तो काफी कष्ट झेलकर वह उनके महल में पहुँच गई। वह ओते कुइ को वहाँ से वापस लाना चाहती थी। उसने सूर्यदेव से उसकी प्यारी पुत्री को वापस करने हेतु काफी अनुनय–विनय किया।

सूर्य देव ने ओते एंगा को बताया कि उनकी बेटी अब डिंडा कुइ नहीं रही, वरन वह उनकी विवाहित येरा (पत्नी) बन चुकी है और उनके महल की महारानी है।

सूर्यदेव बोले –आप की बेटी कुछ दिनों तक मेरे साथ रहकर जब गर्भवती हो जायेगी तो उसे आपके पास वापस भेज दूँगा।

ओते कुइ –इया एंगा! (हाँ माँ) तुम चिन्ता मत करो।

मैं अपने हेरेल (पतिदेव) के साथ काफी सुखी हूँ। कुछ दिन यहाँ रहकर अपने पतिदेव के साथ आपके पास आ जाउँगी।

सूर्यदेव ने हेरो चन्डु (बुनाई का पर्व) के अवसर पर अपनी गर्भवती प्रियतमा ओते कुइ को उसके मायके वापस भेज दिया।

सूर्य देव ने ओते कुइ के साथ बाया बाहा (वसन्त पर्व) में प्रेम विवाह (केपेया आंदि) किया था, इस कारण बा, बाहा और सरहुल (खद्दी) पर्व को सूर्य और धरती के विवाहोत्सव के रूप में धूम–धाम से मनाया जाता है।

इस पर्व के बाद ही धरती अपने गर्भ से अनेक प्रकार के अन्नादि उत्पन्न कर अपने धरती पुत्रों को धन–धान्य से सम्पन्न कर देती है। साथ ही, यह पर्व ओते एंगा की गोद में पलने वाले दरू–दुम्बु (पेड़–पौधे) के संरक्षण और संवर्धन के लिए संकल्प लेने का भी पर्व बन गया है।

इस पर्व के अवसर पर हो भाषा के कवि सीताराम गौड़ के गीत–''नोगोड बसंत'' (मधुमय वसन्त) की कुछ पंक्तियाँ इस पर्व के महत्त्व को अभिव्यक्त करती हैं –

बसंत राजा प्रकृति रे नोगोड रांसो हिरचितनाः
गोम–जीड जीबोन कोर आय नमा जोबोन ओये तनाः
बसंत हुजुः लेन रे ओते रेआः दुम्बु–दुम्बु रासावतानः
काया वनेते ओते रेआः उटि–उटि जाकेः सुसुनतानाः
मानी लुतुर रकनफुलवने तेलेयोनेन तानाए
उली गियाल–गोपोल सेपेड जीबोन तो आउ ओगाइतनाए।।

भावार्थ – ऋतुराज प्रकृति में मधुर–रस घोल रहा है और जड़–चेतन में नव–जीवन का संचार हो रहा है।

वसन्तागमन पर धरती का तृण–तृण पुलकित है और मेदिनी (धरती) उन्मादित हो नृत्यरत है। सरसों अपने कानों में कार्णफूल लगा कर डोल रही है। आम के गदराये यौवन का अभिसार कोयलिया कर रही है।

हेरो चन्डु या हेरो पर्व भी इस मिथक से जुड़ा हुआ है। यह प्रथम बोआई का पर्व है। इस अवसर पर बीजों के प्रस्फुटन एवं संवर्धन हेतु भी एक अनुष्ठान धरती एंगा और बाबा एंगा (धान माता) का गोआरी (स्तुति) मंत्रपाठ के साथ सम्पन्न होता है। कृषि कार्य के प्रारम्भ करते समय इन शक्तियों को 'जोअर' (नमन) करने का विधान है, जो ओते एंगा के गर्भ में पल रहे बीजों को अंकुरित, पुष्पित एवं फलभारान्वित करने में सहायक सिद्ध होते हैं। अनुष्ठानिक मंत्र का अंश निम्नप्रकार है :–

ने बाबा एंगा ताबु, ने कोदे एंगा ताबु।

सिड.बोंगा सामाडर, ओते एंगा कोयेड. रे।

जीमा जाः इआते, बतेगे दलो वोः का,

जोतेगे जो दोर का। जोअर, जोअर, जोअर।।

भावार्थ :– इस धान माँ के और इस मडुआ माँ को परमेश्वर की साक्षी में धरती माँ की गोद (गर्भ) में हम सौंप रहे हैं। आगे चलकर ये पुष्पित होकर फूलो से भर जायँ और फिर फलों (अनाज) से लद जायँ। नमन, नमन, नमन –बार–बार नमस्कार है।

इस प्रकार डिंडाकोवा सिंगिबोंगा और डिंडा कुइ ओते एंगा के मिथक की पुर्णाहुति होती है।

(2)

सात सौ पहाड़ों से घिरा सारंडा का वन क्षेत्र 'हो' जनजाति का प्रमुख आवास स्थल रहा है। वहाँ हो समाज की परम्परा के अनुरूप स्थापित एवं संचालित कई 'गिति ओड़ा' (शयन गृह या युवा गृह) कोवा होन (बालक) एवं कुइ होन (बालिका) के लिए शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में जाने जाते रहे हैं। इन केन्द्रों में 10—12 वर्ष से 18 वर्ष आयु वर्ग की बालिकाएँ एवं बालक रात्रि में रहते थे, जहाँ उन गृहों के संचालक एवं संचालिका द्वारा उन्हें हो समाज के रीति—रिवाज, लोक—परम्परा, गीत—संगीत, मुनु—जगर आदि की शिक्षा दी जाती थी। चरित्र निर्माण एवं अनुशासन के महत्त्व को भी सभी सेपेड—हापानुम सीखते एवं उसका अनुपालन करते थे।

एक कुइ होन गीति ओड़ा की संचालिका एतवारी बुड़ि (जारिका) काफी अनुभवी और ज्ञान सम्पन्न थी। वह आवासीय लड़कियों को एक से एक मिथक, धर्मगाथा, आख्यान, परिकथा, प्रेत कथा आदि विषयों की अनेक मनोरंजक एवं रोमांचक कहानियां सुनाती थी। हो जनजातीय समाज और उनके लोक जीवन से संबंधित देवी—देवता, पर्व—त्योहार, मेला—जतरा, संगर (शिकार) आदि के अनेक संस्मरण उसे मौखिक रूप से कंठस्थ थे।

अपने मुनुजगर कथा सुनाने के क्रम में उसने गोनोड. (वधूमूल्य) की उत्पति कथा सुनाने लगी। उसने कहा—हो समाज में बपला या आंदि (विवाह) के अवसर पर गोनोड. लेने—देने की प्रथा आदिकाल में प्रचलन में नहीं थी। प्रारम्भ में इसका प्रचलन एक घटना के बाद शुरू हुआ। उसके अनुसार—आजा—आजी, बुढ़ा—बुढ़ी कहते हैं कि प्राचीन काल में जो डिंडा हापानुम (कुआँरी युवती) बिना मुँह ढके बार—बार मुँह खोलकर जम्हाइ लेती तो उसे काफी अपशकुन या अशुभ माना जाता था। उसके परिवार वाले समझते थे कि उसके ऊपर 'कुला बोंगा' (बाघभूत) सवार हो गया है। वे उसे ओझा—मति को दिखाकर उसके इस अशुभ आदत को छुड़ाने का प्रयास करते थे।

अगर उसमें सुधार नहीं होता, तो उसे उसके भाग्य के भरोसे जंगल लेजाकर बाघ के मांद के पास छोड़ देते थे।

एक गाँव के मुण्डा की पुत्री मानी कुई भी बार–बार इस प्रकार की जम्हाइ लेती थी। मुंडा इसे किसी अनहोनी की आशंका से डर कर मानी को घने जंगल में लेजाकर बाघ के एक मांद (गुफा) के पास छोड़ दिया। मानी बाघ के आने के भय से काफी डर गई थी और रो रही थी।

इस घटना को एक गुपि कोड़ा (चरवाहा) कुछ दूर पर खड़ा देख रहा था। उसके हाथ में तीर–धनुष था। मुंडा आदि के चले जाने के बाद वह धनुष पर तीर चढ़ा कर एक सालवृक्ष के पीछे छिप कर बाघ के आने की प्रतीक्षा करने लगा। कुछ देर बाद एक कुला (बाघ) अपने मांद की ओर जाने लगा। तभी उस गुपि कोड़ा ने तीर चलाकर उस बाघ को मार गिराया। उसके बाद रान्दो नामक वह चरवाहा उस डरी –सहमी युवती मानी कुइ के पास आकर उसे प्यार से समझा कर भयमुक्त कर दिया और उसे अपने घर ले गया। घर जाकर उसने अपनी एंगा (माँ) को पूरी घटना सुनाकर मानी को घर में रख लेने का आग्रह किया। यह गाँव मानी के गाँव से काफी दूर था।

कुछ दिन बाद रान्दो के माता–पिता उसे अपनी बहु बनाने को राजी हो गए। आदि परम्परा के अनुसार बपला के 'सिंदूरीरकब' की विधि पूरा कर मानी रान्दो की येरा (पत्नी) बन गई। उसके हनर–होंयर (सास–ससुर) भी उसके आचार–व्यवहार से बहुत खुश थे।

बाघ के भय से उसकी जम्हाई लेने की आदत समाप्त हो गई थी। अब वह उस परिवार की एसु बुगिन किमिन (सुलक्षणा बहु) के रूप में अपनी पहचान बना ली थी। घर के अडिंग (पूजा स्थल) में पूर्वजों की पूजा सम्पन्न कर उसे रसोईघर में जाने की इजाजत मिल गई थी। वह सुबह से शाम तक बड़े मनोयोग से घर–गृहस्थी का सभी काम सम्पन्न कर लेती थी। रान्दो भी उससे काफी प्रसन्न और सन्तुष्ट था।

कुछ समय बाद मुण्डा (मानी का पिता) के गाँव का रघु नामक पिआँय (तांती) कपड़ा बेचने के क्रम में रान्दो के गाँव में आया। जब वह गाँव में प्रवेश कर रहा था तो उसने मानी को कुआँ से पानी लेकर रान्दो के घर जाते देख लिया। वह मानी को बचपन से जानता था और उसे मालूम था कि मानी गाँव के बामिया मुण्डा की बेटी है।

रघु रान्दो के घर की ओर उत्सुकतावश चल दिया। कुछ दूर जाने पर ही उसकी मुलाकात रान्दो से हो गई।

रान्दो रघु को जानता था। पर उसे मालूम नहीं था कि वह मानी को जानता है।

रान्दो को जोहार कर उसके पास आकर पूछा –

'रान्दो दादा! एक युवती जो तुम्हारे घर गई है वह कौन है? वह मेरे जान–पहचान की लगती है।

रान्दो–पिआँय दादा! वह मेरी येरा (पत्नी) है।

रघु– यह किस हातु की है? इसका नाम क्या है और किसकी बेटी है?

रान्दो – अरे दादा, इस लड़की को इसके घर के लोग बीर–बुरू के एक बाघ के मांद के पास छोड़कर चले गए थे। वह जोर–जोर से रो रही थी। जब मैं वहाँ पहुँचा तो एक बाघ उसके पास आ रहा था। जब तक बाघ उस पर हमला करता मैंने तीर मार कर उसे मौत की नींद सुला दिया। उसे घर लेजाकर मेरे माता–पिता ने इससे मेरी शादी कर दी। इसका नाम मानी है।

रघु – दादा, यह मेरे गाँव के बामिया मुण्डा की बेटी है। इस पर बाघभूत सवार हो गया था, इस कारण उसे जंगल में छोड़ दिया गया था। अच्छा हुआ दादा, तुमने उसकी जान बचा ली।

रान्दो– मानी ने अपने पिता आदि के बारे में पूरा–पूरा कुछ बताया नहीं। हम लोग उसे अनाथ समझ लिये थे। तुमसे पता चला कि कि यह मुण्डा की बेटी है। अब तो तुम्हें इसे गुप्त रखना होगा।

रघु – परन्तु किसी न किसी दिन बामिया को पता चल ही जायेगा कि मानी तुम्हारे घर में है। हो सकता है कि तुम्हारी येरा (पत्नी) होने की बात सुनकर वह बहुत गुस्सा होगा। संभव है, वह तुम्हारे साथ मार–पीट करे और अपनी बेटी को वापस ले जाय।

रान्दो– पिआँय दादा, अब तुम्हीं बताओ कि मैं क्या करूँ। अब तो 'सिन्दूरीरकब' से वह मेरी पत्नी बन चुकी है। वह अब अपने आपुत्र (पिता) के घर वापस जाना नहीं चाहेगी।

रघु–ऐसी परिस्थिति में मुझे मुण्डा को मनाने का एक उपाय समझ में आ रहा है। मुण्डा को खुश करने के लिए यदि तुम उसे एक उरि (गाय) और एक मेरोम (बकरा) के साथ कुछ नगद दे दो तो वह मान जायेगा।

रान्दो– ठीक है पिआँय दादा, मैं इस गोनोङ (वधुमूल्य) देने को तैयार हूँ। तुम मेरे तरफ से मुण्डा गोमके से बात करो।

रघु– ठीक है, मैं साम को लौटकर बात करूँगा।

रान्दो ने अपने पिता सुकरा को बताया कि मानी रघु के गाँव के मुण्डा की लड़की है। रघु उसे पहचानता है। उसने कहा है कि वह मुण्डा को बतायेगा कि उसकी लड़की जीन्दा है और रान्दो से बपला कर उसकी पत्नी बन गई। परन्तु मुण्डा को मनाने के लिए एक उरि (गाय) एक मेरोम (बकरा)

और कुछ टका देना होगा। रघु मुण्डा को राजी कर फिर आयेगा।

रघु जब साम को गाँव लौटा तो बामिया मुण्डा के घर गया। उसने बताया कि उसकी बेटी मानी जिन्दा है और रान्दो नाम के गुपि कोड़ा ने उसे बाघ से बचाकर अपने घर ले जाकर शादी कर लिया है। मानी उसके साथ पत्नी के रूप में सुख से है।

मुण्डा –पिआँय दादा, यह तो खुशी की बात है कि मेरी प्यारी बेटी जिन्दा है और सुखी है।

रघु –मुण्डा सायोब, मैं रान्दो को कहा है कि मानी को पत्नी बनाने के एवज में मुण्डा गोमके को 'गोनोङ.' के रूप में एक उरि, एक मेरोम और कुछ टका देना होगा। इस पर 'गोनोङ.' देने के लिए वह तैयार हो गया है।

मुण्डा– यह तो अच्छी बात है। यदि वह गोनोङ. दे देता है तो मैं इस बपला को 'राजी खुशी आंदि मान लूँगा।

दूसरे दिन रघु रान्दो के घर जाकर उसके बाप से मिला और मुण्डा की सहमति बताई। यह तय हुआ कि आगामी गुरूवार को गोनोङ. का सभी सामान लेकर हमारे परिवार के लोग मुण्डा गोमके के घर जायेंगे।

तदनुसार गुरूवार को रान्दो के काका (चाचा), काकी(चाची), चचेरा भाई, रेन्दो का दोस्त आदि गाय, बकरा और एक चाटु (घड़ा) डियङ. (चावल की शराब) लेकर मुण्डा के घर पहुँचे। सभी ने मुण्डा और उसकी पत्नी को जोहार किया। मुण्डा की पत्नी ने लोटा पानी देकर सबका स्वागत किया। गोनोङ. के रूप में मियड हिसि टका (इक्कीस रूपये) भी मुण्डा को रेन्दो के चाचा ने दिया। सभी को सीमजिलु और मांडि (मुर्गा भात) खिलाया गया। सभी डियङ. भी पीये। मुण्डा की पत्नी ने पूछा–मेरी बिटि मानी टीक (बुगिन) है न?

रेन्दो की चाची–हाँ–हाँ, वह अपने सास –ससुर के साथ काफी सुख से है।

मुण्डा की पत्नी –अच्छा, हमलोग उसे देखने उसके ओवा (घर) किसी दिन जायेगा।

इस कहानी को समाप्त करते हुए एतवारी बुढ़ि ने कहा – उसी समय से हो समाज में गोनोङ. (बधुमूल्य) लेने की परम्परा चल पड़ी। साथ ही, बाघ की तरह जम्हाई लेने पर डिन्डा कुइ हापानुम (कुँआरी कन्या) को दंड देने की परम्परा भी समाप्त कर दी गई। राजी–खुशी के बपला का भी प्रचलन हो गया। अब हमारे हो समाज में सादोर बपला के साथ–साथ कई तरह के बपला (आंदि) को मान्यता मिल गई है, जिसमें 'गोनोङ.' नहीं देना पड़ता है।

(3)

सारंडा विशाल वनक्षेत्र में सारंडा पीड़का सरजोम (साल), मड़कम (महुआ) उलि (आम) जोजो (इमली) आदि से आच्छादित एक गाँव, जहाँ अनादि काल से हो जनजाति की सभ्यता और संस्कृति फलती–फूलती रही है। गाँव के निकट चिड़िया बुरू (पहाड़ी) से प्रवाहित झरना का कल–कल निनाद उस शून्य क्षेत्र में मधुर संगीत का सृजन करता रहा है। इस निर्जन प्रदेश में ऐसा लगता है मानो प्रकृति नटीं यहाँ आकर विश्राम कर रही हो।

इस गाँव में आदिकाल से पुरती परिवार निवास करता आ रहा है और सिंगराय मानकी उस किलि (गोत्र) का प्रतिनिधित्व कर रहा है। घर में येरा (पत्नी) सुकुरमुनि हसदा(पुरती) के अलावे उसकी दो सुन्दर पुत्रियाँ–गुरबारी और रूइंबारी रहती हैं। गाँव के एक छोर पर उनका जायरा या जहेरथान (पूजा स्थल) और दूसरे छोर पर गाँव का ससन या ससनदिरि (श्मशान) अवस्थित था। गाँव के मध्य भाग में अखड़ा (नृत्य स्थल) एवं पश्चिम भाग में एक पुराना गितिओड़ा (रात्रि विश्रामगृह) हो संस्कृति का केन्द्र था। पर अब उनकी परम्परा इतिहास बन कर रह गई है।

गुरबारी और रूइबारी वहाँ से कुछ दूर छोटानागरा में सातवीं तक पढ़ी थी। उसके बाद कुछ वर्ष तक मनोहरपुर उच्च विद्यालय में 9वाँ तक पढ़ाई कर गुरबारी विद्यालय छोड़ दी थी। गुरबारी अब 'डिंडा हापानुम' (कुँआरी युवती) हो गई थी और उसका स्वस्थ देह–यष्टि, गौरवर्णयुक्त मुखमण्डल, घुंघराले केश–अथवा उसका व्यक्तित्त्व बड़ा ही आकर्षक लगता था।

सिंगराय अपनी दोनों बेटियों को बेटा की तरह प्यार करता था। दोनों खेती के काम में अपनी माँ का काफी मदद करती थीं। गुरबारी गोहाल घर की भी साफ–सफाई करती थी। वह अपनी छोटी बहन के साथ मड़कम (महुआ), जोजो (इमली), उलि(आम), सांडि सिम(मुर्गा) आदि लेकर साप्ताहिक हाट जाकर बेचती थी। बरसात के दिनों में ककरू(कोंहड़ा), दरूबेंगा (बैगन), बेलती बेंगा (टमाटर), मिंडिदिरिंग (भिंडी), रम्बा(बोदी) आदि सब्जी भी अपनी बाड़ी से तोड़कर बेचने जाती थी। जो पैसा मिलता उससे बुलुड. (नमक), सुनुम(तेल), आदि गृहस्थी का सामान खरीद कर या बदलेन कर लाती थी।

वह अधिकांशतः छोटनागरा हाट जाती थी।

उसी हाट में बुधराम सोय भी अपने गाँव से अपने सहिया के साथ आता था। वह काफी स्वस्थ और सुन्दर युवक था और कुछ समय पहले जगरनाथपुर उच्च विद्यालय से प्लस टू पास किया था। वह तिरंदाजी में काफी प्रवीण था। तीर–धनुष से कबूतर, तितर, हारियल आदि का शिकार करता था। वह एक साधारण चासी परिवार का युवक था। वह अक्सर गुरबारी से मिलकर कोई न कोई सब्जी, मुर्गा आदि खरीदता था। वह गुरबारी के सौन्दर्य और स्वभाव से काफी आकर्षित था। वह अक्सर उससे मिलकर उसके परिवार, उसकी पढ़ाई लिखाई आदि के विषय में पूछता था। गुरबारी भी उससे मुस्करा कर मिलती और हाथ मिलाकर जोअर करती।

धीरे–धीरे बुधराम की घनिष्टता गुरबारी के साथ काफी बढ़ गई थी। दोनों कभी–कभी हाट में साथ बैठकर किसी निर्जन स्थान में बातें करते। गुरबारी उसके व्यवहार से काफी प्रभावित थी। वह गुरबारी से प्रेम करने लगा था। परन्तु संकोचवश वह अपने मनोभाव को व्यक्त नहीं कर पा रहा था। जब उसे मालूम हुआ कि गुरबारी मानकी की बेटी है, तो वह उसकी तुलना में अपने को बहुत छोटा या साधारण रेंगे हो (गरीब व्यक्ति) समझने लगा था। फिर भी वह उससे बराबर मिलता। गुरबारी भी उसे मिलने और बातचीत करने के लिए प्रोत्साहित करती थी।

इसी बीच मागे का महान पर्व आ गया। उस क्षेत्र में मागे पर्व की शुरूआत सिंगराय मानकी के गाँव से ही होती थी। इस महान और पवित्र पर्व में गाँव के दिउरि(पुजारी) अपनी पत्नी के साथ एक दिन पहले से ही उपवास व्रत रखते थे और पूजा (पर्व) के प्रथम दिन सेवा सड़म और अनादेर (पूजा–पाठ) से मागे पर्व का शुभारम्भ होता है। पर्व के दूसरे दिन ओतेइलि (धरती की पूजा) पवित्र डियङ से की जाती है। इसके साथ –साथ लोयोः गुरि (देशावलि पूजा) सम्पन्न होती है। तीसरे दिन मरङ पोरोब (बड़ा पर्व), चौथे दिन बसि (बसिअउरा या बासी पर्व) तथा पाँचवें दिन 'हरमगेया' (मागे पर्व की विदाई) का उत्सव सम्पन्न होता है।

मागे पर्व में मेहमानों (कुपुल) का आगमन मुख्यतः ओतेइलि या मरङ पोरोब के दिन से होने लगता है। इस अवसर पर गुरबारी की सहेली मानी कुई अपने मायके मागे पर्व के अवसर पर आई थी। बुधराम के गाँव में उसका विवाह हुआ था और वह उसकी हिलि (भाभी) लगती थी। उसके साथ बुधराम भी गुरबारी के गाँव आ गया था और मानी के मायके में मेहमान बन कर ठहरा था। गुरबारी ने उसे भी मागे पर्व में आमंत्रित किया था।

सिंगराय मानकी के भी कई मेहमान उसके घर आये थे। मरंग पोरोब के दिन सिंगराय के घर सभी अतिथियों और गाँव के लोगों का प्रीति भोज था। सभी के लिये मेरोम जिलु (खस्सी का माँस), मांडी (भात) और डियंग की व्यवस्था की गई थी। मानकी की पत्नी सुकुरमुनि पके हुए भोजन से थोड़ा–थोड़ा अंश लेकर घर के अडिंग (पूर्वजों के पूजा स्थल) पर अर्पित कर दी थी। मेहमानों को डियंग देने के लिये दो चाटु(घड़ा) डियंग मानकी बनवाया था। सभी को पहले प्रसाद के रूप में चना का छोला और डियंग दिया जा रहा था। मेहमानों में मानी के साथ बुधराम भी आया था। गुरबारी और रूइबारी दोनों बहने मेहमानों को 'जोअर' कहकर दोना में चना का छोला और गिलास में डियंग दे रही थी। गुरबारी बुधराम को भी मुस्कराकर 'जोहार' की और दोनों प्रसाद दिये। बुधराम भी मजाक करते हुए कहा था–तिसिंग आबेन दो एसु सुगड़ नेलतना बेन(आज तुम बहुत सुन्दर दीख रही हो)। गुरबारी ने मुस्करा कर कहा–'आबेन ओन्डो सेपेड हीरो लेका नेनेलतना(आप भी युवा हीरो जैसा दीख रहे हैं)।

जब सभी डियंग पी चुके तो अक्हड़ा(अखड़ा) में चले गये थे। गाँव का विशाल अखड़ा में दमा–दुमड. (नगाड़ा–मान्दर), बनम (सारंगी), रूतु (बांसुरी) आदि लेकर युवा वर्ग मागे गीतों के ताल पर वादन कर रहे थे। युवा वर्ग का एक समूह वाद्य यंत्रों के धुन पर गा रहे थे। गायकों में बुधराम भी सामिल था। मान्दर के ताल पर नृत्य की मुद्रा में हाथ से हाथ जुड़े मन्थर गति से पगचालन शुरू हुआ और लड़कों के समूह ने हापानुम (युवतियों) के दल को सम्बोधित करते हुए मागे का गीत शुरू किया –

''काका सकम तिंजार बोंजर
चिकान किलि तना आम डिंडा हापानुम को।
किलिकाम जगार रेदो
नायां किलि किलि ते,
किलि मिसा मेह को।

भावार्थ :– ऐ सुन्दरी! तुम कावा वृक्ष के चिकने पत्ते की तरह चिकनी और कोमल लग रही हो। ऐ कुंआरी कन्या बताओ तुम किस किलि (गोत्र) की हो? अगर तुम अपना गोत्र नहीं बताओगी तो मैं तुम्हें अपने गोत्र में मिला लूँगा। (अथवा तुमसे शादी कर लूँगा)।

युवतियों के दल द्वारा मागे पर्व के अनादेर और जतरा के गीत के साथ नृत्य शुरू हो जाता है –

मगे दो हुजुः लेना बरेञ

मगे दो सेटेर लेना बरेञ
होयो लेका गमा लेका
मगे दो हुजुः लेन।।

सुसुन दुरंग आलं बरेञ
दामा–दुमं रूतु बनम
इलि रासि बिलि तेचा
रासिका लिंजिन तन।।

भावार्थ – मागे का आगमन हो गया है, मागे का पदार्पण हो गया है। मलयानिल के फुहार की तरह मागे का आगमन हो गया है। आओ नाचे गाएं हम। बांसुरी, सारंगी, मान्दर–नगाड़ा, आदि के ताल पर नाचें। मागे के इस पर्व पर खुशियाँ छलक उठी हैं मित्र।

युवा दल का नेतृत्व कर रहा बुधराम श्रृंगार रस से भरा एक गीत गुरूबारी को संकेत कर प्रस्तुत करता है –

चेतान पुकुरि रे, लातार पुकुरि रे
नावेन ची बाले सोकि लिजा साबोन तान
कादाल सकम लेकाम हिरो हिरो
सारू सकम लेकाम गियल –गोपोल।

भावार्थ –युवक अपनी प्रेमिका से कहता है –'हे सुन्दरी! जब भी तुम ऊपर के तालाब में या नीचे के तालाब में कपड़ा फिंचती हो तो तुम्हारा कोमल छरहरा बदन केले के पत्ते की तरह लचकता है और तुम्हारी साड़ी पेकची (अरवी) के पत्ते की तरह लहराती है।

इस गीत को सुनकर गुरबारी को लगा था कि बुधराम उसको चाहने लगा है।

इस तरह काफी देर तक गीत–नृत्य से मानकी का वनाच्छादित गाँव जीवन्त होकर गूंजता रहा था। नृत्य समाप्त कर सभी प्रीति भोज के लिए बैठ गये। सभी देर तक स्वादिष्ट मेरोम जिलु (खस्सी) का माँस और मांडि (भात) का आनन्द लेते रहे। देर रात भोज समाप्त होने के बाद सभी सोने के लिये चले गए थे।

गुरबारी बहुत देर रात तक सो नहीं सकी थी। बुधराम के श्रृंगार रस से भरे गीत की मधुर स्मृति में वह खो गई थी और फिर निद्रादेवी की गोद में सपनों में खो गई थी।

उधर बुधराम की आँखों में गुरबारी का सुन्दर गोल चाँद सा चमकता

चेहरा उसे सोने नहीं दे रहा था। काफी देर बाद उसकी मधुर स्मृति को संजोये और पुनर्मिलन की आसा लिये सो गया था।

दूसरे दिन 'बसि पोरोब' सम्पन्न कर सभी मेहमान अपने–अपने गाँव लौटने लगे थे। गुरबारी अपनी सहेलियों को छोड़ने गाँव की सीमा तक गई थी। बुधराम भी अपने गाँव जाने के लिये निकला था। रास्ते में ही उसकी मुलाकात गुरबारी से हो गई थी।

बुधराम को देखकर वह मुस्करायी और हाथ मिला कर 'जोअर' की। बुधराम भी मुस्कराकर हाथ मिलाया। बुधराम के मुँह से अनायास ही गुरबारी की प्रशंसा में यह उद्‌गार निकल गया –'सरिगे, आबेन लेका एसु सुगड़ हापानुम दो का नेलकेडा (यह सत्य है कि तुम्हारी जैसी सुन्दर युवती अभी तक नहीं देखा)।

इतना सुनकर गुरबारी का मुखमंडल लाल हो गया। वह भी मुस्करा कर बोली–ओन्डो आबेन लेका एसु बुगिन सेपेड दो का नेल केड़ाञ' (और आप जैसो इतना शालीन युवक मैंने भी नहीं देखी)। दोनों एक दूसरे से हाथ मिलाकर खिल–खिलाकर हँस पड़े। विदा होते समय गुरबारी ने मुस्करा कर कहा– 'अचा, हाट ओन्डो हुजुआ' (अच्छा, अब हाट में फिर आओगे)।

इसके बाद गुरबारी और बुधराम का मिलना –जुलना प्रत्येक हाट में होता रहा। गुरबारी अपनी बहन और सहेलियों के साथ अक्सर पोसइता और छोटानागरा हाट जाती थी। बुधराम भी अक्सर अपने साथियों के साथ पहुँचता था। दोनों भीड़–भाड़ से दूर किसी पेड़ की छाया में बैठकर डियंग पीते और प्यार की बातें करते और फिर मिलने का वादा कर अपने–अपने गाँव चले जाते।

दोनों के मिलने–जुलने और घनिष्टता की जानकारी बुधराम की एंगा (माँ) को भी रूईबारी (गुरबारी की छोटी बहन) से मिल गई थी। यद्यपि दोनों का किलि (गोत्र) भिन्न–भिन्न था, परन्तु सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से बुधराम का परिवार सिंगराय मानकी के परिवार की अपेक्षा काफी कमजोर और साधारण था। यही सोचकर बुधराम की माँ को दोनों के बपला की संभावना नहीं दिख रही थी। बुधराम के मन में भी यह विचार जग रहा था कि उसका परिवार मानकी को अपेक्षानुसार 'गोनोङ' नहीं दे सकेगा और इस कारण 'बपला' के सम्बन्ध में किसी 'अगुआ' (बिचवान) को बातचीत के लिये भेजा नहीं जा सकता था। यद्यपि वह नौकरी के लिए कई जगह आवेदन दिया था। परन्तु अभी तक उसे कहीं से बुलावा नहीं आया था। उसकी माँ चाहती थी कि गुरबारी बहु बनकर उसके घर में आवे और बुढ़ापा में उसकी

सहारा बने। परन्तु भारी–भरकम 'गोनोड.' देने की क्षमता उसमें नहीं थी।

उधर गुरबारी भी बुधराम को हृदय से चाहने लगी थी। परन्तु वह भी जानती थी कि उसके मानकी पिता बिना पूरा 'गोनोड.' (वधु मूल्य) लिये उसकी शादी (बपला) की बात नहीं करेंगे। गुरबारी के मन में यह प्रश्न बार–बार उठता था कि आखिर हमारा समाज दो प्रेमियों के बीच में 'गोनोड. ' के नाम पर बपला को लेकर अनावश्यक अडंगा क्यों लगाता है? गोनोड. के रूप में दो–चार उरि–काड़ा (गाय–भैंसा) तथा नगद टका–पोयसा लेने के जिद्द पर दो प्रेमियों के जीवन को क्यों बरबाद किया जाता है?

बुधराम और गुरबारी के प्रेम–सम्बन्ध की बात की जानकारी जब सिंगराय मानकी को मिली तो उसने अपनी पत्नी (सुकुरमुनि) से पूछा–'क्या बुधराम के घर वाले हमारी बेटी गुरबारी के लिये मेरे पद और प्रतिष्ठा के अनुरूप 'गोनोड.' दे सकेंगें? भला बिना भरपूर 'गोनोड.' लिए गुरबारी की शादी कैसे होगी। इसके अतिरिक्त बुधराम को अभी तक कोई नौकरी भी नहीं लगी है?

गुरबारी की माँ ने कहा –बुधराम एक अच्छा स्वभाव का स्वस्थ और सुन्दर युवक है। उसे नौकरी भी अवश्य मिल जायेगी। वैसे भी, मेरा विचार है कि जब दोनों में प्रेम सम्बन्ध हो गया है तो 'गोनोड.' के बिना बपला हो सकता है। मानकी ने अपनी पत्नी को दो टूक जबाब दिया– 'कागे, गोनोड. दो का एमकेते बपला (आंदि) दो का होबावा।'(नहीं, बिना गोनोड. (बहुमूल्य) के शादी नहीं हो सकती)।

अब बुधराम के पास दो ही विकल्प था– या तो वह गुरबारी को भूल जाय या उसके साथ 'ओपोरतिपि' (भगाकर शादी) रश्म से शादी कर ले। परन्तु उसे डर था कि मानकी इस प्रकार के बपला के विरुद्ध पंचायत बुलाकर उसपर जुर्माना न कस दें।

इधर 'गोनोड.' से अधिक मानकी को इस बात की चिन्ता थी कि आंदि हो जाने के बाद गुरबारी के ससुराल जाने के बाद उसकी खेती–बारी, बाजार–हाट, घर–गृहस्थी चलाने में उसकी मदद कौन करेगा? रूईबारी अभी छोटी थी और वह विद्यालय में पढ़ रही थी। इस कारण भी मानकी तत्काल गुरबारी के बपला की बात टाल रहे थे। मानकी चाहते थे कि जबतक छोटी बेटी (रूईबारी) कुछ बड़ी होकर हापानुम नहीं बन जाती, गुरबारी के बपला को रोकने में ही उनकी भलाई है।

अब बुधराम भी पुलिस विभाग तथा फौज में बहाली के लिए दिये गये आवेदन पत्र से संबंधित चयन संबंधी सूचना पत्र की प्रतीक्षा कर रहा था।

शरीर से वह सिपाही या फौजी बनने के लिए उपयुक्त था। प्लस टू (12वीं) की परीक्षा भी वह प्रथम श्रेणी में पास किया था। उसका मन कॉलेज में पढ़ने का था परन्तु पिता की असामयिक मृत्यु और घर की खराब आर्थिक स्थिति के कारण उसने आगे की पढ़ाई रोक कर नौकरी करने का फैसला कर लिया था। गुरबारी से भी वह जब भी हाट में मिलता तो उसे आश्वासन देता कि वह नौकरी मिलते ही उससे शादी करने के सम्बन्ध में उसके मानकी पिता के पास शादी के प्रस्ताव के साथ 'अगुआ' भेजेगा। गुरबारी भी बुधराम को अपना पति बनाने के लिये कृत संकल्प थी और इसके लिए वह लम्बे समय तक प्रतिक्षारत रहेगी।

कुछ दिन बाद बुधराम को सेना में भर्ती के लिए राँची के आर्मी ऑफिस (भर्ती कार्यालय) से बुलावा आ गया। इस समाचार से उसकी माँ बहुत खुश थी। उसने बुधराम को राँची जाने के लिए यथोचित रूपये दिये और निर्धारित तिथि पर वह राँची चला गया।

जब गुरबारी को मालूम हुआ कि बुधराम फौज में बहाली के लिए राँची चला गया है तो वह बहुत खुश हुई। उसने मन ही मन सिड.बोंगा, देशाउलिबोंगा, जहेर एरा आदि से उसकी सफलता के लिए गोआरि (प्रार्थना) करने लगी। उसे पूरा विश्वास था कि बुधराम का चुनाव फौज के लिए जरूर हो जायेगा। उसे अपने भावी दाम्पत्य जीवन के सपने सोने नहीं दे रहे थे। सोने पर बुधराम फौजी युनिफार्म में आ जाता और उसकी नींद खुल जाती।

राँची पहुँच कर उसने प्रभारी सेना के अफसर से मिलकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। वहाँ सैकड़ों युवक लाईन में खड़े थे। वहीं बुधराम भी लाईन में लग गया। उसके बाद शारीरिक जाँच के लिए लम्बी दौड़, बाधा दौड़, लम्बे और ऊँचे कूद आदि का टेस्ट शुरू हुआ। साम तक टेस्ट चलता रहा। सभी टेस्ट में बुधराम सफल रहा।

दूसरे दिन उसकी डाक्टरी जाँच और कई प्रमाण पत्रों की जाँच की गई। शारीरिक गठन, और हर प्रकार से स्वस्थ रहने के कारण डाक्टरी जाँच में अच्छे अंक पाकर सफल हो गया था। जाँच और चयन का रिजल्ट तीसरे दिन घोषित हो गया और बुधराम का नाम सफल उम्मीदवारों की सूची में काफी ऊपर था। अब उसे पूरा विश्वास हो गया था कि अब फौजी रंगरूट बन जायेगा। उसे अप्रत्यक्ष रूप से अपने सफल होने का संकेत भी मिल गया था।

राँची से वह घर लौट गया था। उसके गाँव में प्रचार हो गया कि बुधराम की बहाली फौज में जल्द हो जायेगी। यह समाचार छोटानागरा हाट

के दिन गुरबारी और उसके पिता सिंगराय मानकी को भी मिल गई थी। गुरबारी की सहेलियाँ भी बहुत खुश थी। सभी को गुरबारी डियंग भी पिलाई थी। अब वह बुधराम से मिलने को आतुर थी।

गाँव वापस आने के बाद वह चौथे दिन छोटनागरा हाट गया। उसने अपने एक दोस्त से गुरबारी को भी हाट में आने का सन्देश भेज दिया था। हाट में गुरबारी आ गई थी। एक लम्बे अन्तराल के बाद दोनों मिले थे। बुधराम ने बड़े गर्मजोशी से हाथ मिलाया और 'जोअर' कहकर मुस्करा दिया। गुरबारी का शरीर आनन्द से रोमांचित हो गया और उसका चेहरा हर्षातिरेक से रक्तिम हो गया था।

दोनों एक जोजो (इमली) वृक्ष की छाया में हाट से दूर बैठकर प्रेमालाप करने लगे थे। गुरबारी ने उसे बताया था कि उसके पिता (सिंगराय) उसके फौज में भर्ती होने की संभावना से बहुत खुश हुए थे और बुधराम को नौकरी मिल जाने के बाद शायद वह बपला के लिए राजी हो जायेंगे। बुधराम के मन में एक आशा जगी थी कि अब 'ओपोर तिपि' के बदले राजी खुशी से उसका आंदि सम्पन्न हो सकेगा। गुरबारी भी उसे फौजी वेशभूषा में ही पति के रूप में पाना चाहती थी।

बुधराम को अपनी गृहस्थी के लिए कुछ सामान लेना था। अतः गुरबारी से हाथ मिलाकर फिर मिलने का वादा कर वह हाट चला गया था। कुछ देर पूरी खरीदारी कर वह अपने दोस्तों के साथ गाँव लौट गया था। गुरबारी इस मिलन की मधुर स्मृति लिए अपनी सहेलियों के साथ वापस गाँव चली गई थी।

कुछ दिनों तक प्रतीक्षा करने के बाद बुधराम की बहाली का पत्र मिल गया था। उसकी माँ को लगा कि अब उसके बुरे दिनों का अन्त हो गया। बुधराम की कमाई से उसका भरण–पोषण अच्छी तरह हो सकेगा। वह नियुक्ति पत्र पाने के तीसरे दिन ही सर्विस –ज्वायन करने राँची चला गया था। वहाँ उससे ज्वायनिंग पत्र लेकर उसे रंगरूटों के बैरक में ठहराया गया। वहाँ उसके कई साथी भी आ गए थे। सभी को मिलिटरी कैंटिन में खाने–पीने की व्यवस्था थी।

एक सप्ताह बाद उसे दानापुर मिलिटरी कैंट में ट्रेनिंग के लिए भेज दिया गया था। ट्रेनिंग ज्वायन करने के बाद उसने अपनी माँ को पत्र देकर सूचित कर दिया। साथ ही, अपने एक मित्र के पास गुरबारी के लिए एक पत्र भेज दिया था। गुरबारी पत्र पढ़कर बहुत खुश थी। उसे उम्मीद थी कि ट्रेनिंग बाद बुधराम उससे जरूर मिलने आयेगा। साथ ही, उसके पिता–माता

से भी अवश्य मिलेगा।

अब गुरबारी को ट्रेनिंग की अवधि तक अपने प्रेमी बुधराम से मधुर मिलन की प्रतिक्षा करनी थी। बुधराम ने भी अपने पत्र में उसे ट्रेनिंग के बाद राँची वापस आने पर गाँव आकर उससे मिलने का वादा किया था। उसने भी ट्रेनिंग की अवधि में उससे दूर रहकर अपनी विरह व्यथा का उल्लेख किया था। उसने आशा जतायी थी कि अब उसके पिता भी हमें अपना अरातडि (दामाद) बनाने के लिए तैयार हो जायेंगे। अब हम दोनों के मिलने की घड़ी शीघ्र आ जायेगी। अन्त में उसने पत्र में लिखा था –प्रेम भरा हार्दिक जोहार।

पत्र को वह बार–बार पढ़कर रोमांचित हो रही थी। उसे लगा कि बुधराम स्वयं उपस्थित होकर पत्र के माध्यम से प्रणय निवेदन कर रहा है।

यह पत्र बुधराम के सहिया (दोस्त) ने गुरबारी को हाट में ही दिया था। वापस आकर गुरबारी ने अपनी माँ को बुधराम के ट्रेनिंग में जाने की बात बताई थी। इस समाचार से गुरबारी की माँ भी बहुत खुश हुई थी। उसे विश्वास हो गया था कि बुधराम उसकी बेटी को सचमुच प्यार करता है और उसके साथ बपला करना चाहता है। अब गुरबारी की माँ भी बुधराम को दामाद बनाने के पहले उसे फौजी ड्रेस में देखना चाहती थी।

बुधराम की माँ को भी पत्र पाकर बहुत संतोष हुआ कि ट्रेनिंग बाद उसका बेटा फौज का जवान बन जायेगा। उसे अपने भाग्य पर भरोसा था कि सिंड.बोंगा की कृपा से उसके जीवन में सुख के अच्छे दिन आने वाले हैं।

बुधराम के कुमा (मामा) गुरूचरण हसदा को भी बुधराम के फौज में भर्ती होने का समाचार मिल गया था और वे भी बुधराम के गाँव अपनी अजि (बड़ी बहन) से मिलने आ गए थे। बुधराम की माँ ने उन्हें बताया कि बुधराम ट्रेनिंग में दानापुर गया है। उन्होंने बुधराम और गुरबारी की दोस्ती के विषय में बताया। उन्होंने बताया कि बुधराम सिंगराय मानकी की बेटी गुरबारी से बपला करना चाहता है।

गुरूचरण–अजि(दीदी) क्या तुम मानकी की बेटी को देखी हो?

सुकुरमुनि – अभी तक नहीं देखसकी हूँ। परन्तु गाँव की कई लड़कियाँ और बुधराम के कई सहिया भी उसे देखे हैं और उससे मिले भी हैं। सभी उसके स्वभाव और आचार–व्यवहार की तारीफ कर रहे थे।

गुरूचरण–ठीक है। अभी बुधराम का ट्रेनिंग खत्म होने दो। समय आने पर मैं स्वयं 'अगुआ' के रूप में मानकी से मिलूँगा।

एक दिन अपनी दीदी क घर रूक कर वे अपने गाँव लौट गए थे।

बुधराम की छः महीने की कठिन ट्रेनिंग भी समाप्त हो गई थी। उसकी पोस्टिंग दानापुर कैंट में ही हो गई थी। पोस्टिंग के बाद उसे घर जाने के लिए एक सप्ताह की छुट्टी मिल गई थी। वह बहुत खुश था। उसके दो साथी भी दानापुर कैंट में ही पोस्टिंग के बाद योगदान दिये थे। छुट्टी मिलते ही तीनों पटना से चाईबासा के लिए प्रस्थान कर गए थे।

दूसरे दिन बुधराम अपने गाँव पहुँच गया था। वह फौजी ड्रेस और फौजी बूट में बड़ा ही आकर्षक और स्मार्ट फौजी जवान लग रहा था। घर पहुँच कर उसने अपनी माँ को 'जोअर' करते हुए उसके पैर छुए। सुकुरमुनि अपने पुत्र को फौजी के रूप में देखकर प्रफुल्लित थी और उसे अपने गले लगा ली थी। उसकी आँखों में खुशी के आँसू छलक गए थे।

गाँव के कई लोग बुधराम को रास्ते में मिले थे और सभी को उसने 'जोअर' किया था। सभी उसे शुभकामना दे रहे थे। वे गर्वित थे कि उनके गाँव का एक सेपेड (युवक) फौजी बन गया है। गाँव के मुंडा अपनी पत्नी सहित बुधराम को आर्शीबाद देने आ गए थे। वे भी बुधराम के फौजी बनने से बहुत खुश थे।

बुधराम स्नान आदि सम्पन्न कर मांडि, उतु, दालि, सब्जी आदि खाकर थोड़ी देर विश्राम किया। दोपहर बाद वह अपने एक मित्र के घर मिलने गया। बामिया पुरती उसका बचपन का दोस्त था। दोनों साथ–साथ हाई स्कूल तक पढ़े थे। वह आई0टी0आई0 में नामांकन का प्रयास कर रहा था। बामिया की माँ बुधराम का सिमजेरोम (मुर्गी का अंडा) का आमलेट और डियंग से स्वागत किया। बामिया को उसने अपने फौजी जीवन का बड़ा ही कठिन प्रशिक्षण का अनुभव सुनाया। उसने बामिया से कहा–'दोस्त, अब तुम गुरबारी को मेरे आने की सूचना किसी तरह से दे दो। उसे कल लगने वाले छोटानागरा हाट में मिलने को कह दोगे। बामिया ने कहा– 'दोस्त, मैं थोड़ी देर में मोटर सायकिल से जाकर उसे कल हाट में तुमसे मिलने का आमंत्रण दे दूँगा।'

दूसरे दिन हाट में बुधराम अपने फौजी ड्रेस में पहुँचा तो उसके कई दोस्त और उपस्थित परिचित लोग उससे मिले और बधाई दी। उसने देखा कि कुछ दूर पर गुरबारी अपनी एक सहेली से बात कर रही है। बुधराम उसके निकट पहुँचकर –'एसु जोअर सहिया' (बहुत नमस्ते दोस्त) कहकर गुरबारी को चौंका दिया। गुरबारी हाथ मिलाकर 'जोअर' (नमस्ते) कहकर मुस्करा दी। वह बुधराम को कुछ देर तक फौजी ड्रेस में एकटक देखती रही।

बुधराम –चिया हापानुम, आञा को दो का अदान तना? (क्या सुन्दरी, तुम मुझे नहीं पहचान रही हो)।

गुरबारी–बहुत दिन बाद फौजी बनकर आये हो, भला कैसे पहचानूं। मिलने में इतनी देर क्यों कर दी?

बुधराम– क्या करता। ऐसी नौकरी मिली कि एक दिन की छुट्टी भी नहीं मिल रही थी। मुझे दानापुर कैंट में ट्रेनिंग के लिए भेज दिया था। ट्रेनिंग से लौटने के बाद मेरी पोस्टिंग दानापुर कैंट में ही हो गई है। तुम्हारे भाग्य से और मेरे विरह की वेदना को शान्त करने के लिए एक सप्ताह की छुट्टी मिल गई है। अब तो तुम इतनी लम्बी अवधि तक तुमसे न मिल पाने की लाचारी समझ गई होगी।

गुरबारी –अच्छा, चलो माफ किया। बीच में तुम्हारा पत्र मिला था। उसको बार–बार पढ़कर तुम्हारे आने का इन्तजार कर रही थी। आज तुमसे मिलकर जो खुशी मिली, उसका वर्णन नहीं कर सकती।

गुरबारी ने बताया कि उसके पिता सिंगराय मानकी को भी मुण्डा लोगों की बैठक में भाग लेना है। उसकी एंगा (माँ) भी उनके साथ आई है। दोनों डाकबंगला में आ गए हैं। उनसे भी तुमको मिलना चाहिए। बुधराम भी उनसे मिलने का इच्छुक था ताकि वे उसे फौजी की वेश–भूषा में देख सकें।

गुरबारी– चलो, और चलकर उनसे भी मिल लो।

बुधराम– हाँ, चलो पहले उनको 'जोहार' कर आशीर्वाद ले लें।

बुधराम गुरबारी के साथ डाक बंगला चला गया। वहाँ उसकी माँ, पिता और उसकी छोटी बहन रूइबारी बैठकर बातें कर रहे थे।

बुधराम जाकर मानकी और गुरबारी के माँ का पैर छूकर 'जोहार' किया। दोनों ने 'जोहार' का आर्शीवाद देकर उसे पास की कुर्सी पर बैठाया। गुरबारी कुछ दूर पर एक कुर्सी पर बैठ गई थी।

मानकी और उसकी पत्नी उसके फौजी ड्रेस और उसके आकर्षक व्यक्तित्व से काफी प्रभावित हुए।

मानकी ने पूछा– बुधराम बाबू अभी आप की पोस्टिंग कहाँ हुई है।

बुधराम–काका, अभी ट्रेनिंग के बाद मेरी पोस्टिंग दानापुर कैंट में हुई है। ट्रेनिंग से आने के बाद एक सप्ताह की छुट्टी मिली है। अभी कल ही गाँव आया हूँ।

मानकी–तुम्हारी माँ ठीक है न? तुम्हारे स्वर्गीय पिता से भी मेरा परिचय था। बहुत मिलनसार व्यक्ति थे। तुम्हें कब तक रहना है? एक दिन हमारे घर भी आओ तो मुझे खुशी होगी।

बुधराम – हाँ काका, मैं एक –दो दिन में आप के घर जरूर आऊँगा। हमारे मामा कल आ रहे हैं। उन्हें भी साथ लाऊँगा।

मानकी—आज हमारे पीड़ (पंचायत) के मुंडा और डकुआ की बैठक है। तुम बैठकर बातें करो। मैं डाक बंगला के चौकीदार से तुमलोगों के लिए नास्ता—पानी का इन्तजाम करवाता हूँ।

मानकी के जाने के बाद गुरबारी भी वहाँ आकर बैठ गई। गुरबारी की माँ उसकी नौकरी के बारे में पूछ—ताछ कर रही थी। साथ ही, उसकी माँ और घर का समाचार ले रही थी।

कुछ देर में कुछ चकणा (चना का छोला) और पकौड़ा के साथ छोटा चाटू में 'डियंग' लेकर डाक बंगला का चौकीदार आकर सबको जोहार कर नास्ता आदि टेबुल पर रख दिया। उसने एक बड़ा जग में पानी और तीन ग्लास भी रख दिया था।

बात—चीत करते हुए सभी चकणा खाने लगे और डियंग भी थोड़ा—थोड़ा पीने लगे। हो में यह कहावत है —डियंग बिना जगर (बातचीत) नहीं हो सकता।

नास्ता—पानी के बाद बुधराम ने कहा—काकी, हमारे मामा कल हमारे घर आ रहे हैं। मैं परसों उन्हें लेकर आप के घर आऊँगा।

सुकुरमुनि —ठीक है बाबू, कुपुल एमचेड लगिड ओवा पाते हुजुबेन, (ठीक है बबुआ, मेहमान के रूप में स्वागत के लिए हमारे घर जरूर आओ)।

बुधराम सुकुरमुनि का पैर छूकर 'जोहार कर वहाँ से चला। गुरबारी उसे विदा करने उसके साथ चली। विदा करते समय दोनों एक दूसरे से हाथ मिलाये। बुधराम ने मुस्कराकर कहा— 'आज इतने दिनों के इन्तजार के बाद तुमसे कुछ समय के लिए प्रेम—मिलन हुआ। तुम्हारे माता—पिता से मिलकर बहुत खुशी हुई। परसों तुम्हारे घर आऊँगा। देखो, तुम्हारे मानकी पिता गोमके मुझे अपना 'अरातडि' (दामाद) बनाने की अनुमति देते हैं या नहीं।

इतना सुनकर गुरबारी का मुखमंडल खिल उठा। वह मुस्करा कर अपने इस मिलन को अपना सौभाग्य समझा और बोली—ठीक है, सिंङबोंगा और जयरा माँ की कृपा होगी तो हम दोनों की मनोकामना जरूर पूरी होगी।

बुधराम ने मुस्करा कर गुरबारी से हाथ मिलाया और फिर मिलने का वादा कर हाट की ओर चल दिया। गुरबारी देर तक उस फौजी प्रेमी को बिछुड़ कर जाते हुए देखती रही थी।

दूसरे दिन बुधराम के मामा गुरूचरण हसदा उसके घर आ गए थे। बुधराम की सेना में भर्ती, ट्रेनिंग आदि के विषय में बुधराम से जानकारी ली। उन्हें सब कुछ जानकर उन्हें खुशी के साथ गर्व भी हुआ कि उनका भगिना देश की रक्षा के लिए फौजी बन गया है।

बुधराम ने बताया कि सिंगराय मानकी और उनकी पत्नी से छोटानागरा हाट में उसकी मुलाकात हुई। उनकी बेटी गुरबारी भी आई थी। मानकी सायोब काफी अच्छे स्वभाव के लगे। उन्होंने कल आपको और मुझे कुपुल (मेहमान) के रूप में अपने घर पर आमंत्रित किया है।

बुधराम की माँ ने अपने भाई (गुरूचरण) को बताया कि बुधराम के गुरबारी के साथ बपला के लिए भी उनको 'अगुआ' बनकर मानकी से मिलकर बातचीत करनी है। गुरबारी का स्वभाव, चाल चलन, आचार–विचार काफी अच्छा है। वह बुधराम से प्यार भी करती है और आंदि (शादी) के लिए तैयार भी है। अब तुमको मानकी से बपला के लिए बातचीत करना जरूरी है। मैं चाहती हूँ कि मेरे बेटे की छुट्टी खत्म होने के पहले गोनोङ (बधुमूल्य) आदि की बात तय हो जाय। मैं चाहूँगी कि बुधराम की शादी (बपला) रजी खुशी की तरह कम खर्च में हो जाय।

गुरूचरण ने बुधराम से गुरबारी के सन्दर्भ में कई अन्य जानकारियाँ लीं। बुधराम ने उन्हें आस्वस्त करते हुए बताया कि गुरबारी सीधी–सादी सुन्दर और अच्छे विचारधारा की हापानुम (युवती) है। वह अपने घर–गृहस्थी में माँ–बाप को पूरा सहयोग करती है। मानकी जी का पूरा परिवार ही काफी सरल और मिलनसार स्वभाव का है।

बुधराम की माँ ने गुरूचरण से गुरबारी तथा उसकी माँ की सहमति जान लेने को भी कहा। साथ ही मानकी यदि राजी हो जाते हैं तो अगले लगन (मागेचन्डु) में बपागे (छेका) आदि की रश्में पूरी की जायेगी। आंदि (विवाह) के लिए भी हम अपने गाँव के दिउरी (पुजारी) से विचार कर लेंगे।

गुरूचरण बोले–दीदी, तुम चिन्ता मत करो। बुधराम की शादी काफी धूम–धाम से होगी। कल मानकी गोमके के घर जाकर 'अगुआ' का काम पूरा कर लूँगा।

दूसरे दिन बुधराम अपने मामा के साथ अपने दोस्त की मोटरसायकिल से लगभग 10 बजे मानकी के घर पहुँच गया। गुरबारी की माँ घर पर ही थी। मानकी किसी से मिलने गाँव में गए थे। दोनों मेहमानों को गुरबारी और गुरबारी की माँ ने लोटा–पानी देकर 'जोअर' किया। गुरबारी की माँ उनका कुशल समाचार पूछने लगी। गुरूचरण ने बताया कि वे शिक्षक हैं और उनके परिवार के साथ–साथ दीदी भी ठीक–ठाक है।

गुरूचरण–आज मैं बुधराम के बपला के लिए 'अगुआ' बन कर आया हूँ। दीदी ने मुझे भेजा है। मानकी गोमके से डिंडा कुई गुरबारी को अपने भगिना के लिए माँगने आया हूँ।

सुकुरमुनि–इया एसु बुगिन जगर(बहुत अच्छी बात है)। मैं भी चाहती हूँ कि गुरबारी के बपला अगले लगन तक ठीक हो जाय तो अच्छा होगा।

इसी बीच मानकी आ गए। गुरूचरण ने उनसे हाथ मिलाकर कहा–एसु जोअर मानकी गोमके।

मानकी–जोअर जोअर सोमोदि। बुगिन मेनाचि?(संबंधी को जोहार) आप अच्छे हैं न? बुधराम ने भी मानकी को हाथ जोड़ कर जोहार किया।

गुरूचरण–हाँ, मैं भी सपरिवार कुशल से हूँ। बुधराम से आपका निमंत्रण मिला और मैं आ गया।

मानकी भी एक कुर्सी लेकर बैठ गए। मानकी बुधराम का समाचार पूछने लगे।

थोड़ी देर में सिमजरोम(मुर्गी का अण्डा) का आमलेट तीन प्लेट में आ गया। आमलेट के बाद थोड़ा–थोड़ा डियङ भी ग्लास में आ गया। गुरबारी दोनों मेहमानों को पहले हाथ जोड़ कर 'जोहार' कर चुकी थी। अब उन्हें नास्ता कराने में लगी थी।

मानकी ने बुधराम के फौज में भर्ती होने पर गुरूचरण से अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि बुधराम बाबू के पिता स्व0 लंकेश्वर सोय से भी परिचय था। वे बहुत सज्जन और समाज की सेवा करने वाले थे। दुर्भाग्य से उनकी मौत अचानक हो गई थी। अब बुधराम की नौकरी हो जाने से उनकी कमी पूरी हो गई।

मानकी –बुधराम, तुम नौकरी पर कब वापस जा रहे हो?

बुधराम – काका, मैं चौथे दिन वापस चला जाऊँगा।

मानकी–अच्छा तुम अपनी ड्यूटी मन लगाकर करना ताकि तुम्हारे अफसर को कोई शिकायत करने का मौका नहीं मिले।

इस बीच बुधराम का एक दोस्त दिलीप गगराइ, जो आइ.टी.आइ. का विद्यार्थी था बुधराम से मिलने आ गया। वह भी मानकी के गाँव का रहने वाला था।

बुधराम उनसे हाथ मिलाकर जोहार किया। उसने मानकी को जोहार किया और कहा–'काका' मैं थोड़ी देर के लिए बुधराम को अपने घर ले जाना चाहता हूँ।

मानकी –ठीक है, बुधराम के कुमा (मामा) से परमिशन ले लो।

गुरूचरण –ठीक है, बुधराम! तुम अपने दोस्त के परिवार से मिलकर आ जाओ।

मानकी–दिलीप, बुधराम के 'मांडीजोम' यहीं होगा। इसलिए खाना

खाने की व्यवस्था नहीं करोगे।

बुधराम अपने दोस्त दिलीप के साथ उसके घर चला गया। गुरबारी और उसकी माँ रसोई घर में मेहमानों के लिए खाना बनाने में लग गई थी।

अब वहाँ गुरूचरण और मानकी आपस में बातचीत करने लगे।

गुरूचरण–मानकी सायोब, आज मैं आपका कुपुल के साथ–साथ अपनी दीदी के अनुरोध पर 'अगुआ' बन कर भी आया हूँ।

मानकी–आपका 'अगुआ' के रूप में बहुत–बहुत स्वागत है।

गुरूचरण– मानकी जी, हमारा और आपका किलि (गोत्र) भिन्न–भिन्न है। इसलिए 'बपला' की बात की जा सकती है। बुधराम मेरी बहन का अकेला लड़का और डिंडा कोवा' (कुँआरा लड़का) है। आपके घर में एक 'डिंडाकुई' विवाह योग्य हो गई है। मैं उसी का हाथ माँगने आया हूँ।

हमारी दीदी बहुत अस्वस्थ रहती है। बुधराम के नौकरी पर चले जाने के बाद उसे देखने वाला कोई नहीं है। इसलिए वह भी अपने घर में जल्द से जल्द 'किमिन' (बहु) लाना चाहती है।

यह भी मालूम हुआ है कि बुधराम से आपकी बड़ी बेटी गुरबारी से परिचय हो चुका है और दोनों कई बार मिल चुके हैं और दोनों एक दूसरे को अच्छी तरह जान चुके हैं। बुधराम भी गुरबारी से बपला के लिए सहमति दे चुका है।

मानकी–हमारे घर में भी इस संबंध में चर्चा हुई है। गुरबारी की माँ बुधराम से पहले भी मिल चुकी है। उसकी माँ ने गुरबारी से इस संबंध में बात की है। गुरबारी भी अपनी सहमति दे चुकी है। अतः दोनों के बपला संबंधी बात को आगे बढ़ाने में कोई अवरोध मुझे नजर नहीं आता। बुधराम का विनम्र स्वभाव, आचार–विचार भी हम सभी को अच्छा लगा है। सबसे बड़ी बात है कि वह हमारे देश की सेना में भर्ती होकर देश की रक्षा करेगा। इसलिए 'बपला' संबंधी आपका प्रस्ताव मुझे मंजूर है।

गुरूचरण–मुझे बहुत खुशी हुई कि आपने हमारे भगिना (बुधराम) से सम्बन्ध जोड़ने और उसे अपना 'अरातडि' (जामाता–दामाद) बनाने की सहर्ष स्वीकृति दे दी।

अब इस बपला के सन्दर्भ में अपने रीति–रिवाज के अनुसार 'गोनोङ' (बधुमूल्य) के सम्बन्ध में आपका विचार जानना चाहेंगे ताकि इसकी जानकारी बुधराम की माँ को दे दी जाय।

मानकी –देखिए सोमोदि, अब जब कोआ होन (लड़का) और कुइहोन (लड़की)–दोनों एक दूसरे को चुनकर पसन्द कर चुके हैं, तो हम लोगों को

भी उनकी रजामन्दी मानकर 'गोनोङ' को अधिक महत्त्व नहीं देना चाहिए। बुधराम अपनी शक्ति के अनुसार गुरबारी को अपनी येरा (पत्नी) बनाने के लिए जो भी देगा, वह हमें मंजूर होगा। इस बपला में गोनोङ कोई मुद्दा नहीं बनेगा।

गुरूचरण–बहुत–बहुत धन्यवाद मानकी गोमके। आप जैसे विचारवान और त्यागी 'हो' ही अपने समाज को आगे ले जाने में सक्षम होंगे। इस परम्परा को तोड़ने में मैं भी कोल गुरू लको बोदरा के 'गोनोङ रहित विवाह' को सबसे उत्तम मानता हूँ।

मानकी–मैं भी कोल गुरू लको बोदरा के 'गोनोङ' के साथ–साथ अन्य सुधारवादी संदेशों' को मानता हूँ। आप मेरी सहमति से बुधराम की माँ और हमारी होने वाली बालायेरा (समधिन) को अवगत करा देंगे।

गुरूचरण– अब इस बपला को सम्पन्न करने के लिए कन्या का बपागे (छेका) एक महत्त्वपूर्ण विधि है। बुधराम तो तीन दिनों बाद अपनी डयूटी पर चला जायेगा। अब बपागे के लिए शुभ दिन के निर्धारण पर विचार करना होगा।

थोड़ी देर में गुरबारी और उसकी बहन रूइबारी लोटा–पानी लेकर आ गई और दोनों मेहमानों का हाथ–पैर धुलवाया और खजूर की चटाई पर बैठाया। मानकी भी आकर उनके साथ बैठ गए।

आज के खाना में मांडी(भात), दालि(दाल) और सिमसांडी(मुर्गे का) मांस बना था। थाली में खाना लेकर दोनों बहने आकर परोस गई। खाना काफी स्वादिष्ट था।

खाना खाने के बाद दोनों बहनों ने इनका हाथ धुलवाया और हाथ पोंछने के लिए तौलिया दिया।

दोनों मेहमानों को एक कमरे में आराम करने की व्यवस्था की गई थी। मानकी ने उन्हें दोपहर में विश्राम करने का आग्रह किया था।

लगभग 4 बजे बुधराम के मामा ने विदा लेने हेतु मानकी से आग्रह किया। गुरबारी की माँ और उनकी दोनों बेटियाँ उन्हें विदा करने आ गई थी। गुरूचरण ने दोनों बेटियों को आशीर्वाद के रूप में सौ–सौ रूपया दिए।

बुधराम ने मानकी और उनकी पत्नी को तथा दोनों बहनों को हाथ जोड़कर 'जोहार' किया। गुरूचरण को भी सभी ने 'जोहार' किया। मानकी दोनों को छोड़ने कुछ दूर तक गए। गुरूचरण को लेकर बुधराम मोटरसायकिल से अपने गाँव को प्रस्थान किया। विदा होते समय मानकी ने गुरुचरण से कहा–इस सम्बन्ध में चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। बुधराम

की नई नौकरी है। और वह भी फौज का जवान बन गया है। इसलिए 'बपला' सम्बंधी सभी प्रकार के कार्यक्रम उसके अवकाश मिलने पर ही निर्भर करेगा।

गुरूचरण–ठीक है, मानकी गोमके। हमलोग बुधराम से विचार–विमर्श कर इस संबंध में निर्णय लेंगे। इस 'राजी–खुशी' बपला के लिए हम लोग आपके सदा कृतज्ञ रहेंगे।

घर वापस आकर गुरूचरण ने अपनी दीदी (बुधराम की माँ) को मानकी से 'बपला' सम्बन्धी हुई बातचीत से अवगत कराया। उन्होंने मानकी की काफी तारीफ की और 'गोनोङ' संबंधी उनके विचार की जानकारी दी। बुधराम की माँ ने अपने भाई से कहा–दादा, आबेन एसु बुगिन अगुआ मेनाबेन' (भाई तुम बहुत अच्छा अगुआ बन गए)।

अब बुधराम की माँ को विश्वास हो गया कि बुधराम की आंदि गुरबारी से होना पक्का हो गया और उसमें अब कोई बाधा नहीं होगी। उन्होंने सिंङबोंगा को मन ही मन नमन किया। उन्हीं की कृपा से उसका बेटा फौजी बन गया और अब उसे गुरबारी जैसी सुशील और अच्छी बहु मिल जायेगी।

बुधराम भी बहुत खुश था। उसे आश्चर्य हुआ कि उसके मामा ने मानकी जी को एक ही बार में बपला के लिए मना लिया और वह भी बिना 'गोनोङ' के तय किये जाने वाले रूढ़िवादी परम्परा के। अब उसकी माँ और बुधराम को 'गोनोङ' संबंधी जो चिन्ता थी, वह दूर हो गई। फिर भी उसने मन ही मन तय किया कि बपला के समय तक वह अपने वेतन से अधिक से अधिक पैसा बचाकर सम्मान योग्य 'गोनोङ' देने की व्यवस्था अवश्य कर लेगा।

उसके मामा ने भी बुधराम की माँ को आश्वस्त किया कि वह अपने एक मात्र भगिना (बुधराम) की आंदि धूम–धाम से सम्पन्न करायेंगे। उन्होंने बुधराम से पूछा –बाबू, अभी तुम्हारी नई नौकरी है। तुरंत छुट्टी तो मिलेगी नहीं। फिर भी तुम अपने सायोब से 'बपला' संबंधी बातें बताओगे ताकि शुभ लगन (मागे पर्व–मागेचंडु) के समय तुम्हें छुट्टी मिल जाय। इसमें अभी कई महीने बाकी हैं।

गुरूचरण अपनी बहन और बुधराम से विदा लेकर दूसरे दिन अपने गाँव के लिए प्रस्थान किये।

उधर गुरबारी भी अपने पिता के निर्णय से बहुत खुश थी। उसकी माँ को भी अब विश्वास हो गया था कि फौजी बुधराम उनका अरातडि (दामाद) अवश्य बन जायेगा।

बुधराम के जाने के एक दिन पूर्व छोटानागरा हाट था। उसने अपने

दोस्त से कह दिया था कि वह गुरबारी को हाट में अवश्य जाने को कह देगा, ताकि डयूटी पर जाने के पहले एकबार वह गुरबारी से मिल लेगा।

बुधराम हाट के दिन अपने घर के लिए माँ के लिए तेल, साबुन, नमक आदि लेने के लिए 10 बजे ही छोटानागरा अपने एक दोस्त के साथ पहुँच गया। वह अपने दोस्त के साथ इधर–उधर घूम कर गुरबारी को खोज रहा था।

गुरबारी अपनी सहेलियों के साथ लगभग 12 बजे हाट पहुँची। वह अपनी सहेलियों के साथ घूम रही थी। तभी बुधराम की नजर उस पर पड़ी। वह वहाँ पहुँचा और गुरबारी तथा उसकी सहेलियों से हाथ मिलाकर जोहार किया। एक लड़की ने मजाक किया– चिया तेयंग (जीजा) गोमके, बुगिन मेना चि?(कहो जीजाजी, आप अच्छी तरह से हैं न) यह सुनकर गुरबारी शरमा गई। परन्तु बुधराम ने मुस्कराते हुए कहा–इया तेयंग कुइको, आबेना बुगिन ओन्डो आञओ बुगिन। (हाँ, साली साहिबा, आप अच्छी हैं तो मैं भी ठीक हूँ)।

इस मजाकिया बातचीत से सभी लड़कियां और बुधराम का दोस्त हँसने लगे थे।

इसके बाद गुरबारी की सहेलियाँ उसे छोड़कर हाट में खरीद–बिक्री करने चली गई थी। बुधराम का दोस्त भी दोनों को खुलकर मिलने और बातें करने के लिए हाट में चला गया था।

बुधराम –प्यारी गुरबारी, तुम्हारे ओवा (घर पर) जाकर भी तुमसे प्यार की दो बातें नहीं हो सकी थीं। फिर भी तुम्हारे पिताजी हमारे और तुम्हारे प्यार को महत्त्व देते हुए 'बपला' के लिए हमारे मामाजी (अगुआ) को अपनी सहमति दे दी। यह मेरे लिए सौभाग्य की बात थी। सचमुच तुम्हारे माँ–पिता महान हैं, जिन्होंने बिना गोनोङ तय किये आंदि के लिए राजी हो गए। मेरी माँ इस समाचार से बहुत खुश हुई। अब उन्हें 'गोनोङ' की समस्या से मुक्ति मिल गयी।

गुरबारी–मुझे भी अपने पिताजी पर बड़ा गर्व है कि वे दो प्रेमियों के बीच किसी प्रकार की बाधा उपस्थित करना अनुचित समझा। पहले मुझे भी लगा था कि मानकी होने के नाते पिताजी कहीं भारी–भरकम 'गोनोङ' की माँग न कर दें।

बुधराम–यह हमलोगों का पवित्र प्यार है, जिसने हम दोनों को विवाह के बंधन का अवसर दे दिया।

गुरबारी–अच्छा तुम तो कल अपनी नौकरी पर चले जाओगे। फिर कब मिलन होगा?

बुधराम –अब तो हमें और तुम्हें भी कुछ समय तक इन्तजार करना

पड़ेगा। अब आशा है, मागेचन्डु (माघ महीना) में ही हम मिलेंगे और सदा के लिए एक दूसरे के आंदि के पवित्र बन्धन में बंध जायेंगे।

गुरबारी—इसमें तो कई महीने लग जायेंगे। इतने दिनों तक का लम्बा वियोग की पीड़ा मैं कैसे सहूँगी।

बुधराम—मालूम है न कि पार्वती को शिव बोंगा को पति के रूप में पाने के लिए कठिन तपस्या करनी पड़ी थी। बस उनको याद कर गोआरि कर धैर्य धारण करोगी। वैसे मेरा प्रेम पत्र किसी न किसी माध्यम से तुम्हें मिलता रहेगा।

गुरबारी—ठीक है, अब तुम्हारा इन्तजार ही मेरे लिए पार्वती की तपस्या होगी। हाँ, प्रेम पत्र के माध्यम से अपना कुशल—क्षेम अवश्य देते रहना।

बुधराम—तुम चिन्ता मत करो। हमारा शरीर जरूर तुमसे दूर रहेगा पर जान तो बराबर तुम्हारे पास रहेगा।

इसके बाद दोनों कुछ दूर जाकर कुछ चकणा आदि लेकर थोड़ा—थोड़ा डियंग लिए। उसके बाद गुरबारी की एक सहेली आ गयी थी। गुरबारी बुधराम से हाथ मिलाकर उसके साथ चली गई थी।

बुधराम भी हाट से गृहस्थी के लिए कई आवश्यक सामान खरीद कर घर लौट गया था। उसने अपनी माँ से गुरबारी से मिलने की बात भी बता दी थी।

दूसरे दिन नास्ता करके बुधराम चाईबासा के लिये प्रस्थान कर गया था। उसका एक फौजी दोस्त भी उसके साथ दानापुर कैन्ट जाने वाला था। दोनों राँची जाकर ट्रेन पकड़कर दानापुर के लिए प्रस्थान कर गए थे।

अब बाबाहेर चन्डु (हेरो पर्व) अथवा धान बुनने का महीना (जून) आ गया था और गाँव में हेरो पर्व मनाने की तैयारी शुरू हो गई थी। गुरबारी को बुधराम की अनुपस्थिति में सभी पर्व —त्योहार फीका लग रहे थे। अब उसे मकर चन्डु (मकर संक्रान्ति) (जनवरी) के बाद तक उसे बुधराम के आने की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। अब वह अगले वर्ष मागे पोरोब में ही संभवतः आ सकेगा। उसे बुधराम के पत्र का भी इन्तजार था।

उसे विश्वास था कि मागे पर्व के बाद ही उसके बपला (शादी) का कार्यक्रम शुरू हो सकेगा। उसे यह अवधि बहुत लम्बी लगने लगी थी। उसके जीवन में बुधराम से मिलने की इतनी तीब्र अभिलाषा पहले कभी महसूस नहीं हुई थी। विरह की इतनी लम्बी अवधि बिताने की चिन्ता उसे अब सताने लगी थी।

बुधराम दानापुर कैन्ट जाकर अपनी डयूटी ज्वायन कर लिया था। उसे

कैन्ट में 15 दिनों का एक विशेष प्रशिक्षण लेना था और फायरिंग रेंज में भिन्न–भिन्न प्रकार के आर्म्स (राइफल आदि) से टार्गेट सूटिंग का अभ्यास भी करना था। उसके अफसर कर्नल एस.के. सिंह काफी अच्छे स्वभाव के युवा पदाधिकारी थे। बुधराम के बैच के सभी रंगरूट उनके नियंत्रण में ही प्रशिक्षण ले रहे थे। साथ ही सभी रंगरूटों को वहाँ के फार्म में कृषि, बागवानी, डेयरी आदि में भी कुछ देर कार्य करना पड़ता था। सभी सुबह से ही अपने कार्य में लग जाते थे–परेड के बाद।

उनके लिए अलग बैरक बना हुआ था, जहाँ उनके लिए आवासीय व्यवस्था की गई थी।

कैंट का कैंटिन काफी अच्छा था जहाँ उन्हें निःशुल्क नास्ता, खाना आदि मिलता था।

बुधराम का प्रशिक्षण समाप्त होने के बाद कर्नल सिंह उसके कार्य से प्रभावित होकर उसे अपने बंगले के बागान की देख–रेख की जिम्मेवारी भी सौंप दिये थे। उनकी पत्नी मैडम अनामिका सिंह भी काफी पढ़ी–लिखी और अच्छे स्वभाव की थी। वे भी बुधराम के कार्य और विनम्र स्वभाव से काफी खुश थी। वे हरियाणा की थी। कर्नल साहब का एक छोटा लड़का अंशुमान था, जिसे अंशु कहकर बुलाते थे। उसे बुधराम के साथ खेलने और झूला झूलने में बड़ा मजा आता था। बुधराम भी बहुत प्यार करता था। कर्नल साहेब के परिवार में इतना घुल–मिल गया था कि उसे अपने परिवार से दूर रहने की जरा भी चिन्ता नहीं थी।

बुधराम हर महीने के पहले सप्ताह में अपनी एंगा (माँ) के नाम से वेतन की कुछ राशि (रूपये) मनिआर्डर से भेज दिया करता था। बीच–बीच में पत्र द्वारा माँ को अपना समाचार भी भेजा करता था। उसे खाने–पीने के लिए कैंटिन में पैसा नहीं देना पड़ता था। बुधराम वहाँ कभी भी शराब नहीं पीता था। वह नहीं चाहता था कि उसे शराब की बुरी आदत लग जाय। उसे अपनी माँ और अपनी होने वाली पत्नी गुरबारी की अधिक चिन्ता थी। अपने घर पर भी वह 'डियंग' के अलावा कोई शराब (महुआ आदि का) कभी नहीं पीया था।

दानापुर कैन्ट में पोस्टिंग के बाद उसका शरीर पहले से अधिक स्वस्थ और स्मार्ट लगता था। उसके चेहरे पर एक आकर्षक तेज दिखलाई पड़ता था। कभी–कभी एकान्त में उसे अपनी माँ के साथ–साथ गुरबारी की याद आ जाती थी। उसके मामा उसकी माँ से मिलकर उनका समाचार पत्र द्वारा भेजा करते थे। उसके मामा प्रत्येक माह उसके घर जाकर उसकी माँ के लिए गृहस्थी के आवश्यक सामान की व्यवस्था कर देते थे। बुधराम द्वारा भेजी गई

राशि उसकी माँ के भरण–पोषण के लिए यथेष्ट थी। खेती से सालभर का चावल, मक्का आदि मिल जाता था।

एक बार उसका दोस्त दिलीप गगराई अपने चाचा से मिलने पटना आया था। वह एक दिन दानापुर कैंट बुधराम से भी मिलने चला गया। कैंट के गेट पर गार्ड से उसने अपना परिचय देकर बुधराम सोय से मिलने की अनुमति माँगी। गार्ड उसे बुधराम के बैरक के पास भेज दिया। वहाँ उसकी मुलाकात बुधराम से हो गई। दोनों हाथ मिलाकर एक दूसरे को जोहार किया। गगराई ने बताया कि उसके एक चाचा सेल्स टैक्स अफसर हैं। उनसे ही मिलने वह पटना आया है। गगराई बुधराम के बदले हुए व्यक्तित्व, उसके लाल चेहरे और गठीले शरीर को देखकर काफी प्रसन्न हुआ।

बुधराम उसे कैंटिन ले गया और दोनों साथ खाना खाए। फिर दोनों बैरक में वापस आ गए। गगराई ने बताया कि वह बीच–बीच में उसकी माँ से मिलता रहता है। कुछ दिन पहले हाट में गुरबारी भी मिल गई थी। वह भी ठीक–ठाक है और अपनी 'बपला' की प्रतीक्षा कर रही है।

बुधराम –तुमसे माँ और गुरबारी का कुशल–समाचार जानकर विशेष खुशी हुई। मेरी ओर से माँ और गुरबारी के लिये पत्र लेते जाओगे। गुरबारी को हाट में गोपनीय ढंग से पत्र देना ताकि किसी को मालूम न हो।

दिलीप–ऐसा ही होगा। मैं एक–बा–एक पटना आ गया। पहले से प्रोग्राम होने पर गुरबारी से अवश्य मिल लेता।

बुधराम ने पत्र लिखकर दो अलग–अलग लिफाफा में डालकर गगराई को दे दिया। गगराई ने बताया कि वह आज रात की ट्रेन से वापस चला जाएगा।

बुधराम उसे दानापुर कैंट के बस स्टैड छोड़ने उसके साथ आया। दोनों हाथ मिलाकर एक दूसरे को 'जोहार' किये। गगराई बस से पटना के लिए प्रस्थान किया। बुधराम अपने बैरक में वापस आ गया। वह अपने बिस्तर पर बहुत देर तक गुरबारी की यादों में खोया रहा था। चार बजे वह कर्नल सिंह के बंगला पर चला गया।

देखते–देखते मकर चन्डु (मकर संक्रान्ति) का पर्व आ गया। कैंट में भी जवान और अफसर मकर संक्रान्ति का पवित्र पर्व गंगा स्नान के बाद चूड़ा–दही–तिलकुट खाकर मना रहे थे। बुधराम भी कर्नल सिंह के आवास पर चूड़ा–दही आदि खाकर मकर पर्व मनाया। इस तरह का चूड़ा–दही और तिलकुट का स्वादिस्ट भोजन उसे पहले कभी नहीं मिला था।

अब फरवरी महीना में मागे पर्व भी आने वाला था। गाँव से उसके एक

मित्र ने पत्र भेज कर सूचित किया था कि हमलोगों के गाँव में फरवरी के अन्तिम सप्ताह में मागे पर्व मनाया जायेगा।

उसके मामा का भी पत्र आया था जिसमें मागे पर्व में लम्बी छुट्टी लेकर आने को लिखा था ताकि मागे पर्व बाद उसका 'बपला' (शादी) सम्पन्न हो सके। उन्होंने लिखा था कि उसे छुट्टी मिलने पर ही मानकी से बपागे (छेका) आदि की बात वह करेंगे।

अब बुधराम के सामने कम से कम 15 दिनों का अवकाश लेने की समस्या थी। अभी उसकी नौकरी के लगभग एक वर्ष ही हुए थे। उसे आर्मी में छुट्टी संबंधी नियम की जानकारी नहीं थी। फिर भी उसने इस संबंध में मेम साहब से बात करने क मन बनाया ताकि कर्नल साहब से छुट्टी दिलाने में वह उसकी पैरवी करेगी।

एक दिन वह कर्नल सिंह के बच्चे को झूला झुला रहा था। कुछ देर पहले बागान की सफाई का काम पूरा किया था। उस समय कर्नल साहब की पत्नी वहाँ धूप में बैठकर अपने बेटे के लिए स्वेटर बुन रही थीं। उन्होंने बुधराम से पूछा–'तुम्हारी माँ तो घर में अकेली रहती हैं। उन्हें गृहस्थी के काम–धाम में कौन मदद करता होगा?

बुधराम–हाँ मेम साहब, मैं घर का अकेला लड़का हूँ। माँ को घर–गृहस्थी का काम स्वयं करना पड़ता है। खेती–बारी देखने के लिए एक गुपिकोड़ा (चरवाहा) लड़का है। हमारे एक मामा हैं, जो शिक्षक हैं। वे ही कभी–कभी आकर माँ को कुछ मदद करते हैं।

मेम साहब– तब तो तुम्हारी बूढ़ी माँ को काफी दिक्कतें होती होंगी। ऐसी हालत में यदि तुम्हारी शादी हो जाती तो उन्हें अपनी बहु का सहारा मिल जाता। क्या तुम्हारी शादी के सम्बन्ध में किसी से बातचीत हुई है?

बुधराम –मेमसाब, मेरी शादी की बात बगल के गाँव के मानकी की बेटी के लिए चल रही है। हमारे मामा गुरूचरण सिंगराय मानकी से इस संबंध में मिल चुके हैं। उम्मीद है, फरवरी में हमारा सबसे बड़ा पर्व मागे का आयोजन होने वाला है। अगर हमें छुट्टी मिल जायेगी तो मागे पर्व के तुरत बाद मेरी शादी सम्पन्न हो जायेगी। मैंने लड़की को देखकर पसन्द कर ली है।

मिसेज सिंह– यह तो बहुत खुशी की बात है कि तुम्हारी शादी पक्की हो चुकी है। अच्छा शादी के लिए कितने दिनों की छुट्टी चाहिए?

बुधराम–पन्द्रह दिनों की छुट्टी मिलने पर मागे पर्व मनाने के साथ–साथ मेरी शादी भी सम्पन्न हो जायेगी।

मिसेज सिंह–अच्छा, तुम छुट्टी का दरखास्त लिखकर कर्नल साहब को

दस दिन पहले दोगे। मैं भी उनसे इस संबंध में बातें करूँगी।

मिसेज सिंह की बात से बुधराम को खुशी हुई। अब उसे उम्मीद थी कि मैडम की पैरबी से उसे बपला के लिए 15 दिनों की छुट्टी मिल जायेगी।

फरवरी के प्रथम सप्ताह में वह कार्यालय जाकर प्रशिक्षण देनेवाले अपने हवलदार सुखदेव से मिला और अपने गाँव में आयोजित होने वाले वार्षिक मागे पर्व में सामिल होने और उसके बाद अपनी प्रस्तावित शादी के संबंध में बताया। उसने उन्हें बताया कि इन दोनों आयोजनों के लिए उसे 15 दिनों का अवकास लेना होगा।

उसने उनसे एक आवेदन पत्र लिखने को कहा। उसने बताया कि उसे 20 फरवरी से 6 मार्च तक 15 दिनों की छुट्टी चाहिए।

हवलदार ने उससे आवेदन पत्र लिखवा दिया और उससे हस्ताक्षर कराकर कार्यालय में दे दिया।

दूसरे दिन कर्नल सिंह ने बुधराम को अपने चैम्बर में बुलवाया। उसने चैम्बर में जाकर कर्नल सिंह को सैल्युट किया। कर्नल सिंह ने पूछा–बुधराम, क्या तुम्हारी शादी ठीक हो गयी है?

बुधराम –जी सर! मेरे मामा बगल के गाँव के सिंगराय मानकी की बड़ी लड़की गुरबारी पुरती से शादी की बातचीत कर चुके हैं। मानकी ने भी शादी के लिए अपनी सहमति दे दी है। हमारे गाँव में 22 फरवरी को मागे परब आयोजित हो रहा है, जिसमें मुझे सामिल होना जरूरी है। पर्व के बाद ही शादी की रश्में शुरू होगी। हम लोगों के समाज में लड़के वाले कन्या के परिवार को पहले गोनोङ (वधुमूल्य) देते हैं और उसके बाद आंदि (शादी) सम्पन्न होती है।

कर्नल –ठीक है। हमारी मिसेज ने भी बताया था कि तुम्हारी शादी होने वाली है। तुम्हें 15 दिनों की छुट्टी मिल जायेगी। छुट्टी के खत्म होते ही तुम अपनी ड्यूटी पर आ जाओगे।

बुधराम–जी सर, आपके आदेश का पालन करूँगा।

बुधराम कर्नल सिंह को सैल्यूट कर चैम्बर से बाहर निकला तो उसका चेहरा खुशी से चमक रहा था। अब उसे विश्वास हो गया कि वह यथा समय अपनी प्रेमिका गुरबारी को अपने येरा (पत्नी) बनाकर अपने घर ले आयेगा।

बुधराम ने अपनी माँ और मामा को पत्र भेजकर सूचित कर दिया कि उसे 20 फरवरी से 6 मार्च तक के लिये छुट्टी मंजूर हो गई है। अतः मामा मानकी से मिलकर बपला संबंधी तिथि और शुभ दिन तय कर लेंगे। वह 20 फरवरी को ही गाँव पहुँच जायेगा।

इस बीच पत्र पाकर बुधराम के मामा उसकी माँ से मिलकर मानकी से मिलने चले गए थे। बुधराम को छुट्टी मिलने के समाचार से मानकी काफी खुश हुए क्योंकि उन्हें लग रहा था कि अभी बुधराम की नई नौकरी है और शायद इतनी जल्द छुट्टी मंजूर न हो।

गुरबारी को जब बुधराम के 20 फरवरी को आने की सूचना मिली तो उसकी खुशी का ठिकाना नहीं था। उसकी माँ भी खुश थी कि उसकी प्यारी बेटी एक फौजी की येरा (पत्नी) बन जायेगी।

गुरूचरण मानकी से मिलकर गुरबारी के लिए बपागे (छेका) का दिन 24 फरवरी (गुरूवार) निर्धारित कर दिये थे। यह भी तय हो गया था कि आंदि (शादी) की सभी रश्में बुधराम के घर में 26 फरवरी को सम्पन्न होगी।

गुरूचरण ने मानकी को आश्वस्त किया था कि छेका के दिन ही गोनोङ भी चुकता कर दिया जायेगा।

इसके बाद गुरूचरण बपागे (छेका) के अवसर पर कन्या को देने के लिये साड़ी, जाकेट, साया, पोला(अंगूठी) आदि खरीदने में लग गए थे। इसके लिए बुधराम की माँ ने उन्हों यथेष्ट राशि दे दी थी।

मानकी भी अपने होने वाले अरातडि (दामाद) के लिए अंगवस्त्र तथा गुरबारी के लिए साड़ी आदि तथा कुछ गहना का क्रय करने में लग गए थे। उन्होंने अपनी होने वाली बालायेरा (समधिन) तथा अन्य निकट संबंधियों के लिये कपड़ा आदि ले लिये थे।

गुरूचरण ने अपनी दीदी से कहा कि 20 फरवरी को बुधराम आ रहा है। उसके आने के बाद 'गोनोङ' की व्यवस्था की जायेगी। उन्होंने बताया कि गोनोङ के रूप में नगद राशि के साथ–साथ मेरोम आदि भी दिया जायेगा। मानकी ने गुन्डी उरि(गाय) या हड़ा (बैल) के लिये मना कर दिया है। नगद देने की राशि बुधराम स्वयं तय करेगा।

बुधराम 20 फरवरी को गाँव आ गया था। उसके मामा घर पर ही थे। गाँव के मुंडा तथा उसके कई साथी साम को उससे मिलने आये थे। बुधराम को देखकर सभी खुश थे। अब वह एक तगड़ा फौजी जवान बन गया था।

बपागे (छेका) के दिन बुधराम ने अपने मामा को पाँच हजार रूपये छेका आदि के लिये दे दिया था।

छेका के दिन बुधराम के मामा–मामी, अन्य रिस्तेदार, गाँव के मुण्डा, डकुआ आदि मानकी के गाँव पहुँच गए थे। साथ में गोनोङ का सामान आदि भी गुरूचरण लेते गए थे।

मानकी ने सभी कुपुल (मेहमानों) का स्वागत काफी उत्साह से किया।

गुरबारी ने सभी मेहमानों को हाथ जोड़कर जोहार किया। सभी को लोटा–पानी से स्वागत कर बैठाया गया।

मानकी के भी कई रिस्तेदार आये थे। गाँव का मुण्डा, दिउरि, तथा अन्य लोग उपस्थित थे। सभी की उपस्थिति में बपागे (छेका) का रश्म पूरा किया गया और गुरबारी भी सज–धज कर बैठी थी। गुरूचरण की पत्नी ने गुरबारी को उपहार के वस्त्रादि दिए। छेका के बाद गुरबारी ने सभी के पैर छूकर आशीर्वाद लिया।

छेका के बाद गुरूचरण ने मानकी को गोनोङ संबंधी नगद राशि आदि अर्पित किये, जिसे मानकी ने प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार किया।

इसके बाद सभी मेहमानों और गाँव तथा बाहर के सभी संबंधियों को बपागे के शुभ अवसर पर मेरोम जिलु(खस्सी का मांस) मंडि (भात) दालि (दाल), उतु (तरकारी) आदि परोसा गया। इसके पूर्व सभी को थोड़ा–थोड़ा डियंग भी दिया गया। इस प्रकार बड़े आनन्द के साथ प्रीतिभोज सम्पन्न हुआ। संध्या समय गुरूचरण आदि गाँव लौट गए।

प्रीतिभोज के बाद गुरूचरण मानकी से मिलकर यह तय किया कि आंदि (शादी) की शेष रश्में बुधराम के घर पर पूर्व निर्धारित तिथि 26 फरवरी को बुधराम के गाँव से एक मोटर गाड़ी की व्यवस्था कर आयेंगे। आप सभी गुरबारी को लेकर बुधराम के गाँव बाजा–गाजा के साथ आ जायेंगे। गाँव के दिउरी द्वारा शादी धार्मिक रीति के साथ सम्पन्न की जायेगी। वहाँ शादी का मंडप सजघर कर तैयार रहेगा और आप लोगों के ठहरने के लिए जनवासा की भी व्यवस्था की जायेगी। मानकी ने भी गुरूचरण से प्रसन्न होकर कहा था–एसु बुगिन जगर सोमोदि (आपका प्रस्ताव काफी अच्छा है)।

इस प्रकार पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार मानकी के घर पर एक मिनी बस आ गई थी। मानकी ने भी एक जीप की व्यवस्थ कर दी थी। बारात के साथ दो चाटु(घड़ा) डियंग और एक मेरोम (खस्सी) और दो सांड़िसिम (मुर्गा) भी वे लेते आये थे। बारात निकलने के पहले गुरबारी द्वारा 'उलि साखी' (आम के वृक्षों में पीला सूता बांधने) की रश्म पूरी की गई। यह देशाउलि बोंगा और बीरबोंगा की पूजा बिघ्न–बाधा दूर करने के लिए सम्पन्न करने के लिए एक महत्त्वपूर्ण धार्मिक अनुष्ठान है।

बुधराम के घर पर भी सरई के डाल से मंडप तैयार किया गया था। उसे सजाकर जमीन की लिपाई कर बेदी बनाई गई थी। बारात में काफी लोग आने वाले थे, इसलिए दो खस्सी का माँस तैयार किया गया था और पाँच चाटू(घड़ा) डियंग भी बना कर रखा गया था। दिउरि द्वारा मंडप में

'गेलबोरोम' का प्रतीक भी पूजा के लिए बेदी के पास बनाया गया था ताकि शादी में कोई बाधा–बिघ्न उपस्थित न हो।

सिंगराय मानकी दो गाड़ियों में बारात के साथ डिंडाकुइ गुरबारी पुरती को अंगवस्त्र और आभूषण से सजा कर संध्या समय बुधराम के गाँव आ गए थे। कुछ दूर पर बारातियों के ठहरने के लिए जनवासा तैयार किया गया था। वहाँ गाड़ियों से उतरकर नगाड़ा–मान्दर आदि गाजा–बाजा के साथ बुधराम के घर आने की तैयारी होने लगी। बुधराम के मामा गाँव के मुण्डा तथा अन्य रिस्तेदार मानकी तथा अन्य बारातियों के स्वागत के लिए जनवासा पहुँचे। थोड़ी देर में गुरबारी को जीप से लाकर बुधराम के घर में मंडप में बैठाया गया।

दिउरी द्वारा शादी की रश्में मंत्र पाठ से शुरू की गई। काफी देर तक 'आंदि' के लिए प्रचलित विधि–विधान से वर–कन्या को बेदी पर बैठा कर विभिन्न बोंगा (देवता) एवं एरा (देवी) के आवाहन का मंत्र पाठ दिउरी द्वारा किया जा रहा था। पूजा विधान को सम्पन्न करने के बाद सिन्दुरी रकब (सिन्दुर दान) के निमित बुधराम द्वारा गुरबारी को सिन्दुर अर्पित किया गया। इस प्रकार बपला पूरे विधि–विधान के साथ सम्पन्न हुआ।

सोमोदि (समधी) सिंगराय मानकी, उनके अन्य संबंधी, उनके साथ आये उनके पीड़ के कई मुडा आदि को लोटा–पानी से सत्कार कर सभी को आंदि के प्रीतिभोज के लिए बैठाया गया। सभी मेरोम जिलु, मंडी आदि सुस्वादु भोजन से काफी सन्तुष्ट दिखे। डियंग भी खूब चला। इस प्रकार सेपेड बुधराम और डिंडाकुइ गुरबारी का आदर्श विवाह आनन्द पूर्वक सम्पन्न हो गया। अब गुरबारी पुरती श्रीमती गुरबारी सोय बनकर बुधराम के घर की बहु के रूप में प्रतिष्ठित हो गई थी। इस प्रकार 'गोनोङ' आदि की घिसी–पिटी परम्परा से हटकर बड़े ही उल्लास के साथ यह शादी सम्पन्न हुई और दोनों प्रेमी–प्रेमिका जीवन भर के लिए परिणय सूत्र में आबद्ध हो गए थे। बुधराम की माँ सबसे अधिक खुश थी क्योंकि उन्हें मनपसन्द बहु मिल गई थी।

शादी के तिसरे दिन 'हेरा नम' (कन्या की मायके के लिये विदाई) रश्म के तहत गुरबारी को लेने मानकी आ गए थे। उनका स्वागत–सत्कार कर गुरबारी की विदाई सम्पन्न हुई। दो दिनों बाद बुधराम अपने ससुराल जाकर गुरबारी को विदाई कराकर ले आया।

बुधराम के घर में गुरबारी को बहु के रूप में 'जोम इसिन' अथवा रसोईघर में प्रथम प्रवेश कराया गया। गुरबारी द्वारा पकाये गए मंडी, उतु, जिलु(सियजिलु) आदि का थोड़ा–थोड़ा अंश लेकर 'आदिंग या अडिगं'

(पूर्वज पूजा स्थल) में पूर्वजों के नाम पर अर्पित किया गया। साथ ही तिल डियंग के तहत थोड़ा डियंग भी अर्पित किया गया। इस अनुष्ठान के पश्चात् गुरबारी बुधराम के गोत्र में पूर्ण रूप से सम्मिलित हो गई।

बुधराम के मामा–मामी तथा अन्य रिस्तेदार इस आदर्श शादी से काफी प्रसन्न थे। उन्हें दोहरी खुशी मिली थी क्योंकि उनका भगिना फौजी बन गया था तथा उसे एक सुन्दर, सुशील और गुहस्थी संभालने वाली पत्नी मिल गई थी। बुधराम की माँ भी एक अच्छी बहु पाकर काफी खुश और सन्तुष्ट थी।

बुधराम को अपने संक्षिप्त छुट्टी की अवधि में गुरबारी के साथ कुछ ही दिन प्रेम पूर्वक बिताने का अवसर मिला। उसका मन कुछ दिन और रूकने का हो रहा था। परन्तु कर्नल सिंह ने उसे छुट्टी समाप्त होते ही ड्यूटी पर वापस लौट जाने का आदेश दिया था।

अन्ततः बुधराम का सबसे विदा होने का दिन आ गया था। उसके दोस्त भी उससे मिलकर विदा करने आ गए थे। वह जाने के पहले गुरबारी से एकान्त में मिलकर उसे प्यार से आस्वस्त किया था। गुरबारी की आँखों में आंसू आ गए थे। उसे इतनी जल्द जुदाई से काफी दुःख हो रहा था। परन्तु उसे अपने पति की नौकरी के महत्त्व का भी ज्ञान था। बुधराम ने अपनी माँ के साथ–साथ मामा–मामी आदि सभी को जोहार कर अपने एक दोस्त के साथ फौजी वेश–भूषा में विदा हो गया। दूर तक गुरबारी और उसकी माँ देखकर विदाई के उस दृश्य को देखती रही थी।

(4)

बुधराम की शादी कराकर गुरूचरण हसदा सपरिवार घर लौट गए थे। एक दिन बाद वे अपने विद्यालय में योगदान देकर अध्यापन का कार्य प्रारम्भ कर दिये थे। बुधराम की शादी को लेकर उन्हें काफी दिन अवकाश में रहना पड़ा था। वे लगातार अपने छात्रों का गणित का कोर्स पूरा कराने के लिए कई अतिरिक्त समय देकर क्लास ले रहे थे। अब छमाही परीक्षा के बाद गर्मी की छुट्टी जून माह में होने वाली थी। प्रधानाध्यापक ने भी उन्हें कोर्स पूरा करा देने का निर्देश दिया था।

मई के अन्तिम सप्ताह में अर्द्ध वार्षिक परीक्षा शुरू हो गई और जून के दूसरे सप्ताह में ग्रीष्मावकाश होने वाला था।

परीक्षा समाप्त होने के बाद गर्मी की छुट्टी में वे गाँव चले गए थे। एक सप्ताह बाद उन्हें सूचना मिली कि जोजोहातु के मुंडाटोला में उनकी हतोम हान (फुफेरी बहन) की हत्या कर दी गई है। खबर मिलने के दूसरे दिन फुफेरी बहन सूरजमनि सुन्डी के गाँव के लिए चल दिये थे। उनके फूफा अर्जुन सुन्डी का पहले ही एक दुर्घटना में मौत हो चुकी थी और उनका लड़का सोना राम सुन्डी गुजरात में एक कम्पनी में काम करता था। उनकी एकमात्र बेटी मानी कुई (डिंडाकुई) अपनी माँ के साथ गाँव में रहती थी। उनके गाँव पहुँचने पर मालूम हुआ कि गाँव का डोबरो सुन्डी नाम का सेपेड (युवक) द्वारा मानी की हत्या उसे डइया (डायन) बताकर कर दी गई है। गाँव पहुँचने पर मानी का मृत शरीर चाईबासा से दो दिन बाद पोस्टमार्टम करा कर पुलिस द्वारा उनके घर पहुँचा दिया गया था। उसके जंग तोपा (कब्र में गाड़ने) की तैयारी हो रही थी।

गुरूचरण अपनी पत्नी के साथ गया था। उसकी फुफेरी बहन मानी का नाम लेकर रो रही थी। गाँव की महिलाएँ काफी संख्या में जुटी हुई थीं। सभी मानी की माँ को सान्त्वना दे रही थी। लगभग 4 बजे जंगतोपा का काम पूरा हो गया था और सभी लोग नदी में स्नान कर वापस आ गए थे। मानी के भाई को तार देकर सूचित कर दिया गया था। परन्तु वह अभी तक आया नहीं था।

गुरूचरण को गाँव के मुण्डा ने बताया कि डोबरो सुन्डी ने ही एक दोपहर में जब मानी घर में अकेले सोई थी तभी टांगी से गर्दन काटकर उसकी हत्या कर दी थी। मुण्डा ने यह भी बताया कि वह मानी से मन ही मन प्यार करता था और उसके घर बराबर आता–जाता था। परन्तु दोनों सुन्डी गोत्र के थे। इस कारण वह उससे खुलकर अपना प्यार नहीं जताता था। वह जानता था कि वह मानी से शादी नहीं कर सकता था। परन्तु डोबरो के अवचेतन मन में उसके प्रति प्यार का भाव काफी गहराई से पैठ गया था। इस कारण डोबरो उसे भुला नहीं पाता था।

डोबरो ने अपने अन्तर्मन की बात अपने सहिया रामलाल होनहागा को बताई थी। उसने बताया कि जब वह रात में सोता है तो मानी कुइ सपने में आकर उससे लिपट जाती है और वह घबरा कर उठ जाता है। डोबरो ने बताया था कि एक दिन वह मानी कुइ से मिलकर उसे रात वाली घटना बताकर मना किया था कि तुम रात में मुझे मत जगाया करो नहीं तो अच्छा नहीं होगा।

मानी कुइ ने हँसते हुए कहा था –तुम क्या चकड्(मजाक) करता है। मैं तो अपने घर में माँ के साथ सोती हूँ। भला मैं क्यों तुम्हें जगाने लगी या तुम्हारे पास आने लगी।

डोबरो ने रामलाल को बताया था कि वह जब लगातार मानी का सपना देखने लगा तो अपने घर से निकल कर रामलाल के बरामदे में सोने लगा। परन्तु वहाँ भी मानी कुई सपने में आकर जगा देती।

उसने गाँव के देवा (ओझा) से इसकी चर्चा की। ओझा ने बताया कि हो सकता है कि मानी कुइ कुछ जादू–टोना जानती हो। तुम उसे डरा–धमका कर चेतावनी दे दो। अगर फिर भी वह तुम्हारे सपने में आती है तो मैं कुछ उपाय करूँगा।

परन्तु डोबरो इस बात को किसी को बताना नहीं चाहता था।

एक दिन वह बगीचा में उलि (आम) तोड़ने गया था। वहाँ मानी भी आम तोड़ रही थी। उसने मानी से कहा –"देखो मानी, तुम अपना जादू–मंतर से मुझे रात मे तंग मत करो। मैं पहले भी तुम्हें चेतावनी दे चुका हूँ। अगर आज के बाद भी तुम रात में आकर मुझे डिस्टर्ब करोगी तो उसका अंजाम बुरा होगा।"

मानी बोली– "तुम क्या फालतू बात बोलता है। अब न तुम मेरे घर आते हो और न मैं तुम्हारे घर जाती हूँ। तुमसे मेरा दादा (भाई) का संबंध है। फिर तुम इस तरह की गन्दी बात क्यों करता है।"

डोबरो–"खैर मैने तुम्हें आखिरी बार चेतावनी दे रहा हूँ।" ऐसा कहकर डोबरो वहाँ से चल दिया।

उसके बाद भी अक्सर सोने पर वह मानी का सपना देखता और उसकी नींद खुल जाती। अब उसे विश्वास हो गया कि वह जरूर ही उस पर जादू–टोना कर परेशान कर रही है। वह जरूर ही डइया विद्या जानती है। डोबरो का स्वास्थ्य भी गिरता जा रहा था। उसकी माँ उससे इसका कारण जानना चाहती थी। परन्तु वह किसी को कुछ भी शर्म के कारण बताना नहीं चाहता था।

एक दिन दोपहर में उसने थोड़ा अधिक डियंग पीकर मानी को अपने रास्ते से हटाने का निश्चय किया। गर्मी काफी थी और सभी लोग अपने घरों में सो रहे थे। उसने मानी के घर के पास जाकर देखा तो वहाँ कोई नहीं था। मानी के घर का दरवाजा खुला हुआ था। उसने देखा कि मानी कमरे में खजूर की चटाई पर बेसूध सोई हुई है। उसकी माँ शायद घर में नहीं है।

वह वापस लौट कर घर गया। गमछा से अपना सिर और मुँह को बाँध लिया ताकि उसे देखकर कोई पहचाने नहीं। उसने घर में पड़ी टाँगी लिया और मानी के घर की ओर चल दिया। उसने देखा कि मानी बेसुध सोई हुई है। उसके पास जाकर अपने भारी–भरकम टाँगी (कुल्हाड़ी) से उसकी गर्दन पर वार कर दिया। उसकी गर्दन आधी कट गई थी। उसने दुबारा प्रहार कर उसकी गर्दन पूरी तरह से काटकर धड़ से अलग कर दिया। खूनी से पूरी चटाई लाल हो गई।

डोबरो बगल के तालाब में जाकर टाँगी और हाथ–पैर में लगे खुन को धोआ। गंजी में भी खून लग गया था उसे उतार कर धो लिया और घर चला गया।

थोड़ी देर में उसपर से डियंग की नशा उतर गई। अब उसे लगा कि उसने बड़ा अपराध किया है। परन्तु उसने सोचा कि मैंने तो एक डइया को मार डाला है। गाँव वाले भी उसका पक्ष लेंगे। फिर भी उसके मन में आया कि मुंडा काका को इसकी जानकारी दे देना ठीक रहेगा।

उसने घर में टाँगी छिपा के रख दी और दूसरा कमीज पहनकर वह अर्जुन मुण्डा के घर चला गया। मुंडा घर पर ही था। उसने बताया कि मानी कुइ डइया हो गई थी और कई महीना से हमपर अपना जादू कर सोने नहीं दे रही थी। उसने आज उसे मार डाला।

यह समाचार सुनकर मुण्डा भी घबरा गया। उसने डोबरो से पूछा–"तुमने उसकी हत्या क्यों कर दी। यदि वह डइया थी तो उसका

फैसला पंचायत में होता। तुमने बहुत बड़ा अपराध किया है।''

मुण्डा अपने डकुआ और दो–चार लोगों के साथ डोबरो को लेकर मानी के घर गया। वहाँ मानी कुई का क्षत–विक्षत मृत शरीर पड़ा था और चारो तरफ खून फैलकर सूख गया था। मानी की माँ घर पर नहीं थी। मुण्डा ने डकुआ को उसे खोज कर लाने को भेज दिया।

मुण्डा ने डोबरो से पूछा–''तुम किस हथियार से उसे मारे हो?''

डोबरो–टाँगी से काटकर मार दिया।

मुण्डा – टाँगी कहाँ है?

डोबरो –घर में छिपा कर रख दिया है।

मुण्डा ने डकुआ को डोबरो के साथ जाकर टाँगी लाने को कहा। साथ ही, उसकी माँ को भी बुला लाने को कहा।

थोड़ी देर में मानी की माँ आ गई थी। वह मानी को मृत देखकर रोने लगी। गाँव के कई लोग और महिलाएँ इकट्ठा हो गई थीं। पूरे गाँव में यह बात फैल गई थी।

मानी के कुछ रिस्तेदार डोबरो को पकड़ कर मारने–पीटने लगे थे। परन्तु मुण्डा ने उन्हें मना कर दिया। मुण्डा के आदेश से डकुआ ने डोबरो के दोनों हाथ पीछेकर रस्सी से बाँध दिया।

गाँव के कुछ लोगों को बुलाकर मानी के मृत शरीर को एक खाट पर रख कर चादर से ढंक दिया गया। मुण्डा, मानी की माँ के साथ कुछ युवक खाट को लेकर डोबरो को अपराधी की तरह बाँध कर थाना की ओर चल पड़े।

थाना जाकर डोबरो ने कबूल किया कि मानी उस पर जादू–टोना करती थी इसलिए उसने उसे मार दिया। थाना में उस टाँगी को जब्त कर लिया गया जिससे मानी की हत्या की गई थी। दरोगा ने मुण्डा के बयान पर केश दर्ज कर लिया और डोबरो को हाजत में बन्द कर दिया। मानी के मृत शरीर को पोस्टमार्टम के लिये अस्पताल भेज दिया गया। रात हो जाने के कारण पोस्टमार्टम नहीं हो सका। मुण्डा, मानी की माँ और डकुआ चाईबासा में ही रूक गए। बाकी लोग गाँव लौट गए थे।

जिस दिन गुरूचरण अपनी फुफेरी बहन के घर पहुँचे थे, उसी दिन सुबह में पोस्टमार्टम के बाद मानी का मृत शरीर पुलिस जीप से उसके घर पहुँचा था।

इस पूरी घटना से गुरूचरण और मानी की माँ काफी दुखी और हतप्रभ थे। मानी की माँ डोबरो को काफी मानती थी। उसे विश्वास नहीं हो रहा था

कि डोबरो मेरी बेटी को डइया कहकर कैसे मार दिया।

इस प्रकार डोबरो के अन्धविश्वास और मनोवैज्ञानिक कारणों से डिंडाकुइ मानी की हत्या हो गई थी। जंगतोपा आदि के बाद गुरूचरण वहाँ दो दिन रूका था। इस बीच मानी का भाई मनोज सुन्डी भी आ गया था।

बाद में इस घटना की जानकारी समाचार पत्रों में भी छपी थी जिसमें निर्दोष मानी कुई की जघन्य हत्या की भर्त्सना की गई थी। इस प्रकार एक निर्दोष डिंडा कुइ मानी डइया बताकर मार दी गई थी।

(5)

सिंगराय मानकी का तेयंग (बहनोई) लंकेश्वर गगराई टोंटो प्रखंड के एक गाँव में रहता था। उसका लड़का मंगल गगराई शिक्षक नियुक्ति के लिए परीक्षा दे दिया था। उसकी बड़ी बहन की शादी नावामुंडी में कई वर्ष पूर्व हो चुकी थी। काफी पहले से मंगल दूसरे गाँव की लड़की से प्यार करता था जिसका नाम सोनामुनि कोड़ा था। उसने सोना को वचन दिया था कि वह अपना आंदि (विवाह) हर हालत में उसके साथ करेगा। वह अभी अपनी शिक्षक नियुक्ति के रिजल्ट की प्रतीक्षा कर रहा था।

उसे मालूम था कि उसके पिता का संबंध सोना के पिता रघुनाथ कोड़ा से अच्छा नहीं था। किसी बात को लेकर दोनों में अनबन था। रघुनाथ कोड़ा अपने गाँव का मुंडा भी था और लंकेश्वर से बड़ा चासी था। मंगल को आंदि तय होने में यह सबसे बड़ी बाधा लग रही थी। हालाँकि सोना की माँ से वह कई बार मिल चुका था और उसे वह मानती भी थी। उसे मालूम था कि वह सोना का अच्छा दोस्त है। परन्तु रघुनाथ शायद उसे अपना अरातडि (दामाद) स्वेच्छा से बनाना नहीं चाहेगा। परन्तु मुंडा का लड़का रामलाल मंगल का दोस्त था। दोनों झींकपानी में एक साथ पढ़े थे। उसे उम्मीद थी कि रामलाल इस बपला (विवाह) में अवश्य मदद करेगा।

मंगल और सोना टोंटो तथा झींकपानी हाट में अक्सर मिला करते थे। मंगल उसके साथ काफी देर तक प्यार भरी बातें करता। कभी–कभी वह रामलाल के साथ हाट में डियंग पीने भी बैठ जाता। रामलाल को मंगल और सोना के संबंध पर कोई एतराज नहीं था। वह जानता था कि मंगल हर तरह से एक अच्छा स्वभाव, चरित्र के साथ–साथ बुद्धिमान युवक है। उसे विश्वास था कि शिक्षक की नियुक्ति में वह जरूर सफल होगा।

मंगल की माँ चाहती थी कि बपला के संबंध में लंकेश्वर किसी अगुआ को बातचीत करने के लिए भेजे। परन्तु वह भी अपनी पत्नी के प्रस्ताव को टाल देता था। वह बोलता–'तुम जानती हो कि रामलाल किसी भी हालत में सोना को हमारे घर की बहु बनाना नहीं चाहेगा। इसलिये मैं भी उसकी बेटी को अपनी किमिन (बहु) बनाना नहीं चाहूँगा। हो सकता है कि मुंडा इतना

अधिक गोनोंड(बधुमूल्य) माँग दे कि मैं उसे पूरा नहीं कर सकूँ।' इस प्रकार अपने हेरेल (पति) के नकारात्मक रवैया से मंगल की माँ एतवारी भी दुखी रहती थी।

अन्ततः मंगल की बहाली सरकारी प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक में हो गई और उसे मंझारी प्रखंड के एक विद्यालय में पोस्टिंग भी हो गई। वह अपने सभी प्रमाणपत्रों की जाँच कराकर नियुक्ति पत्र लेकर अपने विद्यालय में योगदान दे दिया। लगभग एक सप्ताह बाद वह छुट्टी के दिन अपने गाँव आया। उसके परिवार के साथ–साथ गाँव का मानकी तथा उसके सभी सगे संबंधी काफी खुश थे।

जब सोना को यह समाचार मिला तो वह बहुत खुश हुई। वह मंगल से मिलकर उसे बधाई देना चाहती थी। परन्तु वह उससे हाट में ही मिल सकती थी। अगले हाट में उसकी मुलाकात मंगल से हो गई। दोनों हाथ मिलाकर एक दूसरे का प्रेम भरा जोहार किये।

सोना–'चलों, आज मुँह मीठा कराओ। अब तो तुम सरकारी मास्टर बन गए। तुम्हारी नौकरी का समाचार से हमारी एंगा (माँ) भी बहुत खुश हुई।

मंगल–'मगर तुम्हारे बबा (पिता) तो उतने खुश नहीं होंगे। मेरे बबा से पता नहीं वे क्यों इतना नाराज रहते हैं।'

सोना–'अब सब ठीक हो जायेगा। अगर पिता तुम्हारे साथ आंदि के लिए नहीं भी तैयार होंगे तो मेरी माँ कोई समाधान निकाल लेगी।'

मंगल – 'मेरे पिता भी तो उतने ही जिद्दी हैं। अगर तुम्हारे पिता नहीं तैयार होंगे तो वे भी अड़ जायेंगे और बपला की बात नहीं बढ़ पायेगी।'

सोना – 'एक बार अपनी माँ से कहो कि वे तुम्हारे पिता को शादी के लिए राजी करें और बातचीत के लिए मेरे घर अगुआ भेजें।'

दोनों काफी देर तक बात करते रहे। अन्त में सोना ने कहा कि यदि सादोर बपला या राजी–खुशी से शादी के लिए दोनों के पिता तैयार नहीं हुए तो क्या किया जायेगा?

सोना– 'तब तो बगेया इचि केपेया आंदि (भगाकर प्रेम विवाह) करने के लिए तुम्हें तैयर रहना होगा।'

मंगल–'देखो सोना, मैं अब सरकारी नौकरी में हूँ। समाज भले केपेया आंदि या भगाकर शादी मान ले। परन्तु तुम्हारे पिता यदि इसकी शिकायत शिक्षा विभाग में कर देंगे तो मेरी नौकरी जा सकती है। तुम्हारे पिता गाँव के मुंडा हैं। वे पंचायत बुलाकर भी हमें और पिता को दंड दिलवा सकते हैं।'

सोना–'ठीक है। अब मैं ही माँ से मिलकर विचार करूँगी कि आगे क्या

किया जाय। परन्तु अब निश्चित समझ लो कि तुम्हें हर हाल में अपना हाम–हेरेल (पति) बनाकर ही रहूँगी।'

इससे मंगल को कुछ हिम्मत हुआ और आशा बंधी कि सोना का प्यार उसे येरा (पत्नी) के रूप में अवश्य मिल जायेगा।

इस खुशी में दोनों थोड़ा–थोड़ा चकणा के साथ डियंग भी पी लिये। दोनों अगले हाट में मिलने का वादा कर एक दूसरे से विदा हुए।

एक दिन सोना की माँ ने अपने पति से अकेले में बैठकर सोना के बपला के संबंध में बात शुरू की। उसने कहा– 'देखो, अब मंगल सरकारी शिक्षक हो गया है। वह सोना के लिए हर तरह से योग्य है। उसका स्वभाव भी अच्छा है और काफी स्वस्थ सेपेड (युवक) है। तुम उसके पिता के साथ पूर्व में हुए विवाद को भूल जाओ और यदि मंगल के घर से कोई अगुआ आता है तो बपला की बात को आगे बढ़ाओ।'

सोना से शादी के लिए मंगल भी अपनी माँ को मनाने में लगा था ताकि वह उसके पिता को राजी कर सके। सोना को भी पूरा विश्वास था कि माँ उसके पिता को मना लेगी। सोना की माँ उसके पिता को मनाने में लगी थी। उसे खुशी थी कि मंगल अब सरकारी महटर (मास्टर –शिक्षक) हो गया है और वह सोना के लिये योग्य हेरेल (पति) होगा। परन्तु मुंडा (सोना का पिता) अपनी पत्नी की बात को टाल देता और अभी थोड़ा इन्तजार करने को कह देता।

इसी बीच माघे पर्व आ गया था। चारों तरफ माघे पर्व की धूम मची थी। सभी गाँवों में इस पाँच दिवसीय पर्व की तिथि दिउरी (पुजारी) और गाँव के मुंडा/मानकी द्वारा पूर्व से ही निर्धारित की गई थी। इस पर्व में रिस्तेदार भी मेहमान बनकर अपने रिस्तेदारों के घर जाना शुरू कर दिये थे। सोना का भाई भी अपने दोस्त मंगल को माघे पर्व में आमंत्रित किया था। माघे के मरंग पर्व के दिन मंगल भी सोना के घर जाकर माघे दुरंग पर मान्दर बजाकर समूह में नाच रहा था। वह मान्दर बजाने में काफी निपुण था। वह बांसुरी भी बजा लेता था। दो पंक्तियों में महिला–पुरूष नाच रहे थे। काफी देर रात तक सोना भी अपनी सहेलियों के साथ नाचती रही। मंगल के साथ सोना का भाई नगाड़ा बजा रहा था। देर रात में नृत्य समाप्त हुआ और मेरोम जिलु, मांडी आदि से माघे का प्रीतिभोज सम्पन्न हुआ। मंगल दूसरे दिन सुबह में विदा हुआ। जाते समय वह सोना और उसके भाई को अगले मंगलवार को अपने गाँव में सम्पन्न होने वाले माघे पर्व में आने के लिए आमंत्रित कर दिया था। वह सोना के पिता और माँ को भी जोहार कर विदा हुआ था। सोना की माँ

उसे नये सूट–बूट में देखकर काफी खुश थी।

माघे पर्व बीत जाने के बाद भी अगुआ को भेजकर मुण्डा से सोना से शादी की बातचीत करने के लिए मंगल के पिता टालमटोल कर रहे थे। उधर सोना की माँ भी अपने पति को अभी तक इसके लिये राजी नहीं कर सकी थी। वह किसी भी तरह सोना और मंगल की शादी करा देना चाहती थी। सोना के पिता केवल अपने अहम् के चलते इस वैवाहिक संबंध को टाल रहे थे। एक बार सिंगराय मानकी भी हाट में एक पंचायती बैठक में उनसे सोना की शादी के बारे में पूछा था। पर उन्होंने कहा था– 'अभी इस संबंध में वे विचार कर रहे हैं।'

मंगल की माँ के बहुत समझाने पर उसके पिता एक अगुआ को मुंडा से मंगल की शादी के संबंध में बातचीत करने के लिए भेजने के लिए तैयार हुए। इसके लिए अपने एक ममेरे भाई हेमन्त बिरूवा को अगुआ बनाने के लिए तैयार हुए। उनका मुण्डा से पूर्व से ही परिचय था।

हेमन्त एक दिन अपने गाँव से मंगल के घर आये और मंगल के पिता तथा माँ ने उनसे बपला के साथ–साथ गोनोंग के संबंध में भी मुंडा से बात करने का आग्रह किया।

दूसरे दिन वे मुंडा के घर गए। इस संबंध में उन्होंने मुंडा से बातचीत शुरू की। मंगल की शादी सोना के साथ करने के प्रश्न पर उन्होंने बताया कि 'अभी हम अपने घर वालों से राय–सलह करेंगे। अपने तेयंग कोवा (साला) से इस सम्बन्ध में बात करेंगे क्योंकि वे भी अपने रिस्तेदार की एक लड़के के बारे में सोना की शादी हेतु कह रहे थे। इसलिए आप मुझे थोड़ा समय दीजिये तब मैं आपको इस संबंध में बताऊँगा।'

हेमन्त लंकेश्वर एवं उनकी पत्नी को मुंडा की बातों से अवगत करा दिये। इधर मंगल को मालूम हुआ कि सोना के पिता किसी दूसरे लड़के से सोना की शादी कराना चाहते हैं तो उसे दुःख के साथ–साथ चिन्ता भी हुई।

दो दिनों बाद वह हाट में सोना से जाकर मिला। सोना को भी यह जानकर आश्चर्य हुआ कि उसके पिता उसकी शादी मंगल से तय नहीं कर दूसरे लड़के से कराना चाहते हैं। दोनों ने तय किया कि उनकी शादी तय होने में इस तरह की बाधा को दूर करने और अपनी शादी को किसी भी विधि से सम्पन्न कराने का उपाय करना होगा।

सोना ने कहा–'तुम घबराओ नहीं। अब मैं 'ओपोर तिपि' विधि से इस बपला को अंजाम तक पहुँचाऊँगी। तुम अगले रविवार को अपने घर पर मेरा इन्तजार करोगे।'

मंगल–'क्या तुममें इतना हिम्मत है कि अपने पिता की इच्छा के विरुद्ध यह कदम उठाओगी?'

सोना– 'मैं बालिग हापानुम हूँ। मैं तुमसे वर्षों से प्यार करती रही हूँ। मैं किसी दूसरे सेपेड से शादी कभी नहीं करूँगी।

मंगल–'ठीक है, मैं अपनी माँ से तुम्हारे इस संकल्प को बता दूँगा।'

आगामी रविवार को सोना अपनी एक सहेली के घर गई। वहाँ उसकी 6 अन्य सहेलियाँ भी आ गई थीं। सोना अपनी माँ को बता दी थी कि वह अब मंगल के घर जाकर 'ओपोर तिपि' रीति–रिवाज से अपनी आंदि (शादी) सम्पन्न करा कर रहेगी। तदनुसार उसकी सभी सहेलियाँ साबित्री पुरती के घर एकत्रित हुई थीं। उसकी एक सहेली एक नयी टोकरी में 'मडकम' (महुआ) लेकर आ गई थी। सोना एक झोला में अपना पहनने का दो सेट साड़ी आदि रख दी थी। एक नई साड़ी, ब्लाउज तथा एक दो आभूषण (कान और गला का) पहन कर पूरी तरह सजकर सावित्री के घर आ गई थी। सावित्री की माँ भी सोना के इस आयोजन को ठीक मान रही थी।

सोना सभी सहेलियों के साथ खाना खाकर लगभग एक बजे मंगल के घर के लिए चल पड़ी। मडकम की टोकरी सोना अपने सिर पर रखकर चल रही थी। लगभग 2.30 बजे सभी मंगल के घर के पास आम के बगीचे में थोड़ी देर रूक गई। उन्हें लगा कि मंगल के घर के आस–पास कोई नहीं है। सभी सीधे मंगल के घर पहुँग गई। घर का दरवाजा खुला था और मंगल की माँ आंगन में कुछ काम कर रही थी। घर में अन्य कोई दिखलाई नहीं पड़ा। सोना सभी सहेलियों के साथ आंगन में जाकर मंगल की माँ को हाथ जोड़कर 'जोअर' (जोहार) की।

सोना महुआ की टोकरी उनके सामने रखकर पैर छुकर जोहार की। मंगल की माँ समझ गई कि सोना ओपोर तिपि बपला के तहत अपनी सहेलियों के साथ आ गई। मंगल के पिता किसी काम से बाहर गये थे। मंगल घर में ही था।

मंगल की माँ ने सोना एवं उसकी सहेलियों को कमरे में लेजाकर खाट पर बैठाया और लोटा–पानी से उनका स्वागत किया। सभी को थोड़ा बहुत नास्ता कराया। सावित्री ने मंगल की माँ से कहा –'काकी, हमलोग तुम्हारी होनेवाली किमिन (बहु) सोना मुनि को तुम्हें सौंपने के लिए लेकर आई हूँ। हम सभी मंगल और सोना को वर्षों से जानती हूँ, और दोनों में अच्छी दोस्ती के साथ प्रेम संबंध भी है। आशा है, आप सोना जैसी सुन्दर, सुशील, गृहस्थी के काम में निपुण डिंडाकुइ को अवश्य अपना किमिन (बहु)

के रूप में स्वीकार करेंगी।'

मंगल की माँ ने कहा–'ठीक है, मैं मंगल के पिता को समझाऊँगी। उन्हें भी तो सोना को किमिन के लिए अपनी स्वीकृति देनी होगी। मेरा मंगल तो इसके संबंध में पहले ही बहुत कुछ बता चुका है।'

थोड़ी देर में मंगल भी अपने कमरे से बाहर आया। सावित्री आदि उससे मिलकर 'जोहार' की। मंगल 'जोहार' करते हुए कहा– अचा, आपे दुब पे ओन्डों आञा एंगा ते जगार तनापे।' (अच्छा, आपलोग बैठिये और मेरी माँ से बात कीजिए)।' ऐसा कहकर वह बाहर चला गया।

सभी को मंगल की माँ ने बैठाया और कहा कि तुम लोग बैठो। मंगल के बबा अब आते ही होंगे।

सावित्री मंगल की माँ के व्यवहार से काफी खुश थी और उसे विश्वास हो गया कि सोना को वे अपनी बहु बना लेंगी।

उन सभी से मंगल की माँ उनका परिचय आदि पूछ रही थी। लगभग एक घंटा बाद मंगल के पिता भी आ गए। उन्होंने अपनी पत्नी को अलग बुलाकर पूछा– 'इतनी हापानुम कहाँ से आई हैं?'

मंगल की माँ ने बताया कि ये सभी सोना मुनि की सहिया (सहेली) हैं और सोनामुनि को साथ लेकर बपला के लिए आ गई है। तुम सोना के बपला को टालते जा रहे थे, यह इसी का परिणाम है। अब सादोर बपला के जगह 'ओपोर तिपि' आंदि करना पड़ेगा।

लंकेश्वर –'सोना अपने माँ–बाबा की सहमति लेकर आई है?'

मंगल की माँ–'हाँ, उसके माँ–बाप को कोई आपत्ति या विरोध नहीं है। इसलिए तुम्हें भी मान जाना चाहिए।'

लंकेश्वर उस कमरें में गए जहाँ सोना और उसकी सहेलियाँ बैठी थी। सभी ने लंकेश्वर को हाथ जोड़कर 'जोअर' किया। सोना ने उनके पैर छूकर 'जोअर' किया।

सावित्री – 'काका, हमलोग, तुम्हारे होनेवाली किमिन सोना को लेकर आई हूँ। आशा ही नहीं, पूरा विश्वास है कि आप सोना जैसी सुन्दर, सुशील और घर के काम काज में कुशल सोना की आंदि मंगल जी से अवश्य सम्पन्न करा देंगे। आंदि के अवसर पर हम सभी मेहमान बन कर आयेंगी।'

लंकेश्वर–'अच्छा, सोना के माता–पिता तो आपत्ति नहीं करेंगे?'

सावित्री–'नहीं काका, सोना की एंगा तो एकदम तैयार है। आपुंग भी मान जायेंगे।'

इसके बाद कुछ देर वहाँ रूककर सावित्री तथा सभी सहेलियाँ सोना

को छोड़कर चली गई थी।

अब लंकेश्वर को विश्वास हो गया था कि सोना उनकी बहु और मंगल की पत्नी बनने की जिद्द पर अड़कर उनके घर में आ गई है।

कुछ देर में सोना के 'ढुकु' की खबर पाकर पास–पड़ोस की महिलाएं भी आ गई थी। सोना सभी को हाथ जोड़कर 'जोहार' की। सोना के स्वस्थ, सुन्दर, गौर वर्ण और विनम्र स्वभाव से सभी खुश और सन्तुष्ट लगीं।

मंगल की माँ सोना को एक कमरे में ले गई और उसे कुछ निर्देश देकर बाहर चली आई। कुछ देर में गाँव के मुंडा, डकुआ आदि को पता चला कि मंगल के घर में किमिन बनने के लिए एक बहुत सुन्दर 'डिंडाकुइ' मंगल के साथ 'ओपोर तिपि' बपला के लिए आ गई है। उसके पिता रघुनाथ कोड़ा भी अपने गाँव के मुंडा हैं। यह भी उन लोगों को लंकेश्वर से मिलने के बाद पता चला। गाँव के मुंडा ने लंकेश्वर को आश्वस्त किया कि वह रघुनाथ को जानते हैं और इस आंदि के उनको भी राजी कर लिया जायेगा।

दूसरे दिन (सोमवार) मंगल खाना खाकर अपने विद्यालय के लिए रवाना हो गया था। जाते समय उसने सोना से बात की और उसे हिम्मत बंधाया और कहा कि कुछ दिनों में सबकुछ ठीक हो जायेगा। तुम अपने होने वाले होंयर (श्वसुर) और हनर (सास) को अपनी सेवा से सन्तुष्ट रखोगी। मैं अब अगले शनिवार को आ जाऊँगा।

इधर सोना के घर भी यह समाचार रविवार को ही मिल गया था कि सोना अपनी सहेलियों के साथ मंगल के घर चली गई है। सोमवार को सोना के माता–पिता, भाई आदि मंगल के घर आये। लंकेश्वर ने सभी का स्वागत किया और उन्हें आश्वस्त किया कि सोना को अपनी प्यारी किमिन बनाने के लिए तैयार है। इसके लिए कुछ दिनों इन्तजार करना पड़ेगा। सोना की होने वाली सास ने भी सोना की माँ को आश्वस्त किया कि आपकी बेटी सोना हमारे घर की प्यारी बहु बनेगी। उसे मैं बेटी की तरह प्यार से रखूँगी।

सोना भी आकर अपने माता–पिता आदि से मिलकर उन्हें जोहार की। उसने अपनी माँ को आश्वस्त किया कि उसे यहाँ कोई कष्ट नहीं होगा। फिर भी उसे कुछ दिनों तक आंदि के आयोजन के लिए इन्तजार करना पड़ेगा।

उसके माता–पिता भी सन्तुष्ट होकर लौट गए थे।

सोना धीरे–धीरे मंगल के घर के काम–काज में पूरी तरह लग गई थी। सुबह से साम तक वह सभी काम सम्भाल लेती थी। परन्तु उसे अभी रसोई घर में प्रवेश करने की इजाजत नहीं थी। उसकी होने वाली सास ने समझाया

था कि बिना आंदि सम्पन्न हुए वह 'अदिंग' में हमारे पुरखों की पूजा नहीं कर सकती है।

इस संबंध में सोना भी अपनी होने वाली सास की किसी बात को बुरा नहीं मान रही थी। वह जानती थी कि जब तक वह विधि पूर्वक इस घर की बहु नहीं बन जाती, उसे बहु का अधिकार नहीं सौंपा जायेगा। वह जानती थी कि कुछ महीने उसे इस घर में 'दासी' की तरह रहना होगा। एक तरह से अपने प्रेमी (मंगल) को पाने के लिए उसे एक तरह से तपस्या करनी होगी, जिसे वह सहर्ष स्वीकार करेगी।

देखते–देखते सोना को मंगल के घर में आये पाँच माह हो गया था। उसके होने वाले सास–ससुर और अड़ोस–पड़ोस की महिलाएँ भी सोना के आचार –व्यवहार से काफी सन्तुष्ट थी। अन्ततः गाँव के मुण्डा और दिउरी से विचार विमर्श कर मंगल के पिता ने अब इसे 'आंदि' का रूप देकर सामाजिक रीति–रिवाज से सोना को अपनी किमिन बनाने को तैयार हो गए।

शुभ दिन एवं लग्न का विचार कर आंदि सम्पन्न करने का कार्यक्रम बन गया। सोना के माता–पिता को भी गाँव के डकुआ के माध्यम से शादी में सामिल होने का निमंत्रण भेज दिया गया। शादी में अभी 10 दिन का समय था। लंकेश्वर ने अपने सगे–संबंधियों को निमंत्रण भेज दिए। उधर सोना के पिता ने भी शादी में सम्मिलित होने के लिए अपने सगे–संबंधियों के साथ सिंगराय मानकी एवं उनके परिवार को भी आमंत्रित कर दिये थे।

मंगल के आंगन में मंडप बना था जिसे फूल–पत्ती से सजाया गया था। सोना के लिए नये वस्त्र तथा आभूषण आदि की व्यवस्था मंगल ने स्वयं कर दिया था। उसने अपने होने वाले सास–श्वसुर के लिए भी नये वस्त्र खरीद लिए थे। उसने शादी के भोज के लिए एक बड़ा खस्सी, पाँच घड़ा डियंग आदि की व्यवस्था कर दी थी। उसने अपने दोस्तों को अलग से निमंत्रण दे दिया था। बारात ठहरने के लिए उसने सामने बगीचा में व्यवस्था कर दिया था।

रघुनाथ कोड़ा भी अपनी बेटी सोना के लिए कुछ आभूषण और नये वस्त्र, अपने दामाद के लिए पैंट–शर्ट, समधी के लिए धोती और समधिन के लिए साड़ी आदि की व्यवस्था कर लिए थे।

शादी के दिन सभी रिस्तेदार और अतिथि आ गए थे। सिंगराय मानकी भी अपनी पुत्री गुरबारी को लेकर आ गए थे। काफी धूम–धाम और विधि–विधान के साथ शादी सम्पन्न हुई और मंगल तथा सोना दाम्पत्य

जीवन के पवित्र बन्धन में बंध गए। रघुनाथ कोड़ा भी अपने अरातिडि (दामाद) से काफी सन्तुष्ट थे। मंगल के सभी संबंधी 'गोनोङ' रहित इस आदर्श विवाह से प्रसन्न थे। इस तरह दो प्रेमी– 'डिंडा कोवा' (कुँआरा युवक) और डिंडा कुइ (कुँआरी कन्या) आदि संबंधी सभी तरह के बन्धन को तोड़कर पति–पत्नी बन गए थे। अब सोना को अपने प्रेमोपहार में मंगल जैसा प्रेमी पति मिल गया था। सभी ने उनके सुखमय दाम्पत्य जीवन की शुभकामनाएँ अर्पित की।

(6)

गुरवारी के पिता सिंगराय मानकी का एक रिस्तेदार और पुरनिया पीड़ निवासी साधुचरण होनहागा वर्षों से चाईबासा में पी.डब्लू.डी. कार्यालय में चपरासी–सह–चौकीदार के पद पर कार्यरत् था। वह एक अच्छा चासी (कृषक) भी था। खेती से उसे वर्ष भर खाने के लिये बाबा (धान) मिल जाता था, जिससे मोटा और महीन दोनों तरह के चावल उसे मिल जाता था। मोटा चावल मांडि (भात) और डियंग के लिए रखा जाता था और महीन चावल साहेब तथा कुपुल(मेहमान) के लिए रखा जाता था। साहेब आंदि के आने पर महीन चावल का मांडि(भात) और सीमसांडि जिलु (मुर्गा का माँस) बनाया जाता था। अपने परिवार में वह अकेला सरकारी नौकरी में था। चाईबासा में वह कार्यपालक अभियन्ता (रोड) के कार्यालय में वर्षों से पदस्थापित था। उसका पूरा परिवार गाँव में रहकर खेती का काम देखता था। वह यहाँ अकेले सर्वेंट क्वाटर में रहता था।

साधुचरण की पत्नी पानीकुई सिन्कु बीच–बीच में अपनी छोटी बेटी दयामनी के साथ आती–जाती रहती थी। साधुचरण भी अकसर छुट्टी में अपना गाँव चला जाता था। वह मागे, बा आदि मरङ पर्व गाँव में मनाता था। गाँव का मानकी डोबरो होनहागा उसका होनसेड (भतीजा) लगता था। मानकी काफी युवा और पढ़ा–लिखा था। वह भी साधु के परिवार की देख–रेख करता था। साधु की तीन बेटियाँ थीं, जिनमें दो की शादी हो गई थी और तीसरी दयामनी होनहागा थी। उसका सबसे छोटा बेटा गुरूचरण होनहागा पुरनियाँ हाई स्कूल का छात्र था। खेती का काम उसकी पत्नी और बेटी संभालती थी। एक गुपिकोड़ा (चरवाहा) भी खेती में मदद करता था। अभी तक दयामनी के बपला (शादी) संबंधी कहीं से कोई अगुआ नहीं आया था। वह अभी तक 'डिंडा कुइ' हपानुम (कुँआरी कन्या) थी, हालाँकि उसकी उम्र लगभग 34 वर्ष हो चुकी थी।

साधुचरण जानता था कि दयामनी ज्यादा पढ़ी–लिखी नहीं है, इस कारण उसकी शादी में बाधा हो रही है। साथ ही, उसे उम्मीद के अनुसार 'गोनोङ' (बधुमूल्य) भी मिलना कठिन लगता है। चूँकि दयामनी खेती के

साथ–साथ हाट–बाजार का काम भी देखती है। इस कारण भी साधु उसकी शादी के लिए ज्यादा नहीं सोचता था।

इस बीच चाईबासा में नये कार्यपालक अभियन्ता रणधीर सिंह की पोस्टिंग हो गई थी और वे अपने पद पर योगदान भी कर चुके थे। कुछ समय से यह पद खाली था। वे बिहार के रहने वाले थे और संताल परगान से बदली होकर चाईबासा आये थे। उनके साथ उनका एक रिस्तेदार (चचेरा भाई) बलराम भी आया था। बलराम भी उनके साथ ही रहता था और पी.डब्लू.डी. विभाग में कुछ काम किया करता था। वह बहुत कम पढ़ा–लिखा था और उसके पिता की मृत्यु हो चुकी थी। वह लगभग 40 वर्ष का होगा और अभी तक उसकी शादी नहीं हुई थी।

रणधीर सिंह का परिवार अधिकतर घर पर ही रहकर खेती का काम देखता था। उनकी पत्नी मनोरमा सिंह कभी–कभी उनके पास आती थी। परन्तु अधिकांशतः गांव में ही रहती थी। सिंह जी का पुत्र अभिषेक वाराणसी में पढ़ता था। सिंह जी के पूर्वज जमीन्दार थे। अभी भी वे एक बड़े कास्तकार थे।

रणधीर सिंह का बंगला कार्यालय के पास ही था और काफी बड़ा था। वह अंग्रेजों के जमाने का बना हुआ था। कैम्पस काफी बड़ा था। सिंह जी के कार्यालय का एक चेनमैन उनके लिए बाबर्ची का काम करता था। बलराम भी रसोई घर की व्यवस्था में मदद करता था। एक दाई भी आकर बर्तन आदि की साफ–सफाई का काम कर देती थी। बाजार–हाट का काम साधुचरण किया करता था।

सिंहजी बड़े विनम्र और उदार स्वभाव के थे। कार्यभार ग्रहण करने के बाद वे अपने प्रमंडल के सभी सहायक अभियन्ता, कनीय अभियन्ता तथा अन्य सभी स्टॉफ के साथ परिचय के लिए बैठक किए और सभी के साथ खाना–पीना भी सम्पन्न हुआ। वे अपने सभी अधिनस्थ कर्मियों के साथ 'टीम स्पीरीट' से कार्य करने में विश्वास रखते थे। उनके स्टाफ में वहाँ के कई स्थानीय 'हो' जनजाति के सदस्य भी कार्यरत थे। साधुचरण भी उनमें से एक था।

सिंह जी संताल परगना से स्थानान्तरित होकर चाईबासा आये थे। अतः उन्हें जनजातिय जीवन, समाज, उनकी भाषा संस्कृति की कुछ जानकारी थी। वे संताली भी थोड़ा–बहुत बोल लेते थे। परन्तु 'हो' बोली उन्हें संताली से काफी भिन्न लगी। उन्हें लगा कि संताल परगना के आदिवासी हिन्दी के साथ–साथ कुछ बंगला भी बोलना जानते हैं। परन्तु यहाँ उन्हें

हिन्दी की अपेक्षा 'हो' जनजाति के लोग हो में ही अधिक बातचीत करते थे।

साधुचरण ही उनके लिए हाट से साग, सब्जी, मछली आदि लाता था, इसलिए वह अपने साहब से अधिक करीब हो गया था। चाईबासा हाट में साधु के साथ बलराम भी जाता था। परन्तु वहाँ हाट में सभी 'हो' में ही बातें करते थे। अधिकांश लड़कियाँ ही साग–सब्जी बेचती थीं। उनसे साधु ही बातचीत कर सब्जी आदि खरीद लाता था।

चाईबासा प्रमंडल का कार्यक्षेत्र बहुत बड़ा था। साधु के क्षेत्र की सड़कें भी इसी प्रमंडल में आती थी। पुरनिया हाट के दिन वे वहाँ बन रही सड़क और पुलिया के निरीक्षण में गए थे। साथ में उनके सहायक अभियन्ता के अलावा साधुचरण और बलराम भी गए थे। साधुचरण वहाँ हाट से मुर्गा आदि साहेब के लिये खरीदा था। हाट में उसकी पत्नी और बेटी दयामनी भी आई थी। सिंहजी सड़क आदि के निरीक्षण में चले गए थे। बलराम और साधु हाट में घूमकर मुर्गा आदि ले रहे थे। साधु ने अपनी पत्नी और बेटी दयामनी से परिचय कराया। दोनों ने बलराम को हाथ जोड़कर 'जोहार' किया। बलराम दयामनी को देखकर बहुत प्रभावित हुआ था।

हाट से दोनों वहाँ के छात्रावास के पास ग्रेनगोला में रूके। ग्रेनगोला के प्रभारी ने दोनों को नास्ता–पानी कराया। थोड़ीदेर में सिंहजी भी रोड आदि का निरीक्षण कर ग्रेनगोला में आकर बैठे। सहायक अभियन्ता से वे पूर्व परिचित थे। दोनों लोगों को अंडा का आमलेट और लाल चाय पिलाया। थोड़ी देर बाद सभी विभागीय जीप से चाईबासा वापस आ गए थे।

उस वर्ष फरवरी के दूसरे सप्ताह में साधुचरण के गाँव में माघे पर्व का आयोजन होने वाला था। इस बार वह अपने नये साहब रणधीर सिंह को भी माघे पर्व में कुपुल (मेहमान) के रूप में आमंत्रित कर दिया था। सिंह जी भी अपनी सहमति दे चुके थे। कोल्हान में माघ पूर्णिमा से ही अलग–अलग तिथि को विभिन्न गाँवों में माघे पर्व का आयोजन वर्षों से होता रहा है। माघे पर्व का अन्तिम आयोजन चाईबासा के निकटवर्ती गाँव राजाबासा में सम्पन्न होता है।

रणधीर सिंह इस मरंग पर्व के दूसरे दिन साधु के गाँव पहुँचे थे। उनके साथ बलराम भी कुपुल (मेहमान) बनकर साधु के घर पहुँचा था। साधु ने दोनों को जोहार कर बैठाया और परिवार के सभी सदस्यों से उनका परिचय कराया, उसमें डोबरो मानकी भी थे। सभी ने उन्हें जोहार किया और सिंहजी ने सभी को माघे पर्व की शुभ कामनाएं दी। उसके परिवार एवं गाँव के लोग ठीक से हिन्दी नहीं बोल पाते थे। सिंहजी संताली थोड़ा बहुत जानते थे।

इसलिए 'हो' थोड़ा बहुत समझते थे। वहाँ उच्च विद्यालय के प्राधानाचार्य राघवेन्द्र भी बिहार के थे। पर वे भी 'हो' भाषा जानते थे। वे भी इन्जीनियर साहब से मिले।

थोड़ी देर में दयामनी और उसकी माँ 'लोटा पानी' से रणधीर सिंह और बलराम का स्वागत की। दयामनी का मुस्कराता चेहरा से बलराम बहुत प्रभावित था। उसके शालीन व्यवहार से सिंहजी भी खुश थे। बलराम के अर्न्तमन में दयामनी के प्रति अनायास ही प्यार का अंकुरण हो गया था। दयामनी का स्वस्थ शरीर, सरल एवं मधुर स्वभाव और अपनापन के भाव भंगिमा से दोनों बहुत प्रभावित हुए थे।

मेहमानों के स्वागत में दयामनी और उसकी माँ लगी हुई थी। दयामनी की दोनों बड़ी बहने–विनिता और सुनीता भी मेहमानों की स्वागत में लगी हुई थी। दोनों मागे पर्व में अपने पतियों के साथ आई थी।

रणधीर सिंह दयामनी और उसके परिवार के आचार–व्यवहार से बहुत प्रसन्न थे। उन्होंने उनमें 'अतिथि देवोभव' अथवा मेहमान देव तुल्य होता है' इसका मूर्तरूप देखा। सभी मेहमानों के साथ–साथ सिंहजी और बलराम को भी पत्तल में मुर्गा का मांस और भात परोसा गया था उसके पूर्व प्रसाद के रूप में थोड़ा–थोड़ा 'डियंग' भी दिया गया था।

खाने–पीने के बाद अखड़ा में माघे दुरंग(माघे पर्व का गीत) के साथ सामुहिक नृत्य शुरू हो गया था। मान्दर, नगाड़ा और बुनुम (सारंगी) आदि के ताल और धुन पर महिलाओं और पुरूषों का नृत्य दो पंक्तियों में शुरू हो गया था। माघे पर्व का गीत उच्च स्वर में गाया जा रहा था, जिसका बोल था –

रांसा रांसा हुजुः आकना मागे पोरोब,
ओते एंगा सेवा सड़ाम मागे पोरोब,
सिंङ बोंगा गोआरि लगिड् मागे पोरोब,
हागा पागा सबिन लगिड् मागे पोरोब,
कुपुल एमचेड आजोम लगिड् मागे पोरोब,
अकड़ा बितर सुसुन लगिड मागे पोरोब।

भावार्थ –हँसी–खुशी से मनाने के लिए माघे पर्व आ गया है। धरती माता और सूर्य देवता की पूजा और प्रार्थना का माघे पर्व है। भाई–बहन के लिए यह माघे पर्व है। मेहमानों को प्रीतिभोज देकर स्वागत करने तथा अखड़ा में नाचने का यह मागे पर्व आ गया है।

दयामनी अपनी दोनों बहनों और सहेलियों के साथ नृत्य कर रही थी।

बलराम इस सामूहिक नृत्य और गीत से काफी प्रफुल्लित था। वह हो भाषा के गीत का अर्थ समझ नहीं रहा था। परन्तु मान्दर और नगाड़ा के धुन पर सामूहिक नृत्य बड़ा ही मनमोहक लग रहा था।

काफी देर तक बलराम नृत्य का आनन्द ले रहा था। परन्तु उसकी आँखें दयामनी के आकर्षक नृत्य और भाव–भंगिमा पर टिकी हुई थी। वह लाल पाड़ की साड़ी में और अधिक सुन्दर और आकर्षक लग रही थी।

संध्या होने वाली थी और रणधीर सिंह को चाईबासा लौटना भी था। कुछ देर बाद दयामनी अपनी बहनों के साथ अखड़ा से वापस आ गई थी। उसके पिता साधुचरण से रणधीर सिंह बातें कर रहे थे। उन्होंने इस पर्व के आयोजन और मेहमान नवाजी की बड़ी सराहना की। दयामनी भी आ गई थी। रणधीर सिंह और बलराम बिदा होने वाले थे। साधु, उसकी पत्नी और दयामनी ने उन्हें जोहार किया। रणधीर जी जीप से चाईबासा वापस आ गए थे। इस पर्व में सबसे आनन्द बलराम को आया था। दयामनी का रूप–लावण्य, उसकी मधुर मुस्कान और मेहमाननेवाजी से उसका ह्रदय गदगद हो गया था।

माघे पर्व मनाकर साधुचरण जब चाईबासा वापस आया तो दयामनी भी उसके साथ चाईबासा आ गई थी। रणधीर सिंह के बंगला के पास ही साधु का क्वाटर था। इस बार रणधीर सिंह के रसोईघर में खाना बनाने का कार्य दयामनी ने सम्भाल ली थी। उसके आने से रसोई घर अधिक सुव्यवस्थित हो गया था। दाई आकर बर्तन आदि साफ कर देती थी। उसके बाद भी वह बर्तन तथा रसोईघर की सफाई स्वयं करती थी। साधु रसोईघर के लिए साग–सब्जी आदि ले आता था। रणधीर सिंह को 'ननभेज' (मांसाहारी) खाना अधिक पसन्द था। अतः चाईबासा के मंगला हाट से ताजी मछली और मुर्गा वह ले आता था। खाना पकाने में दयामनी काफी निपुण थी। वह कम मसाला का प्रयोग कर मांस–मछली काफी स्वादिष्ट बनाती थी। रणधीर के साथ उनके सहायक अभियन्ता एस0 कुमार भी कभी–कभी उनके साथ दिन का खाना खाते थे। वे भी दयामनी द्वारा बनाये गए खाना की काफी तारीफ करते थे।

इधर बलराम को कार्यालय के डाक को बांटने का काम मिल गया था। वह उसी में दिनभर व्यस्त रहता था। वह दोपहर में आकर खाना खाता था और उसी समय उसे दयामनी से बातचीत करने का मौका मिलता था। उसके हाथ से बनाये गए स्वादिष्ट भोजन की वह भी बहुत तारीफ करता था। अपनी तारीफ सुनकर मुस्करा देती और कहती–तुम बहुत चकड (मजाक)

करते हो। मैं तो काफी सादा साधारण खाना बनाती हूँ।

बलराम–तुम्हारे हाथ में जादू है और तुम प्रेम पूर्वक खाना परोसकर खिलाती हो।

इस पर दयामनी मुस्करा देती, जो बलराम को बड़ा ही मनमोहक लगता। अब उसके अन्तर्मन में दयामनी के प्रति प्रेम का बीज अंकुरित हो रहा था। दयामनी के प्रति उसका आर्कषण बढ़ता जा रहा था। दयामनी भी मजाक में उसे दीकू तो कभी बोलराम कहती थी। बलराम उसे दया कह कर सम्बोधित करता था तो वह मुस्करा देती।

दयामनी को वह 'दया' नहीं कहकर 'दाया' कहता तो दयामनी एकबार उसे 'हो' में बोली –'आम दो आञा नुतुम दो बुगिन ते का कजितना, आञा नुतुम 'दया' मेना, 'दाया' कागे', 'तुम मेरा नाम अच्छा से (ठीक से) नहीं बोलते हो। मेरा नाम 'दया' है ('दाया' नहीं)।

हो बोली सुनकर बलराम बोला–'तुम क्या इड़िंग–बिडींग बोलती हो। हिन्दी में बोलो, तो उसने हिन्दी में समझाया बलराम– अच्छा, तुम मेरी गलती पकड़ती हो। तुम भी तो मुझे 'बलराम की जगह 'बोलराम' कहती हो। यह कैसा मजाक है।'

इस पर दयामनी जोरों से हंस दी तो बलराम को भी हंसी आ गई।

इसी तरह से अब दोनों में कभी–कभी हंसी–मजाक भी जो जाया करता था। असल में भोजपुरी भाषा और हो भाषा की बोली के उच्चारण में आसमान जमीन का अन्तर है। फिर भी बलराम अपने उच्चारण को धीरे–धीरे सुधारना शुरू किया था। अब वह 'हो' बोली सीखने में लग गया था।

एक बार चाईबासा के मंगला हाट में वह बलराम के साथ गई तो उसकी कई सहेलियां मिल गई, जो सब्जी आदि लेकर बेचने आई थी। बलराम अब काफी स्मार्ट और आकर्षक युवक लगता था। दया की सहेलियां उसे 'दीकु' कहकर 'हो' भाषा में चकड़ (मजाक) कर रही थी और दया से कह रही थी–'आम दो एसु सुगड़ दीकु सेपेड को सब तना को उजुअ केडा' (तुम काफी सुन्दर दीकु युवक को पकड़ कर लाई हो)

दूसरे ने कहा–चिया, बपला रेया जगर तना चि'(क्या शादी की बातचीत चल रही है?)

दयामनी–चिया चकड़ तना? इनाको दो मरङ सायोब को होनसेड बोलराम मेना। (क्या मजाक कर रही है। यह हमारे बड़ा सायोब (साहब) का भतीजा बलराम है)।

इस तरह से थोड़ी देर हँसी मजाक चलता रहा। बलराम कुछ भी समझ

नहीं पाया। उन लोगों को देखकर केवल मुस्कराता रहा।

दयामनी बलराम के साथ जाकर एक बड़ा सोयहाकु (रहु मछली) खरीदी और कुछ हरी सब्जी भी ली, जिसमें सुकु (कद्दु), बेंगा (बैंगन), बेलाति बेंगा (टमाटर) मिंडि दिरिंग(भींडी) आदि था। उसके बाद दया ने बलराम से अपने लिए गुड़ाकु (दांत धोने का) लेने को कहा। सभी सब्जी आदि का भुगतान बलराम ने कर दिया।

दयामनी के साथ उसने छोला–ढुस्का खाया। फिर दोनों सिंह जी के बंगला में वापस आ गए।

जबसे दयामनी आई है, साधु का भी खाना–पीना सिंहजी के बंगला में हो रहा था। नास्ता, खाना, चाय आदि बनाने का पूरा काम दयामनी स्वयं कर रही थी। पहले का बाबर्ची केवल सब्जी, मछली, मुर्गा आदि काटने का काम कर देता था। रणधीर सिंह भी दयामनी द्वारा बनाये गए सुस्वादु व्यंजनों से काफी सन्तुष्ट और प्रसन्न थे। दयामनी के व्यवहार और सेवा भाव में उन्हें अपनत्व का भाव दीखता था। दयामनी ने भी उनके किचेन को स्वच्छ और सुव्यवस्थित कर उसे नया लुक दे दिया था। इतना साफ–सुथरा स्वच्छ रसोईघर और सुस्वादु भोजन यहाँ पहले कभी नहीं मिला था। बलराम तो उसके खुलेपन और अपनापन का मुरीद बन गया था।

दयामनी भी बलराम के व्यवहार से काफी प्रभावित थी। उसे बलराम अब दीकु नहीं, अपने परिवार का सदस्य जैसा लगता था। अब वह उसका सहिया (दोस्त) बन गया था।

बलराम को भी दयामनी का मादक मुस्कान मोहित कर दिया था। उसके अवचेतन मन में दयामनी का प्यार अंकुरित हो गया था। परन्तु अपने प्रेम–पल्लवित मनोभावों को व्यक्त करने में वह डर रहा था। अपने चाचा की प्रतिष्ठा और दयामनी की मर्यादा के बोध की सीमा रेखा ने उसे नैतिकता के बन्धन में बाँध रखा था। उसके अन्तर्मन में दयामनी जैसी स्वस्थ, सुन्दर, सुशील और समर्पित सेवा भाव से भरी हुई जीवन संगिनी की लालसा जग गई थी। परन्तु उसे दयामनी के आदिवासी होने और स्वयं गैर–आदिवासी क्षत्रीय जाति का होना सबसे बड़ा बाधक लग रहा था।

कुछ दिनों तक दयामनी बलराम के सम्पर्क में रहकर काफी घुलमिल गई थी। इसके बाद उसे अपनी माँ का बुलावा आ गया और उसका छोटा भाई उसे लेने आ गया। दूसरे दिन सबको 'जोहार' कर दयामनी अपनी चिर परिचित मुस्कान बिखेर कर गाँव चली गई। बलराम उसके जाने से थोड़ा उदास हो गया था। सिंहजी का किचेन खाली–खाली और सूना–सूना लग

रहा था। अब बलराम और बाबर्ची चेनमैन मिलकर रसोई घर को संभाल रहे थे। इधर सिंहजी कई बैठकों और सड़क निर्माण कार्यो के निरीक्षण में व्यस्त हो गए थे। मार्च महीना होने के कारण कई सड़क निर्माण कार्यों की अन्तिम मापी कराकर इस वित्तीय वर्ष के लिए आवंटित राशि को पूरी तरह व्यय कर देना था।

इस वर्ष अप्रैल के प्रथम सप्ताह में पुरनियाँ पीड़ (पंचायत) के गाँवों में बाया बाहा पर्व (वसन्त पर्व) मनाया जाने वाला था। बा पर्व हो जनजाति का एक महान पर्व है, जो बाहा चन्डु (मार्च–अप्रैल) में मनाया जाता है। इस पर्व को उराँव जनजाति के लोग सरहुल या खद्दी कहते हैं। बा पर्व का पहला दिन हाकु (मछली) और कड़कोम (केंकड़ा) पकड़ने का दिन होता है जो आदि सृष्टि (धरती बनने) की कथा से जुड़ा हुआ है। इस अवसर पर सुबह में लोग तालाब या नदी में जाकर मछली और केंकड़ा को पकड़ कर लाते हैं और उसे साम को पका कर खाते हैं।

दूसरे दिन लोग सुबह में स्नान कर पाहन या दिउरी के साथ जयरा या जहेर थान (पूजा स्थल) जाकर सिङबोंगा, देसाउली बोंगा जहेर एरा आदि की पूजा करते हैं। इस अवसर पर मुर्गा–मुर्गी की बलि देकर ओते एंगा (धरती माता) को डियंग अर्पित कर पूजा सम्पन्न करते हैं। पूजा में सरई (साल वृक्ष) का फूल भी चढ़ाया जाता है, जिसे प्रसाद के रूप में सभी को दिया जाता है, जिसे पुरूष अपनी कान पर और महिलाएँ अपने केस में लगाती हैं। इस पर्व के सन्दर्भ में प्रचलित धर्मगाथा या नियम के अनुसार यह सिंगिबोंगा (सूर्य) और ओते एंगा (धरती) के विवाह का पर्व माना जाता है। इस अवसर पर भी गीत, नृत्य और मेहमानों को प्रीतिभोज दिया जाता है।

इस पर्व के अवसर पर साधुचरण के निमंत्रण पर रणधीरजी भी बलराम के साथ उसके गाँव गए थे। उनके साथ उनका कनीय अभियन्ता और एक चेनमैन भी गया था। इस क्षेत्र में हो रहे रोड के निर्माण का निरीक्षण भी उन्हें करना था। वे गाँव पहुँचकर बलराम को साधु के घर छोड़कर अपनी गाड़ी से कनीय अभियन्ता और चेनमैन को लेकर सड़क के निर्माण कार्य का निरीक्षण करने चले गए थे।

बलराम का स्वागत दयामनी ने किया और उसे चना का छोला और थोड़ा डियंग प्रसाद के रूप में दिया। पूजा आदि जहेर थान में सम्पन्न हो गया था। अब बा पर्व का गीत–नृत्य के आयोजन की तैयारी होने लगी थी। अखड़ा में दमा–दुमंग (नगाड़ा–मान्दर) का मधुर संगीत गूंजने लगा था। सभी सेपेड होन (युवक) और डिंडा कुई(युवतियाँ) तथा अन्य स्त्री–पुरूष अखड़ा

में पंक्ति बद्ध होकर नृत्य के लिए प्रस्तुत थे। थोड़ी देर में मांदर के ताल पर 'बा' पर्व का गीत का स्वर लहराने से वातावरण मधुमय हो गया –

सेंदरा चंडुः सेटेरयना, सरजोम बा डुमसु–डुम्बः
मुतुड–मुतुड् सोवन'यना, चेड़े ओय को रांसायना।
बा पोरोब सेटेराकन, सरजोम बा पुटवा कन
मःर बा जेगड़–जुंगुड़, एदेल बा गसातना।।

अर्थ–"फाल्गुन का महीना आ गया है और सखुआ फूलों का गुच्छा के सुगंध से पक्षी खुश हो रहे हैं।

फूलों का त्योहार आ गया है और सखुआ के फूल खिल गए हैं। पलास का लाल–लाल फूल भी खिले हैं और सेमल के फूल झड़ रहे हैं।"

नृत्य के दूसरे चरण में नोगोड बसंत (मधुमय बसन्त) के बासन्ती सुषमा का मधुमिश्रित गीत से पूरा वातावरण गूंज उठा –

बसंत राजा प्रकृति रे नोगोड रासो हिरचितनाःऽ
गोम–जीड् जीबोन कोरे आयनमाजीबोन ओमेतनाःऽ
बसन्त हुजुः लेन रे ओते रेयाः दुम्बु–दुम्बु रासावतनाःऽ

अर्थ–ऋतुरात बसन्त के चपल चरण से वसुन्धरा का कण–कण मधुरस से सिक्त हो गया है। लगता है जैसे बसन्त ने धरा(ओते) को नव यौवना बना दिया है और उसका कण–कण मदहोश होकर नृत्यरत हो गया है।

इस प्रकार काफी देर तक नृत्य चलता रहा। इसी बीच रणधीर सिंह भी आ गए थे। साधु ने उन्हें और कनीय अभियन्ता को करकोम(खाट) पर बैठाया और उसकी पत्नी ने लोटा–पानी से स्वागत किया। फिर सभी अतिथि को सीमसन्डी और मांडी (मुर्गा–भात) का प्रीतिभोज दिया गया।

छः बजे रणधीर सिंह अपने कनीय अभियन्ता के साथ सभी को जोहार किए। बलराम कुछ दूर पर खड़ा था और दयामनी को जोहार किया तो दयामनी भी मुस्करा कर 'जोहार' की। नृत्य दल में बलराम भी मान्दर बजाया था, जिसे देखकर सभी चकित थे। सभी ने उसे जोहार कर विदा किया। इसके बाद रणधीर सिंह सभी के साथ चाईबासा अपने बंगला पर वापस आ गए थे।

अब बलराम और दयामनी का परिचय घनिष्ठ होकर प्यार में बदलने लगा था, जिसे बलराम अधिक महसूस कर रहा था। दयामनी के चले जाने से वह खोया–खोया सा अनुभव करता था। परन्तु उसे एक नैतिक भय भी हो रहा था कि वह एक गैर–आदिवासी क्षत्रीय युवक था जबकि सोनामनी एक 'हो' आदिवासी युवती थी और उसे दोनों के बीच प्यार के बंधन का

निर्वहन असम्भव लग रहा था।

इसी अज्ञात भय के कारण वह दयामनी से अपने प्यार का इजहार नहीं कर पा रहा था। उसे ऐसा करना अपने पारिवारिक मर्यादा के भी विरूद्ध लग रहा था। वह अपनी इस भावना को किसी से अवगत भी नहीं करा सकता था। परन्तु रणधीर सिंह दोनों के निकट संबंध और बातचीत से यह अनुभव कर रहे थे कि बलराम का युवा मन दयामनी के प्रति आकर्षित है। उन्हें यह मालूम था कि अनपढ़ होने के कारण अपनी बिरादरी (क्षत्रीय जाति) में उसका विवाह होना संभव नहीं लग रहा था। बलराम की तरह दयामनी का अभी तक कुँआरी रहना भी उन्हें आश्चर्यजनक लग रहा था।

एक दिन संध्या समय साधु सिंहजी के लिये चाय लाकर दिया। सिंहजी ने उसे बगल के बेंच पर बैठाया और उससे उसके पारिवारिक जीवन संबंधी जानकारी लेने के बाद पूछा–"अच्छा साधु, तुम्हारी दो बेटियों की शादी हो चुकी है। परन्तु अभी तक दयामनी की शादी क्यों नहीं हुई? उसकी उम्र भी बढ़ रही है?

साधु–सायोब, हमारे हो समाज में गोनोङ(बधुमूल्य) का प्रचलन काफी कड़ा है। लड़के वाले ही कन्या के घर अगुआ भेजकर बपला (शादी) की बातचीत शुरू करते हैं। गोनोंङ में लड़के वाले को उरी, केड़ा(गाय, बैल) तथा नगद रूपये भी देना पड़ता है। अभी तक दया के बपला के लिए कोई ऐसा अगुआ आया नहीं तो शादी की बात कैसे होती। अब आपही बताओ कि मैं उसकी शादी कैसे कर देता। इसी कारण अभी तक वह 'डिंडा कुई' है।

रणधीर सिंह को यह एक गम्भीर और रूढ़िवादी सामाजिक समस्या लगी। उन्होंने साधु से पूछा –"अच्छा साधु, दयामनी की शादी के लिए अपनी जाति अथवा क्षत्रीय राजपूत का कोई लड़का ठीक करें तो तुम शादी करना चाहोगे? हमारे समाज में भी कई ऐसे कुँआरे युवक हैं, जो कम पढ़े–लिखे होने के कारण कुँआरे हैं। उनमें से कई काफी बड़े चासी (खेतिहर) हैं।

इस बात पर साधु थोड़ी देर सोचकर बोला–हमारा समाज और परिवार शायद ऐसा बपला (विवाह) करने को तैयार नहीं होगा। फिर भी इस संबंध में मैं अपनी येरा बुड़ि (पत्नी) और अपनी बेटी दया से बातें करूँगा। मेरा होनसेड (भतीजा) डोबरो मानकी का भी राय लूँगा। अच्छा, कौन ऐसा डिंडा सेपेड (कुँआरा युवक) है, जिसे आप शादी देना चाहते हैं?

रणधीर सिंह– देखो साधु, वह लड़का कोई और नहीं मेरा भतीजा बलराम है। वह एक बड़ा चासी भी है और सरकारी नौकरी भी करता है। तुम उसे पूरी तरह जान चुके हो। उससे शादी के लिए तैयार होने पर तुम जितना

चाहोगे, दहेज (गोनोंङ) मिल जाएगा तुम्हारी दयामनी हमारे परिवार की बहु बनकर काफी सुख से रहेगी। मेरे परिवार में इस शादी का कोई विरोध नहीं करेगा। तुम कल गाँव जाकर इस संबंध में सबसे बातचीत कर लो। अगर तुम्हारी पत्नी और मानकी जी चाहें तों उनको चाईबासा लाकर हमसे बातचीत करा सकते हो।

साधुचरण भी जब से बलराम कार्यालय में उसके साथ काम करता था, उसके सीधा, स्वस्थ और विनम्र व्यवहार से साधु सन्तुष्ट था। साथ ही, बलराम का गौर वर्ण (गोरा रंग), स्वस्थ्य शरीर, लम्बा कद–काठी आदि से भी वह काफी प्रभावित था। अपने साहब का भतीजा होने के कारण भी साधु के मन में उसके प्रति आदर का भाव था। साथ ही अपनी बेटी की उम्र बढ़ने और शादी के लिए कोई अगुआ के न आने से उसे चिन्ता भी थी। उसे डर था कि दया की शादी का उम्र बीत जाने पर भी यदि 'डिंडा कुइ' (कुँआरी कन्या) रह जायेगी तो समाज उसे खराब नजर से देखने लगेगा। उसके पड़ोस के गाँव में एक 'डिंडा बुड़ि' को डइया (डायन) बताकर उसके गोतिया वाले उसे जान से मार कर जंगल में फेंक दिये थे।

साधु रविवार को अपने गाँव चला गया। वहाँ जाकर एकान्त में अपनी पत्नी से रणधीर से हुई बातचीत से उसे अवगत कराया। साथ ही उसने दयामनी के अभी तक 'डिंडा कुई' रहने पर अपनी चिन्ता भी व्यक्त की। उसकी पत्नी को भी दयामनी की शादी की चिन्ता थी। वह जानती थी कि अभी तक उसकी आंदि के लिए कोइ अगुआ नहीं आया। कोई डिंडा सेपेड (कुँआरा युवक) भी उससे प्यार नहीं किया। इसी कारण दया अभी तक 'डिंडाकुइ' रह गई, जब कि उसकी उम्र की कई लड़कियों की शादी पहले ही हो गई।

ऐसी स्थिति में उसे अपने पति के प्रस्ताव पर विचार करना उचित लगा। वह बलराम से कई बार मिल चुकी थी और उसका आकर्षक शरीर और आचार–व्यवहार उसे काफी अच्छा लगा था। उसने दयामनी से इस संबंध में उसकी राय जानने के लिए बात करने का आश्वासन दिया।

इधर साधु संध्या समय अपने भतीजा डोबरो मानकी के घर गया। नास्ता–पानी के बाद उसने रणधीर सिंह से हुई दया की शादी संबंधी प्रस्ताव के संबंध में बात की। उसने मानकी को भी अपनी पुत्री की बढ़ती उम्र और अभी तक शादी न होने पर चिन्ता जताई।

डोबरो मानकी पढ़ा–लिखा युवक था और वह भी अपने समाज की रूढ़िवादी परम्परा 'गोनोंग' आदि का विरोधी था। वह जानता था कि

दयामनी उतनी पढ़ी–लिखी नहीं है और उम्र भी काफी तक हो गई है। अगर उसकी शादी नहीं होती है तो उसे समाज में लांछन भरा असुरक्षित जीवन बिताना पड़ेगा। अतः रणधीर सिंह द्वारा बलराम से दयामनी की शादी का प्रस्ताव ठीक लगा। वह भी बलराम और रणधीर सिंह से मिल चुका था। दोनों का आचार–व्यवहार काफी अच्छा लगा था। अतः डोबरो ने अपने चाचा साधु से कहा–काका, आप इस बात को आगे बढ़ाइये। मेरा पूरा सहयोग आपको मिलेगा।

अपने मानकी भतीजा से उसे काफी बल मिला और इस बपला से उसे दयामनी के साथ–साथ अपने परिवार का भविष्य भी अच्छा नजर आया। उसे लगा कि इतना बड़ा–मरङ सायोब –मुझे अपना बाला (समधी) और हमारी बेटी को अपना किमिन (बहु) बनाना चाहता है, यह तो सिंगबोंगा का कृपा लगता है।

घर वापस आकर अपनी पत्नी को डोबरो की सहमति से अवगत कराया। उसकी पत्नी ने भी दया से बातें की थी। उसने भी इस संबंध में निर्णय लेने की बात हमलोगों पर छोड़ दी है। उसे भी बलराम बहुत पसन्द है, जैसा कि उसके बात–चीत से लगा।

दूसरे दिन साधु अपनी ड्यूटी पर वापस चला गया था सिंहजी किसी बैठक में भाग लेने राँची गए थे। बलराम भी उनके साथ गया था। राँची से वे संध्या समय लौटे थे।

चाय–नास्ता के बाद उन्होंने साधु को अपने कमरे में बुलाकर उसका तथा परिवार का समाचार पूछा।

साधु–"सायोब, सब ठीक है। गाँव जाकर हमने दयामनी की माँ और भतीजा डोबरो मानकी से बातचीत की। दयामनी की एंगा(माँ) ने दयामनी से भी उसकी राय ली। आपके द्वारा दिया गया 'बपला' का प्रस्ताव हमारे पूरे परिवार को मंजूर है। परन्तु यह रिस्ता समाज के कायदा–कानून से हट कर होगा। आंदि (शादी) बाद हमारी बेटी दयामनी का भविष्य आपके परिवार में सुरक्षित और सुखी रहे, इसका उपाय आपको करना होगा क्योंकि आप को तथा बलराम के अलावा मैं आपके फेमिली में किसी को नहीं जानता।"

रणधीर सिंह–"देखो साधुचरण, पहले बलराम और दयामनी की शादी मन्दिर में होगी। बाद में इस शादी की रजिस्ट्री कोर्ट में करा दी जायेगी ताकि तुम्हारी बेटी दयामनी को हमारे परिवार में बहु बनने का कानूनी अधिकार मिल जाय। इसलिए तुम्हें दयामनी के भविष्य की चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। हमारे परिवार में वह एक क्षत्रीय 'कुलवधु' के रूप में प्रतिष्ठित होकर

मान–मर्यादा के साथ सुख से रहेगी।''

''तुम्हें मालूम होना चाहिए कि सरकार भी अर्न्तजातीय विवाह अथवा दो अलग–अलग जाति के वर और कन्या के विवाह को कानूनी मान्यता देकर वधु को नगद रूपये भी दे रही है।''

साधु–''ठीक है सायोब, अब मुझे भरोसा हो गया कि हमारी डिंडा कुइ दयामनी का जीवन आपकी किमिन (बहु) बनने पर सुखी होगा और उसके भविष्य की चिन्ता से हमलोग मुक्त हो जायेंगे। अब मुझे पूरा विश्वास हो गया कि इस आंदि (शादी) से उसका वर्तमान और भविष्य दोनों सुरक्षित हो जायेगा।

इस प्रकार साधु को अपने साहेब की बातों से हार्दिक खुशी एवं सन्तोष हुआ। अब वह इस शादी को शीघ्र सम्पन्न कराने के लिए तैयार हो गया। वह मन की मन सिंङबोंगा(परमेश्वर) और जयरा एरा (देवी) की कृपा मानकर मन ही मन उनको गोआरि कर रहा था ताकि इस शादी में किसी प्रकार की बाधा उपस्थित न हो।

दूसरे दिन रणधीर सिंह ने साधुचरण को अपनी पत्नी दयामनी और डोबरो मानकी को चाईबासा ले आने हेतु अपनी गाड़ी से भेज दिया। एक बजे सभी आये और उन्हें डाकबंगला में ठहराया गया। उनके खाने–पीने की व्यवस्था वहीं कर दी गई थी।

संध्या समय सिंह जी ने अपने परिचित सुरेन्द्र पाठक को पोथी–पतरा के साथ बुला लिया। उनके बंगला पर साधु भी अपने परिवार के साथ आ गया था। पाठकजी ने विवाह के लिए शुभ मुहुर्त आगामी सोमवार को संध्या 5 बजे से प्रारम्भ होकर 10 बजे रात तक बता दिया। पाठकजी को सिंह जी ने स्थानीय काली मन्दिर में शादी सम्पन्न कराने की जिम्मेवारी दे दी। दयामनी की माँ और मानकी भी इस 'दीकू आंदि' (गैर जनजातीय विवाह) से प्रसन्न थे। उनको अपनी 'डिंडाकुइ' दयामनी के सुखमय दाम्पत्य जीवन के लिये अब कोई चिन्ता नहीं थी।

इस सुखद समाचार से बलराम और दयामनी भी बहुत प्रसन्न थे। बलराम जैसे 'क्रॉनिक बैचलर' के लिए तो यह सौभाग्य की बात थी। उसके हृदय में दयामनी के प्यार का अंकुरन पूर्व में ही हो चुका था। सौभाग्य से अब वह उसकी प्रेयसी और पत्नी बनने वाली थी।

अभी शादी के मुहुर्त (सोमवार) आने में 6 दिन बचे थे। सिंह जी अपनी पत्नी, पुत्र, भौजाई आदि को गाँव से लाने हेतु दूसरे दिन बलराम को अपनी कार से भेज दिया।

रणधीर जी ने शादी के निबन्धन हेतु एक आवेदन पत्र भी बलराम और दयामनी से हस्ताक्षर कराकर जिला अवर निबंधक को भेज दिया था।

इसी बीच उन्होंने साधु, डोबरो मानकी और दयामनी को अपने प्रधान सहायक के साथ "अनुपम वस्त्रालय" शादी के लिए बनारसी साड़ी अन्य वस्त्रों के क्रय हेतु भेज दिया। उन लोगों ने अपनी पसन्द से सभी वस्त्र लिये और मूल्य का भुगतान सिंह जी द्वारा कर दिया गया था। उसके बाद "बर्मन स्वर्णालय" भेजकर दयामनी के लिए शादी में पहनने हेतु सकोम (कंगना, हतरमुरकी(कर्णफूल), मुटा (नथिया), हिसिर (चन्द्रहार), अन्दु (पायल) दुपिल सोना (मांग टीका) आदि क्रय करने हेतु उन्हें भेज दिये थे। दयामनी और बलराम के लिए सोने की अंगूठी लेने के लिये भी सिंह जी ने साधु को कह दिया था। दयामनी और उसकी माँ ने अपने पसन्द से गहनों को ले लिया। उनके मूल्य का भुगतान सिंह जी द्वारा कर दिया गया था। गहना, वस्त्र आदि लेकर सभी सिंह जी के बंगला पर आ गए थे। सभी के खाने की व्यवस्था उनके बंगले पर थी। साधु, उसकी पत्नी, मानकी और दयामनी रात में डाक बंगला में ही जाकर रात्रि विश्राम किये।

दूसरे दिन सभी तैयार होकर सिंहजी के बंगला पर आ गए थे। उन्हें नास्ता कराकर अपनी गाड़ी से उनके गाँव भेज दिए। दयामनी और उसका पूरा परिवार और मानकी का परिवार इस शादी से बहुत उत्साहित था। दयामनी और उसकी माँ शादी के लिए खरीदे गए मन पसन्द कीमती गहना, साड़ी आदि से काफी खुश थी। सिंह जी ने साधु, उसकी पत्नी, उसके पुत्र, मानकी आदि के लिए भी अंगवस्त्र की व्यवस्था कर दी थी।

शनिवार को बलराम अपनी माँ, चाची आदि के साथ कार से लेकर चाईबासा आ गया था। सभी बलराम की शादी ठीक हो जाने से काफी खुश थे। दयामनी के संबंध में सिंह जी सभी को बताया कि वह काफी सुशील, स्वस्थ्य, गृहस्थी संभालने में दक्ष अथवा हर तरह से वह एक कुशल गृहिणी के रूप में हमलोगों के परिवार की बहु बनने के योग्य है। सिंहजी की पत्नी मनोरमा सिंह, बलराम की माँ यशोदा और छोटा भाई दिनानाथ– सभी पहली बार चाईबासा आये थे। सभी ने शादी के वस्त्र, आभूषण आदि देखकर काफी खुश थे। वे सभी दयामनी को एक बार देखना चाहते थे। सिंह जी ने उन्हें आश्वस्त किया कि कल (रविवार) गाँव से वह अपनी माँ तथा संबंधियों के साथ चाईबासा आ जायेगी।

डोबरो मानकी और साधु के परिवार का चाईबासा से वापस आने के बाद कुछ लोगों को मालूम हो गया कि साधुचरण की बेटी दयामनी का 'दीकु

आंदि' का आयोजन चाईबासा में होने वाला है। अतः साम को गाँव के कुछ बुजुर्ग लोग डोबरो मानकी के घर आकर इस संबंध में पूछ–ताछ करने लगे। मानकी ने सभी को बैठा कर बताया कि दयामनी की अब तक 'डिंडा कुइ' बने रहने से साधु परेशान है। अभी तक कोई भी अगुआ बपला के लिए नहीं आया। कोई पढ़ा–लिखा युवक भी उसके साथ 'केपेयाआंदि' (प्रेम विवाह) के लिए आगे नहीं आया। ऐसी हालत में उसकी मदद करने का मरंग सायोब (बड़ा साहब) रणधीर सिंह आगे आए और अपने होनसेड (भतीजा) बलराम से दयामनी की शादी की बात की। आपलोग मागे पोरोब में बलराम को देख चुके हैं। वह सरकारी नौकरी में है और अपने गाँव का बड़ा चासी है। वह भी दयामनी को पसन्द करता है। आंदि का सारा खर्च इन्जीनियर साहब करेगा। गोनोंग के साथ–साथ पूरे गाँव को एक मरंग भोज भी देगा। अतः दयामनी के सुखद भविष्य के साथ–साथ 'डिंडा कुइ' के अभिषाप से छुटकारा दिलाने के लिए हमलोग इस 'दीकुआंदि' के लिए तैयार हुए हैं। इससे हमारे समाज को कोई नुकसान नहीं होगा वरन् इन्जीनियर सायोब हमारे गाँव के कुछ लोगों को अपना नातेदार समझकर नौकरी–चाकरी दिलाने में मदद करेगा।

मानकी की बातचीत से सभी संतुष्ट हो गए। यह तय हुआ कि आंदि के बाद जब दयामनी अपने मायके वापस आयेगी तो पूरे गाँव को दो खस्सी और पाँच चाटु डियंग के साथ जिलु–मंडी का भोज दिया जायेगा

इधर रविवार को रणधीर सिंह सुबह में ही साधु को एक गाड़ी के साथ अपने परिवार को लाने के लिए गाँव भेज दिये। साथ ही, पूरा डाक बंगला मेहमानों के लिए रिजर्व कर दिया गया था। साधु अपनी पत्नी, दयामनी, मानकी और उसकी पत्नी के साथ चाईबासा आ गए। उसकी दोनों बेटियां अपने पति के साथ सोमवार को सीधे चाईबासा आनेवाली थी।

डाक बंगला में सभी को नास्ता कराया गया। रणधीर सिंह की पत्नी, बलराम की माँ आदि दयामनी को देखना चाहती थी। अतः रणधीर ने साधु को बुलाकर अपनी पत्नी आदि सबसे परिचय कराया। यह तय हुआ कि 4 बजे उनके परिवर के लोग दयामनी तथा उनके परिवार से मिलने जायेंगे।

दयामनी को उसकी माँ ने अच्छी साड़ी आदि में सजाकर तैयार कर दी थी। दयामनी भी शादी तय होने के बाद और अधिक आकर्षक लग रही थी। डाक बंगला में सभी के लिए छेनापायस, पनीर पकौड़ा आदि नास्ता के लिए तैयार किया गया था।

ठीक चार बजे सिंह जी का परिवार डाक बंगला पहुँचा। सभी ने उन

लोगों का जोहार कर स्वागत किया। दयामनी ने दोनों होनेवाली होंयर (सास) को पैर छूकर प्रणाम किया। बलराम का छोटा भाई भी साथ में था। ड्रॉइंग रूम में सभी बैठ गए। साधु ने अपनी पत्नी से उनका परिचय कराया। दयामनी के स्वस्थ और सुन्दर रूप को देखकर बलराम की माँ और चाची बहुत खुश थी। दोनों साधु की माँ से हिन्दी में बात कर रही थी। वह थोड़ा बहुत हिन्दी बोलती थी। फिर मनोरमा ने दयामनी को बुलाकर अपने बगल में बैठाकर बात करने लगी। दयामनी भी उन्हें किसी तरह हिन्दी में अपने और अपने परिवार के बारे में बताने लगी। मनोरमा अपनी होने वाली बहु के लिए एक सोने की सिकरी (हार) ले आई थीं, जिसे उपहार में देकर 'छेका' की रश्म उन्होंने पूरा किया। मानकी की पत्नी अधिक पढ़ी–लिखी थी। उसने मनोरमा और बलराम की माँ से बातें की। दोनों उन सीधे–साधे और विनम्र स्वभाव वाले साधु के परिवार के सदस्यों से काफी संतुष्ट थे।

थोड़ी देर में डाक बंगला चौकीदार ने सभी को नास्ता कराया। थोड़ी देर बाद रणधीर जी भी आये और सबसे मिले। उन्होंने चौकीदार से बाबर्ची को बुलवा कर उसे रात के खाना और सोमवार के खाना–नास्ता की व्यवस्था हेतु कुछ रूपये दे दिया। उसके बाद रणधीर जी अपने परिवार के साथ अपने बंगला चले आये।

मनोरमा और बलराम की माँ यशोदा ने शादी के सभी आभूषण और वस्त्र को देखकर उसकी तारीफ की। बलराम के लिए शेरवानी–सूट सिलवाया गया था। उसके छोटे भाई के लिए रेडीमेड सूट लिया गया था। सिंह जी ने अपनी पत्नी और भाभी के लिए भी साड़ी आदि मंगवा लिए थे।

सोमवार को चार बजे मनोरमा अपनी गोतनी (यशोदा) के साथ दयामनी की शादी के वस्त्र और आभूषण लेकर डाक बंगला पहुँच गई। दयामनी की दो बड़ी बहनें भी आयी थीं। दयामनी ने उनसे परिचय कराया।

दयामनी को एक कमरे में ले जाकर उसकी बहनों के साथ सास मनोरमा ने उसे दुलहन के रूप में सजाना शुरू किया। पीली बनारसी साड़ी, साया, ब्लाउज आदि के साथ उसे सभी आभूषण पहनाया गया। उसके बाद उसकी दीदी ने उसके घुंघराले केश को सुसज्जित किया। मनोरमा को लगा कि उनकी होने वाली बहु पूरी तरह छत्रानी (छत्रीय बहु) लग रही थी। उसे सजा कर मनोरमा और यशोदा अपने बंगला चली गई थीं।

शादी का मुहुर्त 6 बजे संध्या समय था। सिंह जी के पुरोहित पाठकजी, ठाकुर(नाई) के साथ पाँच बजे पहुँच गए थे। सिंहजी के एक कनीय अभियन्ता शादी में व्यवहृत पूजा सामग्री आदि की व्यवस्था में लगे हुए थे।

ठीक छः बजे डाक बंगला से तैयार होकर दयामनी दुल्हन के रूप में एक कार में बैठी। उसके साथ उसकी माँ, पिता, मानकी आदि भी बैठ कर काली मन्दिर आ गये। वहाँ मन्दिर के प्रांगण में सामयाना आदि लगाया गया था। लगभग 100 लोगों के बैठने हेतू कुर्सी आदि की व्यवस्था थी। शादी के बाद प्रीतिभोज की व्यवस्था डाक बंगला में की गई थी।

साधु भी धोती और सिल्केन कुर्ता में सिल्केन चादर के साथ समधी (बाला) के वेश भूषा में थे। डाक बंगला से आने के बाद सभी सामयाना में बैठ गए। दूसरी गाड़ी से रणधीर सिंह, बलराम उसका भाई, मनोरमा और यशोदा भी पूरी तरह सज–संवर कर काली मन्दिर आ गई थी। इस आदर्श शादी में कुछ पदाधिकारी, चाईबासा के कुछ प्रतिष्ठित व्यक्ति के साथ–साथ पत्रकार और मिडिया वाले भी आ गए थे।

थोड़ी देर में मन्त्र पाठ के साथ शादी की रश्में शुरू हुईं। पूजा–पाठ के बाद 'जयमाला' के रश्म के तहत दयामनी ने बलराम को पुष्पहार पहनाये और बलराम ने भी दयामनी को पुष्पहार पहनाया। इसके बाद मन्त्रोचार के साथ सिन्दुरी रकब (सिन्दुरदान) के तहत बलराम ने दयामनी की माँग में सिन्दूर लगाया। जय–जयकार के साथ उपस्थित लोगों के करतल ध्वनि के साथ विवाह सम्पन्न हो गया। बलराम सिंह और दयामनी सिंह (होनहागा) पति–पत्नी के रूप में सोफा पर विराजमान हुए। उनका फोटो सेशन कुछ देर चला। फिर सभी को अल्पाहार दिया गया। उसके बाद कोल्ड्रींक चला। लगभग 9 बजे शादी का कार्यक्रम सम्पन्न हो गया।

वहाँ से सभी लोग डाक बंगला आ गये जहाँ शादी के प्रीतिभोज का आयोजन किया गया था। डाक बंगला में आगन्तुक अतिथियों ने कई प्रकार के उपहार भेंट किये। विवाह के दूसरे दिन कई समाचार पत्रों में इस आदर्श विवाह का फोटो सहित विस्तार से समाचार प्रकाशित किया गया था।

इस प्रकार दयामनी होनहागा के स्थान पर दयामनी सिंह बन गई थी। बंगला के जिस रसोईघ्र में वह बाबर्ची का काम संभालती थी, उसी बंगला में वह सिंहजी की बहु और बलराम सिंह की धर्म पत्नी बन कर आ गई थी। साधुचरण होनहागा अपने साहब–कार्यपालक अभियन्ता–रणधीर सिंह का समधी बन गया था।

बंगला का एक कमरा वर–वधु के लिए 'कोहवर' के रूप में सजाया गया था। वहीं नये पलंग पर गद्दा, फूलदार चादर, रंगीन तकिया आदि सजाकर रखा गया था। नियमानुसार चौथे दिन 'चौठारी' की रश्म मनोरमा अपनी बहु दयामनी के साथ मन्दिर जाकर पूरा की।

इसके पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार साधु अपनी पुत्री दयामनी को विदाई कराकर घर ले गया। वहाँ उसी दिन पूरे गाँव को मेरोम जिलु (खस्सी का मांस), मंडी (भात) और डियंग का प्रीतिभोज आयोजित किया गया था। इस प्रीतिभोज की पूरी व्यवस्था डोबरो मानकी द्वारा की गई थी। गाँव के सभी लोग इस प्रीतिभोज में सपरिवार सामिल हुए थे। दूसरे दिन जिस कार से दयामनी आई थी, उसी कार से वापस अपने ससुराल चाईबासा चली गई।

कुछ समय बीत जाने के बाद जिला अवर निबन्धक, चाईबासा के कोर्ट में बलराम सिंह और दयामनी सिंह के विवाह का निबन्धन हुआ और उसका सील मोहर लगा विवाह प्रमाण पत्र मिल गया।

दो दिनों के बाद रणधीर सिंह अपने पूरे परिवार के साथ नई बहु को लेकर गाँव पहुँचे। वहाँ पूरे गाँव में खुशी की लहर फैल गई। सिंहजी उस गाँव के काफी प्रतिष्ठित जमींदार परिवार के सदस्य थे। वहाँ विधिवत परिछावन कर और दौरा में पैर रखकर दयामनी—नववधु को गृह प्रवेश कराया गया। दयामनी अपने ससुराल के इस नये परिवेश में आकर आश्चर्य चकित और रोमांचित थी। सिंगबोंगा ने उसे झोपड़ी से महल में पहुँचा दिया था। वह अपने दोनों सास के प्रेम सिंचित व्यवहार से अत्यन्त प्रसन्न थी।

दूसरे दिन घर के सामने 'सती चौरा (पूजास्थल) में उसे पूजा करने हेतु ले जाया गया। वहाँ एक आम का पेड़ था। उसे शादी में मंगल कामना के लिए 'उलि साखी' की पूजा याद आ गई। उसने अपनी सास से पीला सूता मांगकर आम की डाल में उसे बाँध कर नमन किया और देसावली बोंगा (ग्राम देवता) से याचना की कि उसका दाम्पत्य जीवन सुखी रहे।

इस तरह सौभाग्यवश 'दिकुआंदि' ने एक 'डिंडा कुइ' को एक धनाढ्य परिवार के कुलवधु के प्रतिष्ठित पद पर आसीन कर दिया।

(7)

कोल्हान में 'कोल विद्रोह' के इतिहास में 'सिरिंगसिया घाटी' में अंग्रेजों के साथ हो क्रान्तिकारियों बागुन पलटोन आदि सरदारों (मानकी मुंडा) के नेतृत्व में हुए गुरिल्लायुद्ध में अंग्रेज सैनिकों को परास्त होना पड़ा था जिसमें काफी संख्या में घुड़सवार सैनिक आदि मारे गए थे। कोल्हान में स्वतंत्रता मिलने के बाद इस विजय दिवस को उस क्षेत्र में हो क्रान्तिकारियों को श्रद्धांजलि देने के लिए मनाया जाता रहा है।

इस विजय दिवस का आयोजन एक बार जगरनाथपुर में किया गया था। इस अवसर पर अंग्रेजी शासन काल में राजतंत्र का शिकार हुए बहादुर हो युवक रितुई गोन्डइ सिंकु को भी श्रद्धांजलि दी गई थी। इस अवसर पर कोल्हान के अनेक पीड़ के मानकी मुंडा भी उपस्थित हुए थे। इसमें सिंगराय मानकी तथा पुरनिया पीड़ के डोबरो मानकी भी गये थे, जिनकी चर्चा पूर्व के अध्यायों में की गई है।

इस समारोह के समापन के बाद डोबरो मानकी अपने एक रिस्तेदार तेयंग (साला) बोरजो जोंको से मिलने नावामुंडी पीड़ में अवस्थित उनके गाँव चले गए थे। वहाँ बोरजो का समाचार लेकर दूसरे दिन वापस अपने गाँव चले गए थे।

बोरजो जोंको एक रेंगे हो (गरीब) चासी था और किरिबुरू लोहा खदान में काम भी करता था। घर में उसकी पत्नी जींगी कुइ और छोटी बेटी सुनीता जोंको रहती थी। वह लाइ हासु (पेट की बीमारी) से कई दिनों से छुट्टी लेकर घर पर जड़ी–बूटी से अपना इलाज करा रहा था।

उसके तेयंग (जीजा) डोबरो मानकी के जाने के दूसरे दिन सबेरे–सबेरे किरिबुरू के ठिकेदार का मुंशी राम सिंह बोरजो के घर आकर बोला– "बोरजो, ठिकेदार साहब तुम्हें किरिबुरू चलने के लिए बुलाया है। उसने तुम्हें अपनी बेटी को भी साथ लाने को कहा है।"

बोरजो–"मैं कई दिनों से लाइहासु से बीमार हूँ। अभी हमारी तबियत ठीक नहीं है। मैं एक दो–दिन बाद किरिबुरू चला जाऊँगा।"

रामसिंह –"तुम खुद चलकर बात कर लो नहीं तो वह गुस्सा हो जाएगा। उसका कुछ रूपया भी तुम्हारे पास बकाया है।"

उसकी पत्नी जींगी कुइ उसकी बातें सुन रही थी। उसने ठिकेदार बहादुर सिंह से जाकर मिल लेने को कहा। वह जानती थी कि बहादुर बहुत गुस्सैल आदमी है। नहीं जाने से वह बोरजो को काम से निकाल भी सकता है।

अन्ततः वह मुंशी के साथ ठिकेदार से मिलने चला गया और अपनी अस्वस्थता की बात कही। बहादुर सिंह उसकी हालत पर तरस खाकर उसे तीसरे दिन अन्य मजदूरों के साथ जाने का आदेश देकर उसे अपनी बेटी को साथ ले जाने को कहा। उसने कहा– "बड़ा साहब का यह हुकुम है।"

बोरजो को पहले भी ठिकेदार ने बताया था कि माइन्स मैनेजर मुखर्जी साहब की दाई अपना काम छोड़कर चली गई है। इसलिए उन्होंने एक लड़की खोजकर लाने को कहा है। ठिकेदार उसकी बेटी सुनीता को जानता था कि वह बहुत पहले पढ़ाई छोड़कर घर में ही रहती है। बहादुर सिंह ने बोरजो से कहा कि माइन्स मैनेजर मुखर्जी साहब काफी भद्र आदमी हैं। उनकी मेम साहब भी बहुत अच्छे स्वभाव की हैं। वहाँ उसकी बेटी अच्छी तरह रहकर रसोई आदि का काम करेगी और उसे पूरा पैसा मिलेगा।

बोरजो– "अच्छा, इसके लिए मैं उसकी एंगा (माँ) से बात करूँगा और सुनीता से भी पुछूँगा। यदि दोनों तैयार हो गई तो मैं उसे जरूर लेते जाऊँगा।"

बोरजो घर वापस आकर अपनी येरा (पत्नी) जींगी कुइ से ठिकेदार की बात बताई। उसने सुनीता से भी पूछा जो आठवीं क्लास के बाद पढ़ाई छोड़कर घर बैठ गई थी।

बोरजो के पास खेती के लिए थोड़ी जमीन थी। घर में कुछ बकरियाँ और मुर्गे–मुर्गियां थी। उसकी आर्थिक हालत अच्छी नहीं थी।

सुनीता एक बार किरिबुरू गई थी। वहाँ बाजार –हाट, बंगला आदि काफी अच्छा लगा था। मैंनेजर का बंगला भी देखी थी, जिसके सामने लॉन में फूल–फुलवाड़ी के साथ बागान में झूला भी लगा हुआ था। सुनीता का किशोरी मन किरिबुरू जाने और साहब के बंगला में रहने के साथ–साथ काम करने के लिए मचल उठा। उसने किरिबुरू जाने के लिए हाँ कह दी। उसकी माँ भी उसे किरिबुरू भेजने के लिए राजी हो गई।

बोरजो दो दिनों में अपनी पेट की बीमारी से मुक्त हो गया था। वह तीसरे दिन सुनीता के साथ जाकर राम सिंह से मिला। उसने अन्य

कुली–रेजा के साथ ट्रक से उसे किरिबुरू के लिए रवाना कर दिया।

बोरजो लगभग 5 बजे किरिबुरू पहुँच गया। किरिबुरू में उसके गाँव का बामिया पुरती भी काम करता था। वह कारखाना में मेकानिक था। बोरजो सुनीता के साथ उसके क्वाटर में जाकर उससे मिला। उसने बामिया से ठिकेदार से हुई बातचीत का हवाला देकर मैंनेजर साहब के बंगला पर चलने को कहा। रामसिंह भी वहाँ पहुँच गया था। उसने उसे कल सुबह में साहब के बंगला पर चलने की बात कही। बोरजो अपने साथ बामिया के घर में ही सुनीता के साथ ठहर गया।

दूसरे दिन रामसिंह मुंशी सबेरे आया और बोरजो और सुनीता को साथ लेकर मैनेजर साहब के बंगला पर गया। मैनेजर अमित मुखर्जी बाहर लॉन में टहल रहे थे। मुंशी ने गेट पर जाकर उन्हें सलाम किया। वे गेट के भीतर तीनों को बुला लिये। रामसिंह ने उनसे कहा–'सर यह बोरजो की बेटी सुनीता है। इसे आपके घर में काम करने के लिए हमारे ठिकेदार ने भेजा है।' बोरजो और सुनीता ने भी उन्हें 'जोहार' किया।

मुखर्जी साहब ने दोनों को बरामदे में ले जाकर बैठा दिया। रामसिंह भी वहीं बैठ गया। थोड़ी देर में मुखर्जी मेम साहब के साथ आये। तीनों ने उनको नमस्कार और जोहार किया।

मिसेज मुखर्जी सुनीता को देखकर बहुत खुश हुई। उनकी पहले की दाई विवाह करने चली गई थी। उन्हें किचेन आदि का काम स्वयं संभालना पड़ता था।

मिसेज मुखर्जी–'बेटी, तुम कहाँ तक पढ़ी लिखी हो? घर का काम–काज करती हो न?'

सुनीता–'मैं आठवीं क्लास तक पढ़ी हूँ। अपनी माँ के साथ मिलकर घर का सभी काम करती हूँ।'

मिसेज मुखर्जी ने तीनों को नास्ता करा दिया। मुंशी वहाँ से चला गया। बोरजो और सुनीता को उन्होंने बंगला के आउट हाउस में ठहरने की व्यवस्था अपने माली से करवा दी। सुनीता को लेकर वह अपने किचेन में गई। किचेन काफी बड़ा और सजा हुआ था। वास बेसीन के साथ पानी का नल आदि था। सुनीता ऐसा रसोई घर कभी नहीं देखी थी। सभी स्टील के बर्तन रैक पर सजे हुए थे।

मिसेज मुखर्जी उसे रसोई घर का काम समझा रही थी। उन्होंने कहा–'देखो बेटी, तुम इसे अपना घर समझना। यहाँ काम करने में कहीं दिक्कत हो तो मुझे बताना। यहाँ बंगला की सफाई आदि के लिए अलग

नौकर, माली आदि हैं। तुम्हें हमारे किचेन को संभालने में ही मदद करना होगा।'

उस रात बोरजो और सुनीता वहीं आउट हाउस में खाना खाकर ठहर गये। सुबह राम सिंह 8 बजे आया और बोरजो को उसे काम पर ले गया। उस माइन्स में बोरजो के गाँव और आस–पास के कई रेजा–कुली काम में लगे हुए थे। सभी खदान से लेकर लोहा पत्थर को ढोने और उसे ट्रक आदि पर ढोलाई एवं लदाई का काम करते थे। बोरजो को भी वहाँ काम में लगा दिया गया।

बोरजो भी दिनभर काम करने के बाद बामिया के क्वाटर में चला गया था। बामिया भी अकेला रहता था। बोरजो को भी वहीं रहने की व्यवस्था कर दिया था। दोनों मिलकर रात में खाना खाकर सो गए थे।

इधर सुनीता मिसेज मुखर्जी के साथ रसोईघर के काम को समझ रही थी। खाना बनाने के लिए अन्य बर्तन के साथ प्रेशर कुकर, मिक्सी आदि के व्यवहार करने की जानकारी दे रही थीं।

सुनीता ने रसोई घर की साफ–सफाई कर मिसेज मुखर्जी के साथ मिलकर सुबह के लिए नास्ता–चाय तैयार किया। ट्रे में चाय लेकर मुखर्जी साहब को ड्रॉईंग रूम में दे आई।

मुखर्जी साहब की एक बेटी मृणालिनी और एक बेटा वरूण था। दोनों सुबह में नास्ता कर टिफीन के लिए लंच आदि लेकर स्कूल चले गए। सुनीता गाँव से आई थी। इसलिए वह शहरी जीवन और रहन–सहन से अपरिचित थी। साथ ही, मुखर्जी साहब के घर में बंगला बोली जाती थी। केवल सुनीता से सभी हिन्दी में बातें करते थे। न वे शुद्ध हिन्दी बोल पाते थे और न सुनीता ही उतनी अच्छी हिन्दी बोल पाती थी। परन्तु उसे विश्वास था कि यहाँ रहकर वह हिन्दी के साथ–साथ बंगला बोलना भी सीख जायेगी।

मिसेज अनामिका मुखर्जी बोलपुर (प0 बंगाल) की रहने वाली थी और विश्वभारती से ग्रैजुएशन की थीं। बंगला लोकगीत और संगीत में उनकी विशेष मनोरूचि थी। बाउल लोक संगीत और नृत्य में वे पारंगत थीं। उनके पिता भी बोलपुर में शिक्षक थे।

मिसेज मुखर्जी सुनीता के विनम्र स्वभाव और आचार–व्यवहार से काफी सन्तुष्ट थीं। वे सुनीता को प्यार से 'सोनी' कहा करती थीं। उनके दोनों बेटा–बेटी भी सुनीता से काफी घुल–मिल गए थे।

उसे मुखर्जी साहब के साथ रहते–रहते छः मास हो गए थे। अब वह उनके किचेन का हर काम और उपकरणों का व्यवहार करना सीख गई थी।

अब उसे वेज और नन–वेज (शाकाहारी और मांसाहारी) व्यंजन (खाना) बनाने में कोई दिक्कत नहीं होती थी। मछली की कई वेराईटी बनाना वह सीख गई थी। बंगाली परिवार में 'माछ–भात' बहुत प्रमुख और स्वादिष्ट भोजन माना जाता है। मिसेज मुखर्जी से बहुत जल्द और काफी रूचि लेकर खाना बनाने में बहुत हद तक सक्षम हो गई थी।

सुनीता छुट्टी के दिन मृणालिनी के साथ उसके अध्ययन कक्ष में उससे पढ़ाई–लिखाई की बातें करती थी। उसके साथ बैठकर उसकी नवाँ क्लास की पुस्तकें हिन्दी, अंग्रेजी आदि भी देखती थी। उसके मन में भी अपनी पढ़ाई बीच में छोड़ने का दुख था।

अब जनवरी का महीना आ गया था। वहाँ सभी लोग मुखर्जी साहब को नये वर्ष की बाधाई देने आने लगे थे। नये वर्ष के अवसर पर माईन्स के क्लब में विशेष पार्टी का आयोजन किया गया था। मुखर्जी साहब सपरिवार क्लब में गए थे। सुनीता भी साथ में थी। वहाँ देर रात तक खाना–पीना के साथ–साथ गीत–संगीत का भी कार्यक्रम चला। मिसेज मुखर्जी ने भी अपने मधुर स्वर में कई बंगला गीत प्रस्तुत की। रात 11 बजे सभी बंगला लौट आये। सुनीता के जीवन में नये वर्ष के आयोजन को देखने का वह पहला मौका था। उसे इस कार्यक्रम में बहुत ही सुखद अनुभव हुआ।

बोरजो एक बार अपनी पत्नी जींगी कुइ को भी हाट के दिन किरिबुरू लेकर आया था और हाट दिखला कर वह मुखर्जी साहब के बंगला में सुनीता से मिलने लेकर गया था। सुनीता उन्हें गेट पर ही मिल गई और दोनें को 'जोहार' कर भीतर ले गई। दोनों को बरामदा में चौकी पर बैठा कर भीतर जाकर मेम साहब को बताया कि उसके माता–पिता आये हैं।

मिसेज मुखर्जी उनसे मिलने बाहर आ गई। दोनों ने उन्हें 'जोहार' किया। मिसेज मुखर्जी वहीं कुर्सी पर बैठकर दोनों का हाल–समाचार पूछने लगीं। सुनीता भीतर जाकर दो ग्लास पानी ट्रे में लेकर आई। जींगी ने पूछा–'सुनीता ठीक से काम करती है न?'

मिसेज मुखर्जी–'सुनीता बहुत अच्छी लड़की है और सभी काम मन से करती है। वह साहब को समय पर चाय, नास्ता आदि बनाकर देती है। अब वह हमलोगों के मन मुताबिक खाना भी अच्छी तरह बना लेती है।'

अपनी मालकीन के कहने पर वह अपने माँ–बाप के लिए प्लेट में मीठाई और नमकीन बिस्कुट लाकर दी। चाय बनाकर भी ले आई। दोनों नास्ता कर चाय पी लिये। मिसेज मुखर्जी भीतर चली गईं।

जींगी ने देखा–सुनीता नया सलवार–समीज पहनी थी। वह पहले से

अधिक अच्छी लग रही थी। उसने सुनीता से पूछा–'चिया बिटी, सायोब ओवा पाते बुगिन् ते टइकना? जोमलगिड मांडी–दालि उतु एसुपुरः एम तना चि।' (बेटी तुम साहेब के बंगला में अच्छी तरह रहती हो न? यहाँ तुम्हें भरपेट दाल, भात, सब्जी आदि खाने को मिलता है न?

सुनीता –'इया .... इया! नेन सायोब ओवा पाते एसु बुगिते टइकेना। मेम सायोब दो एसु बुगिन मेनाचि। (मैं साहब के बंगला में बहुत अच्छी तरह हूँ। मेम साहब बहुत ही अच्छी हैं।)

उसने बताया कि साहेब और मेम साहब उसे बेटी की तरह मानते हैं और कभी भी डांटते नहीं हैं। वे लोग जहाँ घूमने या पार्टी में जाते हैं, उसे भी ले जाते हैं। उन्होंने मेरे पहनने के लिए दो सेट लिजा (कपड़ा) खरीद दिए हैं।

बोरजो ने कहा–'सुनीता, फरवरी के पहला हप्ता में गुरूवार को 'मागे पोरोब' शुरू होगा। तुम्हें भी चार दिन छुट्टी लेकर चलना होगा। तुम अपने सायोब और मेम सायोब से बात कर लोगी।'

इस बीच मिसेज मुखर्जी आ गई। उन्होंने बोरजो को एक लिफाफा देकर कहा– इसमें सुनीता के काम के लिये पाँच सौ टाका (रूपया) है, इसे रख लो।

बोरजो उसे रखकर बोला–'मेम सायोब, फरवरी महीना में मागे पोरोब हमारे गाँव में होगा। उसमें हमारी बीटी को गाँव जाने के लिए चार दिन के लिए छुट्टी देना होगा। यह हम लोगों का सबसे मरङ (बड़ा) पोरोब है।

मिसेज मुखर्जी –'ठीक है, सोनी माघे पर्व में जरूर जायेगी। तुम आकर उसे ले जाओगे और पर्व बाद वापस ला दोगे।'

उसके बाद बोरजो जींगी के साथ ट्रक से वापस लौटने के लिए मेम साहब को 'जोहार' कर चल दिया। मिसेज मुखर्जी से मिलकर और पाँच सौ रूपया पाकर दोनों बहुत खुश थे।

निश्चित तिथि और दिन (बुधवार) को बोरजो अपनी ड्यूटी से वापस आकर मुखर्जी साहब के बंगला पर सुनीता को लेने आया। मिसेज मुखर्जी ने मागे पर्व के लिए बोरजो के लिये नई धोती और सुनीता के लिए सलवार, समीज और ओढनी मंगाकर रखी थी। उन्होंने नये वस्त्र को लाकर बोरजो को दिया और पर्व मनाने के लिए सुनीता को दो सौ रूपये भी दिए।

बोरजो–सुनीता मिसेज मुखर्जी को जोहार कर अपने गाँव के लिए चल दिए थे। दोनों काफी खुश थे। दोनों कम्पनी के ट्रक से नवामुंडी के लिए रवाना हुए और वहाँ पहुँच कर अपने गाँव के लिए चल दिए थे।

मागे चंडु (माघ महीना) आते ही मागे पर्व मनाने की तैयारी इस क्षेत्र में शुरू हो गई थी। जींगी भी इस अवसर पर अपने घर को सफेद, लाल आदि रंगीन मिट्टी को पोतकर काफी आकर्षक बना दी थी। गाँव का अखड़ा भी लीप–पोतकर तैयार कर दिया गया था, जहाँ मागे पर्व के अवसर पर सामूहिक नृत्य का आयोजन किया जाना था। गाँव के सभी घर रंगाई–पोताई से काफी सुन्दर और आर्कषक लग रहे थे।

बोरजो और सुनीता भी संध्या समय घर आ गए थे। मागे पर्व के अवसर पर उसके मामू (फुफा) और हतोम (फुआ) अपने बच्चों के साथ बोरजो के घर आ गए थे। सुनीता को नये वेश–भूषा में देखकर सभी काफी खुश हुए। उसके आधुनिक सलवार–समीज के साथ–साथ उसके केश सज्जा से बंगला संस्कृति का आभास मिल रहा था।

पाँच दिनों तक चलने वाला यह पर्व 'कोलोम बोंगा' (खलिहानि देवता) की पूजा के बाद जब नया धान घर में आ जाता है, तब इस मरङ (बड़ा) पर्व का आयोजन किया जाता है। इस अवसर पर गाँव का दिउरी (पुजारी) जहेरथान (पूजा स्थल) में गेलबोरोम (नवग्रह एवं मरंग बोंगा) की पूजा के लिए अल्पना या खोंड बनाकर पूजा शुरू करता है। इस अवसर पर गाँव की सीमा पर भी मुर्गा की बलि देकर बाहरी प्रेतों को रोकने के लिए अनुष्ठान करने का विधान है। 'मरंग पर्व' के दिन से गाँव में मागे पर्व के अवसर पर नाच–गान के साथ–साथ 'कुपुल एमचेड' (मेहमानों का स्वागत) का विधान है, जब सभी को 'तिल डियंग' के बाद प्रसाद के रूप में डियंग दिया जाता है। उसके बाद सामूहिक नृत्य का आयोजन मान्दर और नगाड़ा के ताल पर मागे दुरंग (माघे गीत) के साथ शुरू हो जाता है। उसके बाद मेरोमजीलु, मांडी आदि (खस्सी का मांस, भात आदि) से मेहमानों और ग्रामवासियों का सहभोज सम्पन्न होता है।

बोरजो भी इस पर्व के लिए एक खस्सी और दो चाटु (घड़ा) डियंग तैयार कर रखा था। उसके घर अन्य मेहमानों के साथ बिमल जामुदा भी अपनी भाभी के साथ उलिगुटु गाँव से आया था। उसकी हिली (भाभी) का मायका' इसी गाँव में था। उसका परिचय सुनीता से भी हो गया था। वह जब पढ़ रही थी तभी से बिमल से उसकी दोस्ती हो गई थी। वह अभी दसवीं पास कर प्लस टू का विद्यार्थी था। उसका पिता पांडु जामुदा अपने गाँव का मुंडा और बड़ा चासी (किसान) था।

वह भी सुनीता से आकर मिला। जब से सुनीता किरिबुरू गई थी, उससे वह नहीं मिला था। सुनीता को नये आकर्षक वेश–भूषा में देखकर

काफी खुश था। उसे मालूम हुआ था कि वह माइन्स मैनेजर के घर में काम करती है।

सुनीता और बिमल एक दूसरे से काफी दिनों पर मिले थे। दोनों कुछ दूर जाकर एक दूसरे का समाचार की जानकारी ले रहे थे। बिमल ने सुनीता से पूछा– 'तुम अचानक किरिबुरू काम करने कैसे चली गई?'

सुनीता–'मेरे पिता से मैनेजर साहब ने अपने घर के काम के लिए मुझे लाने के लिए कहा था। हमारे पिता को माइन्स में काम दिलाने वाला ठिकेदार के दबाव में आकर वह राजी हो गया। परन्तु वहाँ जाने पर मैनेजर मुखर्जी और उनकी पत्नी काफी अच्छे स्वभाव और आचार–व्यवहार की लगी और मुझे अपनी बेटी की तरह मानने लगीं।'

बिमल–'पर तुम कब तक इस तरह उनकी दासी बनकर काम करती रहोगी। तुम वहाँ रहकर अपनी आगे की पढ़ाई के लिए भी सोचो। वहाँ उनके घर पर काम करते–करते तुम अपनी पढ़ाई प्राइवेट छात्रा के रूप में पूरा कर सकती हो।'

सुनीता–'मैं भी यही सोच रही हूँ। वहाँ साहेब की बेटी मृणालिनी नवीं कक्षा में है? वह भी मुझे अपनी बहन की तरह मानती है। उसकी किताबें मैं अक्सर देखती रहती हूँ। मैं अपनी आगे की पढ़ाई के सम्बन्ध में मागे पर्व से लौटने के बाद मेम साहब से बात करूँगी।'

बिमल–'सचमुच तुम्हें अच्छा मौका मिला है और तुम्हें इस अवसर का फायदा अवश्य उठाना चाहिए।'

इसके बाद बिमल सुनीता के साथ उसके घर गया। वहाँ से सभी अखड़ा में चले गए, जहाँ गाँव के सभी सेपेड (युवक) और हपानुम (युवतियाँ) नृत्य के लिए एकत्रित थे। सुनीता महिलाओं की पंक्ति में सामिल हो गई और बिमल युवकों की पंक्ति में आ गया था। बिमल मान्दर भी काफी अच्छा बजाता था। अतः वह एक मान्दर लेकर ताल देना शुरू किया। एक साथ कई मान्दर और नगाड़ा की ध्वनि से पूरा वातावरण संगीतमय हो गया। 'मागे गोआरि' के गीत दिउरी के साथ दो युवक शुरू किये –

जोअर तनाले सिङबोंगा
गोअर तनाले सिङबोंगा,
नेले कागेया जापननू
सुकुदिन सी एमा लेना।
जोअर जोअर सिङ बोंगा
तिल डियंग को बाइयोकाना

जोअर जोअर ओते एंगा
तिल डियंग को एमातना।

अर्थ – हे सिङ बोंगा! हमलोग आपको बार–बार जोहार (नमन) करते हैं। हमलोगों को हमेशा खुशी रखना। आपके लिए पवित्र डियंग बनाया गया है जिसे अर्पित करते हैं। हे धरती एंगा (माता)! आपको पवित्र डियंग अर्पित करते हैं।

इस गोआरि के बाद युवकों ने मागे का दूसरा गीत शुरू कर दिया था–

रांसा रांसा हुजुः आकना मागे पोरोब
सबिन हो को नइकि लगिड़ मागे पोरोब।
हागा पागा सबिन लगिड़ मागे पोरोब
हापानुम ओन्डो सेपेड़ लगिड़ मागे पोरोब।
जायरकांडा संस्कृति मेनाइ मागे पोरोब
हो होन को चिरगल मेनः मागे पोरोब।

अर्थ – हँसी–खुशी का मागे पर्व आ गया है, सभी को सुखी–सम्पन्न करनेवाला मागे पर्व आ गया है। भाई–बहन और युवक–युवती आदि का पर्व आ गया है। यह पर्व झारखण्ड की संस्कृति और यह हो लोगों की अस्मिता की पहचान है।

इसके बाद भी अनेक हास्य और व्यंग्य के गीतों के साथ नृत्य का दौर काफी देर तक चलता रहा।

कुछ देर बाद मागे भोज के लिए सभी मेहमान आदि को बैठा कर पत्तल और दोना में मांडी (भात) के साथ सुस्वादु मेरोम जिलु (खस्सी का मांस) परोसा गया। बासी पर्व के दिन भी खान–पान और नाच गान चलता रहा। 'हर मगया' के साथ मेहमान भी विदा हुए।

अन्तिम दिन बिमल और सुनीता मिले और आम के बगीचा में बहुत देर तक बातचीत हुई।

बिमल पहले नहीं चाहता था कि सुनीता, जिससे वह प्यार करता है, दीकु साहब के यहाँ काम करे। परन्तु मुखर्जी साहेब और उनकी पत्नी मिसेज मुखर्जी के आचार–व्यवहार तथा उसके प्रति अपनापन से उसका विचार बदल गया। सुनीता ने बिमल को बताया कि मिसेज मुखर्जी उसे सोनी बेटी कहकर बुलाती हैं। मागे पर्व के लिए उन्होंने उसे इस सुन्दर छींटदार सलवार समीज और ओढ़नी खरीदकर दी है। आशा करते हैं कि समय आने पर वे मुझे आगे की पढ़ाई में भी मदद करेंगी।

अब बिमल अपने गाँव जाने के लिए विदा मांगा और किरिबुरू आकर

उससे मिलने का वादा किया। दोनों हाथ मिला कर जोहार किए। बिमल सुनीता के माता–पिता को जोहार कर विदा हुआ।

मागे पर्व मनाकर सुनीता अपने पिता के साथ मुखर्जी साहब के बंगला में वापस आ गई थी। बिमल से मिलने के बाद उसके मन में भी आगे पढ़ाई करने की इच्छा जागृत हो गई थी।

सुनीता मृणालिनी से बहुत घुल–मिल गई थी। वह उसे स्कूल बस तक छोड़ने और वापस लाने प्रतिदिन जाती थी। दोनों में अच्छी दोस्ती हो गई थी। मृणालिनी पढ़ने में काफी तेज थी। अब वह 9वीं कक्षा को प्रथम श्रेणी से पास कर दसम् कक्षा में चली गई थी।

एक रविवार को मृणालिनी के विद्यालय में स्थापना दिवस समारोह का आयोजन किया गया था। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मुखर्जी साहब अपने पूरे परिवार के साथ कार से विद्यालय पहुँचे थे। सुनीता को भी मिसेज मुखर्जी अपने साथ ले गई थीं। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम के रूप में नृत्य प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया था, जिसमें एकल, युगल और समूह नृत्य का कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इसमें बंगला, हिन्दी और हो गीत–नृत्य का कार्यक्रम प्रस्तुत किया जा रहा था।

इस कार्यक्रम के अन्तिम चरण में छात्र–छात्राओं द्वारा 'हो' समूह नृत्य प्रस्तुत किया जाने वाला था। सुनीता की एक–दो परिचित हो लड़कियाँ भी भाग ले रही थीं। सुनीता का मन भी इस नृत्य में सामिल होने के लिए मचल रहा था।

सुनीता ने धीरे से मिसेज मुखर्जी से कहा–'माँजी, मुझे भी 'हो' डांस अच्छी तरह आता है। मैं भी इस डांस में भाग लेना चाहती हूँ।'

मिसेज मुखर्जी ने मंच संचालिका को बुलाकर कहा–'देखिये, यह सुनीता हमारे बाड़ी में रहती है और 'हो' जाति की पढ़ी–लिखी लड़की है। यह भी इस ग्रुप डांस में भाग लेना चाहती है।'

शिक्षिका–'ठीक है मैडम, मैं इसे मेकअप रूम में ले जाकर तैयार करके लाती हूँ। यह भी ग्रुप डांस में सामिल होगी।'

कुछ देर में सुनीता सज–धज कर आ गई और ग्रुप डांस में सामिल हो गई।

नगाड़ा, मान्दर और बांसुरी पर 'हो' गीत के साथ नृत्य शुरू हुआ। इस नृत्य का लोगों ने ताली बजाकर स्वागत किया। सभी छात्र–छात्राओं के साथ सुनीता का नृत्य भी बिना रिर्हसल के काफी अच्छा रहा।

उसके पूर्व कत्थक नृत्य में कई लड़कियाँ भाग ली थीं, जिसमें

मृणालिनी का नृत्य सर्वश्रेष्ठ रहा था।

पुरस्कार वितरण के समय नृत्य में भाग लेने वाले सभी छात्र–छात्राओं को पुरस्कृत किया गया था। सुनीता को 'गेस्ट आर्टिस्ट' के रूप में मुखर्जी साहब ने पुरस्कृत किया था।

मृणालिनी सुनीता के नृत्य से काफी प्रसन्न थी और सुनीता भी पहली बार मृणालिनी द्वारा प्रस्तुत कत्थक नृत्य का आनन्द उठाई थी। इस कार्यक्रम के बाद मृणालिनी सुनीता के और निकट आ गई थी।

एक छुट्टी के दिन मृणालिनी अपने अध्ययन कक्ष में अपनी नवम् वर्ग की पुस्तकों को अलग रैक में रख रही थी। सुनीता भी उसकी मदद कर रही थी। जब किताबें सज गई, तब सुनीता ने मृणालिनी से कहा–'दीदी, मैं आठवीं पास कर पढ़ाई छोड़ दी थी। पर आपके साथ रहकर मैं अपनी पढ़ाई फिर से शुरू करना चाहती हूँ। मैं आप की मदद से नवीं क्लास के लिए पढ़ाई शुरू करना चाहूँगी।'

मृणालिनी–'लेकिन तुम्हें तो स्कूल जाना पड़ेगा। रसोई के काम–काज के साथ यह कैसे करोगी?'

सुनीता –'नहीं दीदी, मैं स्कूल नहीं जाकर आपके घर में ही प्राइवेट छात्रा बनकर पढ़ूँगी। आपसे केवल अपनी पुस्तकों के साथ पढ़ने में मदद मिलेगी। जहाँ समझने में दिक्कत होगी, आप से पूछ लूँगी।'

मृणालिनी–'ठीक है, मैं पूरी तरह से मदद करूँगी। लेकिन इस सम्बन्ध में तुम हमारी मम्मी और पापा से बात कर लोगी।'

सुनीता–'ठीक है दीदी, मैं माँजी से कहूँगी कि मैं घर का काम पूरा करने के बाद ही रात में पढ़ाई करूँगी।'

मृणालिनी ने एक अलग रैक में अपनी नवीं कक्षा के किताबें सजा दी थीं। उसने सुनीता को बताया कि इन किताबों के अलावा भी कुछ किताबें लेनी पड़ेंगी। उन्हें पापा बाजार से मंगा देंगे।

एक दिन साम को मुखर्जी साहब अपनी मेम साहब के साथ बैठकर हँसी–मजाक कर रहे थे। सुनीता उनके लिए चाय एवं नास्ता लाकर रख दी थी। उसे मिसेज मुखर्जी ने कुछ बिस्कुट देकर खाने को कहा।

जब दोनों चाय पी लिए तो सुनीता ने मुखर्जी साहब से कहा–'सायोब जी, मैं आठवीं पास हूँ और आपके घर में रहकर थोड़ा आगे पढ़ना चाहती हूँ। मृणालिनी दीदी की मदद से मैं नवीं क्लास की परीक्षा की तैयारी करना चाहती हूँ। रसोई घर आदि का काम पूरा कर मैं रात में पढ़ाई करूँगी। माँजी को कोई असुविधा नहीं होने दूँगी।'

मिसेज मुखर्जी ने मुखर्जी साहब से बंगला में कहा—'आमार मोने छिलो कि एई छेलीर व्यवहार दासी मतुम आछे ना। इयार संस्कार खूब भालो। एई यदि पोड़ते चाय तो निश्चयी इया के पढ़ाते होबे।'

(अर्थ—पहले मेरे मन में लगा था कि इस लड़की का आचार—व्यवहार 'दाई जैसे नहीं है। इसका संस्कार काफी अच्छा है। यदि यह पढ़ना चाहेगी तो इसे अवश्य पढ़ाया जायेगा।)

मिस्टर मुखर्जी—'एइ तुमार सोती कोथा। एटा खूब भालो काज। आमियो इया के भालो कोरे सपोर्ट कोरबो।'

(अर्थ—यह तुम्हारी सच्ची बात और विचार है। यह बहुत ही अच्छा और भला कार्य है। मैं भी इसमें सुनीता को काफी मदद करूँगा।)

सुनीता दोनों में हुई बांगला भाषा की बातें समझ नहीं सकी। परन्तु उनके आव—भाव से लगा कि दोनों उसके पक्ष में ही बातें कर रहे थे।

मिसेज मुखर्जी ने सुनीता से कहा—'ठीक है, सोनी, तुम घर में ही अपनी पढ़ाई शुरू कर दोगी। हमारी खोखी (बेटी) मोनी (मृणालिनी) अपनी नाइन्थ की किताबें तुम्हें पढ़ने के लिए दे देगी। कुछ नई किताबें भी बाजार से मंगा दूँगी। तुम्हें प्राईवेट स्टुडेन्ट के रूप में साहब परीक्षा देने का परमीशन दिला देंगे। मोनी के प्राईवेट टीचर भी तुम्हारी पढ़ाई में मदद करेंगे।'

सुनीता—'सायोब, मैं किचेन का सारा काम करने के बाद रात में पढ़ूँगी। माँजी को कोई असुविधा नहीं होगी।'

मिसेज मुखर्जी—'सोनी बेटी, तुम्हारे काम में हमारा माली भी मदद करेगा। खाना बनाने में मैं स्वयं कुछ समय दूँगी। मुझे लगता है कि पिछले जन्म में तुम जरूरी हमारी छेली(बेटी) रही होगी, इसी कारण मेरे घर में तुम फिर से बेटी बन कर आ गई हो। अब तुम जितना आगे पढ़ना चाहोगी, हमलोग मोनी और वरूण की तरह तुम्हें भी पढ़ायेंगे।'

इतना सुनकर सोनी बहुत खुश हुई। उसको लगा कि मेरे भाग्य से ये दोनों हमारे नए अपुङ (पिता) और एंगा (माँ) मिल गए। उसने अपने इस सौभाग्य के लिए मन ही मन सिङबोंगा और जयरा एरा को नमन किया। उसे यह भी विश्वास हो गया कि मोनी दीदी भी पढ़ाई में पूरा मदद करेगी।

वह चाय का कप प्लेट आदि रसोई धर में ले जाकर रख दी। मृणालिनी अपने कमरे में थी। सुनीता दौड़ी—दौड़ी उसके कमरे में जाकर बोली—'मोनी दीदी, सायोब और माँजी ने मुझे आगे पढ़ने की मंजूरी दे दी। अब मैं भी प्राईवेट से पढ़कर नवां वर्ग की परीक्षा दे सकूँगी। तुम मुझे पढ़ाई में मदद जरूर करोगी।'

मृणालिनी–'ठीक है सोनी, मैं तुम्हें पूरी तरह मदद करूँगी। मैं अपनी नाइन्थ की सभी बुक्स तुम्हारे कमरे में रखवा दूँगी। पापा से कहकर तुम्हारे कमरे में टेबुल–कुर्सी भी तुम्हारे पढ़ने के लिए रखवा दूँगी। हमें ट्यूशन पढ़ाने वाले सर भी तुम्हें मैथ(गणित) और अंग्रेजी में विशेष रूप से गाइड करेंगे।'

सुनीता –'आप कितनी अच्छी अजि(दीदी) हैं। मैं आपको हाथ जोड़कर जोहार करती हूँ।'

मोनी–'चलो, आओ हम दोनों चल के इसी खुशी में थोड़ी देर झूला झूलें।'

दूसरे दिन मुखर्जी साहब अपने स्टाफ से सुनीता के लिए हिन्दी, अंग्रेजी, गणित आदि के लिए दो दर्जन कॉपी, लीड पेन आदि मंगवा दिए। उसके कमरे में एक रैक, टेबुल और कुर्सी भी लगवा दिए। उसकी पढ़ाई के लिए एक टेबुल लैंप भी आ गया। पुस्तकों का रैक मृणालिनी ने माली से उसके कमरे में भिजवा दिया था। इस प्रकार सुनीता का एक विद्यार्थी के रूप में पुनर्जन्म हुआ, जो उसके उज्जवल भविष्य का संकेत था।

उसकी पढ़ाई शुरू होने के लगभग एक माह बाद उसका दोस्त बिमल जामुदा एक दिन किरिबुरू अपने एक काका(चाचा) किशुन जामुदा के पास आया था। उसका चाचा कारखाना में मेकानिक था और एक क्वाटर में रहता था। उस दिन देर से आने के कारण वह अपने चाचा के साथ रात में रूक गया था।

दूसरे दिन सुबह में अपने चाचा किशुन जामुदा के साथ वह मुखर्जी साहब के बंगला पर सुनीता से मिलने गया।

साहब के बागान में एक चपरासी सफाई का काम कर रहा था। वह किशुन को पहचानता था। गेट पर किशुन को देखकर जोहार किया और उसे बुलाकर बागान में ले गया। किशुन ने बताया कि उसका भतीजा बिमल साहब के घर में काम करने वाली सुनीता से मिलने आया है। वह सुनीता का बचपन का दोस्त है।

चपरासी ने दोनों को बरामदे में बैठाया और भीतर जाकर सुनीता को बुला लाया।

सुनीता ने दोनों को हाथ जोड़कर जोहार किया। बिमल ने सुनीता से अपने चाचा का परिचय कराया।

इसके बाद मिसेज मुखर्जी बाहर आईं तो दोनों ने उनको जोहार किया। सुनीता ने कहा–'माँजी यह मेरा सहिया (दोस्त) बिमल है और ये उसके काका हैं, जो यहाँ कारखाना में काम करते हैं।'

मिसेज मुखर्जी सुनीता को भीतर ले जाकर नास्ता भेज दीं। दोनों नास्ता कर चाय पी लिये। बिमल के चाचा उसे बंगला पर छोड़कर अपनी ड्यूटी पर चले गए।

मिसेज मुखर्जी ने बिमल से उसके विषय में पूछताछ की। उसने बताया कि अभी वह बारहवीं की परीक्षा देगा। वह सुनीता का बचपन का दोस्त है और दोनों साथ पढ़ते थे।

मिसेज मुखर्जी– 'सुनीता, बिमल को अपने कमरे में ले जाकर बैठाओ।' ऐसा कहकर वे भीतर चली गई।

सुनीता बिमल को अपने आउट हाउस के कमरे में ले गई। उसे लगा कि यह किसी विद्यार्थी का कमरा है। बिमल को सुनीता ने बताया कि हमारे सायोब ने मुझे नाइन्थ क्लास की परीक्षा की तैयारी करने के लिए पुस्तकों की व्यवस्था कर दी। माँजी भी मुझे पढ़ने के लिए समय दे रही हैं। उनकी बेटी मृणालिनी दसवीं की छात्रा है। उसने नवीं क्लास की सभी किताबें मुझे दे दी हैं।

इससे बिमल को हार्दिक खुशी हुई कि उसकी प्रेरणा से सुनीता ने अपनी आधी–अधूरी पढ़ाई को पूरा करने में दिलोजान से लग गई है।

बिमल–'सचमुच सुनीता, आज जैसी खुशी मुझे पहले कभी नहीं हुई थी। आशा है, तुम अपनी मेहनत और लगन से अपनी अधूरी पढ़ाई पूरी कर लोगी।'

सुनीता–'मुझे भी विश्वास हो रहा है कि सायोब, माँजी और मोनी दीदी की मदद से मैं अपनी पढ़ाई पूरी कर लूँगी।'

वह बोली–'अच्छा बिमल तुम अपनी पढ़ाई के विषय में भी बताओ।'

बिमल–'मैं भी बारहवीं (+2) की परीक्षा की तैयारी में लगा हूँ। फार्म भर चुका हूँ। पढ़ाई आदि में व्यस्त रहने के कारण तुमसे मिलने में देर हुई। अब मैं तुम से मिलकर सन्तुष्ट हुआ।'

सुनीता – 'मै भी चाहती हूँ कि तुम बारहवीं की परीक्षा में अच्छे नम्बर से पास करो। अब हमदोनों दोस्तों का भाग्य परीक्षा से ही जुड़ गया है।'

बिमल–'ठीक है सुनीता, मुझे आज ही घर लौट जाना है। अब मैं अलविदा चाहता हूँ। समय निकाल कर फिर मिलूँगा। तुम अपनी पढ़ाई पर पूरा ध्यान देना।'

इसके बाद दोनों कमरे से बाहर आए। दोनों ने हाथ मिलाकर एक दूसरे को जोहार किया। बिमल वहाँ से निकल कर अपने चाचा से मिलने चला गया।

बिमल को सुनीता से मिलकर विश्वास हो गया था कि वह अपने लक्ष्य को पाने में अवश्य सफल होगी और मैट्रिक पास कर वह नये जीवन में प्रवेश करेगी।

अब बिमल के मन में सुनीता के लिए प्यार का जो बीजारोपण हुआ था अब अंकुरित होकर हरित–भरित पौध के रूप में विकसित होने लगा था। यह उसके और सुनीता के भावी प्रेम संबंधों का संकेत था। वह सुनीता में अपनी प्रेमिका के साथ–साथ भावी येरा (पत्नी) होने की भी परिकल्पलना कर रहा था। वह हृदय से सुनीता को एक पूर्ण शिक्षित डिंडा कुइ के रूप में देखना चाहता था, ताकि वह उसके जीवन में एक सुयोग्य पत्नी बनकर आवे।

सुनीता भी बिमल को एक अच्छा और चरित्रवान दोस्त (सहिया) मानती थी, जो उसके जीवन में एक प्रेरक बन कर आया और उसे संघर्ष करते हुए शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। अब उसके मन में भी बिमल के प्रति प्यार का बीज अंकुरित होने लगा था। वह जानती थी कि वह अपने को योग्य बनाकर भावी जीवन में बिमल को अपने हेरेल (पति) के रूप में पाने में सफल होगी।

उसकी मालकिन मिसेज मुखर्जी भी अब हृदय से चाहती थी कि सुनीता उनके पास रहकर अपने संकल्प के अनुरूप अपनी आगे की पढ़ाई पूरी करे। वह भी सुनीता की पढ़ाई में हर तरह की सहायता कर रही थी। वे माली मधु नायक को रसोई तथा अन्य काम सौंप दी थी ताकि सुनीता को अधिक से अधिक समय अपनी पढ़ाई के लिए मिल सके। उन्होंने अपनी बेटी मृणालिनी को पढ़ाई में सुनीता को सहयोग और मदद करने का निर्देश दे चुकी थीं। मुखर्जी साहब मृणालिनी के ट्यूटर को हर रविवार को सुनीता को गाईड करने और अंग्रेजी तथा गणित विषयों में विशेष रूप से अध्यापन का अनुरोध कर चुके थे।

अब सुनीता को 9वीं कक्षा के अध्ययन के लिए पुस्तक आदि के सभी संसाधन उपलब्ध हो गए थे। वह देर रात तक तथा सुबह में जल्द उठकर पढ़ाई करती थी। हर पन्द्रह दिन पर ट्यूटर आर0के0 पोद्दार उसका टैस्ट लेते थे।

देखते–देखते नवम् की परीक्षा का समय निकट आ गया। श्री पोद्दार उसके पिता को बुलाकर परीक्षा फार्म पर हस्ताक्षर कराकर उसे पूरी तरह भरकर फीस के साथ विद्यालय में जमा कर दिए थे।

बोरजो भी बहुत खुश था और अपनी पत्नी को बता दिया था कि मुखर्जी सायोब सुनीता को पढ़ा रहा है और वह कुछ दिन में परीक्षा देगी।

गाँव में यह बात फैल गई थी कि दिकु साहब के यहाँ बोरजो द्वारा सुनीता कुई को 'आकरिग कुई' (बेचदी गई बेटी) बनाकर काफी पैसा लेकर रख दिया गया है, मुंडा भी इस खबर से हैरान थे।

गाँव का मुंडा विश्वनाथ जोंको ने पहले भी मुखर्जी साहब मैनेजर की तारीफ की थी। अब लोगों को मुंडा की बातों पर विश्वास हो गया कि सुनीता न तो आकरिंग डिंडा कुई है और न ही वह उनकी दासि है। वे तो सुनीता के दूसरे अपत्र (पिता) और उनकी येरा (पत्नी) उसकी दूसरी एंगा (माँ) की तरह अपने ओवा (घर) में रखकर पढ़ा रहे हैं।

समय जाते देर नहीं लगती। सुनीता की परीक्षा की तिथि घोषित कर दी गई थी। मुखर्जी साहब ने उसे स्कूल बस से जाने की व्यवस्था कर दी थी। सुनीता भी अपना कोर्स पूरा कर ली थी। परीक्षा शुरू हो गई थी और वह दस दिनों तक चलने वाली थी। मिसेज मुखर्जी उसे रसोई घर के कार्यों से परीक्षा तक के लिए मुक्त कर दी थी। पूरी परीक्षा उसकी अच्छी रही थी। उसे उम्मीद थी कि वह सभी विषयों में पास कर जायेगी।

अन्ततः दूसरे महीना में रिजल्ट निकल गया और सुनीता अच्छे अंको से द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हो गई थी। बोरजो और उसकी माँ को यह समाचार मिला तो बहुत खुश हुए। उसके गाँव में भी इस समाचार से मुंडा आदि काफी खुश थे।

सुनीता द्वारा 9वीं की परीक्षा पास करने का समाचार बिमल को भी मिल गया था। उसका भी अब 12वीं का रिजल्ट होने वाला था। वह भी हाट के दिन किरिबुरू चला गया। वह सीधे मुखर्जी साहब के बंगला पर गया। वहाँ माली से मिला और मालूम हुआ कि सुनीता रसोई घर में है। इसी बीच मुखर्जी साहब कार्यालय से आये। बिमल ने उनका पैर छूकर जोहार किया। उन्होंने उसे भीतर ले जाकर बरामदा में बैठाया। थोड़ी देर बाद मिसेज मुखर्जी आ गई तो उसने उन्हें भी जोहार किया। मिसेज मुखर्जी ने पूछा–'कहो बिमल, तुम्हारी परीक्षा कैसी गई। तुम्हारी दोस्त तो परीक्षा पास कर गई।'

बिमल–'हाँ माँजी, मुझे उसके पास होने का समाचार मिला तो आपलोगों से मिलने चला आया। आपलोगों की कृपा से वह 9वीं कक्षा पास कर गई।'

मिसेज मुखर्जी– 'सच्ची बात तो यह है कि सोनी का संस्कार बहुत अच्छा है और वह एक लगनशील लड़की है। इतने वर्ष तक पढ़ाई छोड़ने के बाद भी अपनी मेहनत से वह सेकन्ड डिविजन से परीक्षा पासकर गई।'

इसी बीच सुनीता भी आ गई। बिमल ने उससे हाथ मिलाकर जोहार

किया और बाधाई दी। मिसेज मुखर्जी भीतर जाकर स्वयं मिठाई और पानी लेकर आई और बिमल को दीं। नास्ता करने के बाद बिमल बोला–'सचमुच मेरे लिए यह खुशी और गर्व की बात है कि तुम अपना काम करते हुए अच्छे अंकों से पास कर गई।'

सुनीता– 'इसका श्रेय तुमको भी जाता है क्योंकि तुम्हारे प्रोत्साहन से मैंने अपनी पढ़ाई शुरू कर दी। अब तो मैट्रिक की परीक्षा की तैयारी करनी होगी। यह मेरा सौभाग्य है कि हमें ऐसा परिवार मिल गया जिसने मुझे अपनी बेटी की तरह रखा। आज उनकी कृपा से ही मैं अपनी मंजिल पाने में सफल हो रही हूँ। अच्छा तुम्हारी परीक्षा फल कब आ रहा है?'

बिमल–'वह भी अगले महीना में निकलेगा। सभी पेपर अच्छा गया है। देखें रिजल्ट कैसा होता है।'

सुनीता– 'आगे पढ़ाई का क्या सोचे हो? टाटा कॉलेज, चाईबासा में एडमिशन लोगे?'

बिमल –'नहीं मैं आई0टी0आई0 में नामांकन कराऊँगा। मैं एडमिशन के लिए फार्म लाया हूँ। मैं मेकेनिकल या इलेक्ट्रीकल ट्रेड लेकर पढ़ूँगा।'

सुनीता–'ठीक है, बी0ए0 करने से आई0टी0आई0 करना अधिक अच्छा होगा। किरिबुरू में हाल ही में एक लड़का आई0टी0आई0 करके औपरांटिस का काम कर रहा है। वह जोजोहातु का रमेश बानरा है। उससे एक दिन मुलाकात हुई थी।'

बिमल– 'मैं भी अब आई0टी0आई0 कर नौकरी करना चाहता हूँ।'

थोड़ी देर में मुखर्जी साहब लंच करके बाहर आये और बिमल से उसकी पढ़ाई–लिखाई संबंधी जानकारी लेकर कार्यालय चले गए।

सुनीता बिमल के विचारों से सन्तुष्ट थी। उसे पूरा विश्वास था कि बिमल अच्छे नम्बर से पास करेगा और आई0टी0आई0 में भी उसका एडमिशन अवश्य हो जायेगा।

मिसेज मुखर्जी आकर कुर्सी पर बैठ गई और बिमल का हाल–चाल पूछने लगीं। वह उसके चाचा को भी जानती थीं। उन्होंने बताया कि अब सुनीता 10वां वर्ग अथवा मैट्रिक की तैयारी शुरू कर देगी।

बिमल –'हाँ माँजी, यह आप लोगों का सहयोग और कृपा है कि सुनीता अपने लक्ष्य को पाने में सफल हुई है।'

मिसेज मुखर्जी– 'तुम 12वीं पास कर कहाँ पढ़ोगे?'

बिमल–'मैं आई0टी0आई0 का सर्टिफिकेट कोर्स करूँगा ताकि मुझे नौकरी मिल जाय।'

मिसेज मुखर्जी – 'मेरी शुभकामना और आर्शीवाद है कि तुम अपने उद्देश्य में जरूर सफल होगे।'

मिसेज मुखर्जी उससे मिलकर भीतर चली गईं। बिमल भी अब अपने चाचा से मिलने जाना चाहता था। उसने सुनीता से हाथ मिलाकर विदा होने लगा तो कहा–'मेरी शुभकामना है कि मैट्रिक में भी अच्छे अंकों से पास करोगी। अपनी पढ़ाई इसी प्रकार मन लगाकर करती रहोगी। सुनीता ने उसे जोहार कर मुस्करा कर विदा किया।

अब सुनीता अपने अध्ययन में अधिक समय देने लगी थी। उधर मृणालिनी का भी 10वीं का रिजल्ट आने वाला था। कुछ दिनों बाद 10वीं कक्षा का परीक्षा फल प्रकाशित हुआ और मृणालिनी 94% अंक लेकर अपने विद्यालय में प्रथम स्थान पर आई थी। उसके परीक्षा फल से उसके परिवार के साथ–साथ किरिबुरू कॉलोनी के सभी लोग काफी प्रसन्न थे।

मृणालिनी और सुनीता के परीक्षा फल से मिस्टर मुखर्जी और मिसेज मुखर्जी काफी खुश थे। उन्होंने इस अवसर पर एक पार्टी का आयोजन किया। इसमें उसने सुनीता के पिता बोरजो, उसकी माँ तथा बिमल के चाचा को भी आमंत्रित किया था।

पार्टी क्लब में आयोजित की गई थी। क्लब के हॉल में उनके अधिनस्थ स्टाफ सपरिवार आये थे। बोरजो भी सुनीता की माँ के साथ आ गया था। पार्टी शुरू होने के पूर्व मुखर्जी साहब ने सभी आगन्तुक अतिथियों को सम्बोधित करते हुए कहा –'पार्टी में आये सभी माननीय अतिथि, यह पार्टी काफी स्पेशल है क्योंकि हमारी दो बेटियाँ–मोनी (मृणालिनी) और सोनी (सुनीता) 10वीं और 9वीं की परीक्षा काफी अच्छे अंकों से पास की है। सोनी में पढ़ाई का इतना लगन और निष्ठा है कि वर्षों पहले छोड़े गए अध्ययन को हमारे घर के काम–काज को करते हुए अपने मेहनत से प्राईवेट छात्रा बनकर 9वां वर्ग की परीक्षा द्वितीय श्रेणी में पास की। अब आपलोगो की शुभ कामना से वह मैट्रिक की परीक्षा भी अवश्य पास करेगी। धन्यवाद!'

पूरा हॉल ताली की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। बोरजो और उसकी पत्नी अपने भाग्य की सराहना कर रहे थे कि आज उसकी बेटी के कारण उसे इतना सम्मान मिला। दोनों मन ही मन मुखर्जी साहब को 'एसु जोहार' कर रहे थे।

पार्टी में खाने–पीने की काफी अच्छी व्यवस्था थी, वेज और नन–वेज दोनों तरह के मीनू तैयार किए गए थे। साथ ही, कुल्फी, आइस्क्रीम आदि की भी व्यवस्था थी। लगभग 12 बजे रात पार्टी खत्म हुई। सभी लोगों ने

मिस्टर और मिसेज मुखर्जी को बहुत–बहुत बधाई दी।

उस रात बोरजो और उसकी पत्नी सुनीता के आउट हाउस में ठहर गए थे। दूसरे दिन सुबह में उसने अपनी पत्नी को विदा किया और स्वयं साहब को जोहार कर चला गया।

इधर बोरजो की भी आर्थिक स्थिति पहले से काफी सुधर गई थी। ठिकेदार ने उसे मजदूर से मुंशी बना दिया था और उसका पारिश्रमिक दुगुना हो गया था। यह भी मुखर्जी साहब के आदेश से ही संभव हुआ था।

सुनीता अब एकाग्रचित्त से मैट्रिक की परीक्षा में जुट गई थी। अब वह गाँव जाना बन्द कर दी थी। वह हेरो, जोमनामा आदि किसी त्योहार में घर नहीं गई थी। बोरजो भी बराबर मिलकर उसका हाल समाचार लेता रहता था।

अब मैट्रिक परीक्षा के लिए रजिस्ट्रेशन का समय आ गया था। मोनी और सोनी के शिक्षक पोद्दार साहब ने फार्म आदि भरवाकर फीस जमा कर रजिस्ट्रेशन हेतु आवश्यक कार्रवाई कर दी थी। वह रात 10 बजे तक और सुबह 4 बजे उठकर अपनी पढ़ाई करती थी उसकी पढ़ाई–लिखाई की प्रगति की समीक्षा मिसेज मुखर्जी स्वयं करती रहती थी और उसे उत्साहित भी करती रहती थी।

मोनी भी अब 11वीं कक्षा में दाखिला ले चुकी थी और 10वां की सभी पुस्तकें सुनीता को मिल चुकी थीं। पोद्दार साहब अब सुनीता को सप्ताह में दो दिन पढ़ाया करते थे। अब उसकी अंग्रेजी पहले से काफी अच्छी हो गई थी।

इसी बीच बिमल का रिजल्ट भी निकल गया था और वह द्वितीय श्रेणी से 12वीं की परीक्षा पास कर गया था। उसका आई0टी0आई0 में एडमिशन भी शीघ्र होने वाला था। अब वह आई0टी0आई0 में एडमिशन के बाद ही सुनीता से मिलने का प्रोग्राम बनाया था।

इस बीच बिमल का आई0टी0आई0 में इन्टरव्यू के बाद उसका एडमिशन मेसिनिस्ट ट्रेड में हो गया। वह इसी ट्रेड में पढ़ना चाहता था। इस एडमिशन के बाद एक रविवार को वह किरिबुरू आकर मुखर्जी साहब, मिसेज मुखर्जी और सुनीता को यह खुशखबरी सुनाई। सभी काफी खुश हुए और उसके उज्जवल भविष्य की शुभकामना दी।

सुनीता से वह उसके आउट हाउस जाकर बातचीत की और उसकी पढ़ाई के सन्दर्भ में जानकारी ली।

इतने दिनों तक मुखर्जी साहब के परिवार में रहकर उसके सौन्दर्य में

काफी निखार आ गया था और एक बंगाली हापानुम (युवती) लगती थी। उसका पहनावा भी बांगला फैशन का लगता था।

बिमल ने मजाक करते हुए कहा–'चिया, सोनी आम दो एसु मोचो–मोचो को नेलतना। (तुम अब काफी सुन्दर लग रही हो)।'

सुनीता–'चिना चकड़्तना। आबेन ओन्डो एसु पुरःबुगीन सेपेड नेलतना। (तुम क्या मजाक करते हो, तुम भी तो काफी अच्छे युवक दीखते हो।)'

इसी तरह थोड़ी देर हंसी–मजाक कर बिमल बोला– 'अच्छा सोनी अब तुम अपनी पढ़ाई करो और मैं अपने चाचा से मिलकर आज ही गाँव चला जाऊँगा। कल से आई0टी0आई0 का क्लास शुरू हो जायेगा।'

सुनीता उससे हाथ मिलाकर बाहर छोड़ने आ गई। वह 'अलविदा' कहकर विदा हुआ। सुनीता उसे दूर जाते देर तक देखती रही थी।

आज उसे बिमल से जुदा होने पर कुछ अजीब एहसास हो रहा था। शायद अब उसका बिमल के प्रति प्यार का बन्धन कुछ अधिक अनुभव होने लगा था। अब उसे लगने लगा था कि उसके मैट्रिक पास करने के बाद बिमल उसके साथ बपला के लिए तैयार हो जायेगा। अब उसका लक्ष्य था मैट्रिक परीक्षा में उत्तीर्ण होना।

समय बीतता गया और मैट्रिक की परीक्षा की तिथि भी घोषित कर दी गई। मोनी के ट्यूटर भी सप्ताह में तीन दिन पढ़ाना शुरू कर दिये थे। मिसेज मुखर्जी भी उसकी पढ़ाई में मदद करती थी।

सुनीता की परीक्षा अवधि में वे उसे रसोई घर के कार्य से मुक्त कर दी थी। परीक्षा केन्द्र तक पहुँचाने और वापस लाने का कार्य अपने एक चपरासी को मुखर्जी साहब द्वारा सौंप दिया गया था।

सुनीता भी पूरे आत्म विश्वास के साथ परीक्षा दे रही थी। प्रायः उसके सभी पेपर संतोषजनक हुए थे। इस बीच बिमल भी एक बार उससे मिलकर अपनी शुभकामना देकर चला गया था। उसे विश्वास था कि सुनीता इस परीक्षा में अवश्य सफल होगी।

लगभग दो माह बाद मैट्रिक का रिजल्ट प्रकाशित हुआ। सुनीता द्वितीय श्रेणी में उत्तीण हुई थी। मुखर्जी परिवार के साथ–साथ उसके माता–पिता भी काफी खुश थे। सुनीता के परीक्षा पास करने का समाचार उसके गाँव में भी पहुँच गया था। गाँव का मुंडा और उसके शुभाकांक्षी भी खुश थे और मुखर्जी साहब की प्रशंसा कर रहे थे।

रिजल्ट के बाद बोरजो दो दिनों के लिए सुनीता को लेकर अपने गाँव आ गया था। सुनीता के मामा–मामी भी उससे मिलने आ गए थे। वे लोग

उसे और आगे पढ़ने या कोई ट्रेनिंग करने को कह रहे थे। इस अवसर पर बोरजो ने अपने सगे संबंधियों को मेरोमजीलू (खस्सी का मांस) और मांडी (भात) का भोज दिया था। इस प्रीतिभोज में बिमल भी सामिल हुआ था। वह सुनीता की सफलता पर बेहद खुश था।

दो दिनों बाद बोरजो सुनीता को लेकर किरिबुरू आ गया था। मिसेज मुखर्जी भी अपने बंगले में एक किटी पार्टी का आयोजन की थी, जिसमें मुखर्जी साहब के सहकर्मी सामिल हुए थे। मृणालिनी विशेष रूप से खुश थी क्योंकि सुनीता के अध्ययन में उसने अपनी बहन की तरह सहायोग दिया था। वह भी अपनी बारहवीं कक्षा की सी0बी0एस0ई0 की परीक्षा की तैयारी में लगी हुई थी।

मुखर्जी साहब ने सुनीता से पूछा–'सोनी बेटी, अब आगे क्या करना चाहोगी?'

सुनीता–'सर, मैं कोई ट्रेनिंग करना चाहूँगी ताकि उसके बाद मुझे कोई नौकरी मिल जाय।'

मुखर्जी–'हमारे कारखाना के अस्पताल में ए0एन0एम0 (ऑग्जीलियरी नर्स और मिडवाइफ) की ट्रेनिंग की व्यवस्था है। अगर तुम चाहो तो मैं उसके इन्चार्ज डॉ0 प्रणव मोहन्ती से बात करूँगा।'

सुनीता–'मैं नर्स की ट्रेनिंग ही करना चाहूँगी ताकि मैं अस्पताल में रोगियों की सेवा कर सकूँ।'

मिसेज मुखर्जी भी सुनीता के इस प्रस्ताव से काफी खुश थीं। वह जानती थी कि सुनीता में सेवा करने की भावना है और ट्रेनिंग बाद वह एक अच्छा नर्स बन सकेगी।

मिसेज मुखर्जी का डॉ0 मोहन्ती के परिवार में काफी आना–जाना था। मिसेज मोहन्ती भी मुखर्जी साहब के बंगला पर आती जाती थीं।

मुखर्जी साहब सुनीता को लेकर स्वयं डॉ0 मोहन्ती से मिलने अस्पताल में गए। डॉ0 मोहन्ती से उन्होंने सुनीता को ए0एन0एम0 ट्रेनिंग के संबंध में जानकारी ली।

डॉ0 मोहन्ती–'मुखर्जी साहब, यह ट्रेनिंग मैट्रिक पास वाली लड़कियों को दी जाती है। सुनीता काफी स्मार्ट लड़की लगती है। इसे ट्रेनिंग में रखा जा सकता है।'

मुखर्जी –'इसके एडमिशन के लिए क्या करना होगा?'

डॉ0 मोहन्ती– 'इसे ट्रेनिंग का फार्म भरकर साथ में मैट्रिक का सर्टिफिकेट, जाति प्रमाण पत्र, आवासीय प्रमाण पत्र आदि देना होगा। इन

सभी सर्टिफिकेट को जमा करने के बाद चीफ मैट्रन जयन्ती राय के अन्डर में वह ट्रेनिंग कोर्स करेगी।'

डॉ0 मोहन्ती ने जयन्ती राय को अपने चैम्बर में बुला कर मुखर्जी साहब से मिलवाया और सुनीता से भी परिचय कराया।

मिसेज राय–'ठीक है सर, अभी अस्पताल में ए0एन0एम0 का कई पोस्ट खाली है। सुनीता को ट्रेनिंग बाद हमलोग अपने हॉस्पीटल में ही रख लेंगे।'

मिस्टर मुखर्जी डॉ0 मोहन्ती से हाथ मिलाकर 'थैंक्स' दिए और अपने बंगला पर वापस आ गए। मिसेज मुखर्जी इस समाचार से काफी खुश हुई। सुनीता को लगा कि अब उसका भाग्य खुलने वाला है। वह मन ही मन सिङबोंगा को जोहार कर रही थी।

यह समाचार बोरजो को मिला तो उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। वह बंगला पर आकर मिस्टर और मिसेज मुखर्जी को हाथ जोड़कर जोहार किया। उसने कहा –'सायोब, आप तो हमारी सुनीता को अपनी होनकुइ (बेटी) की तरह पढ़ाया–लिखाया। मेम सायोब ने उसे एंगा (माँ) की तरह प्यार किया। सिङबोंगा आपको और तरक्की दें।'

उसने अपने घर पर भी यह समाचार भेज दिया।

सुनीता मैट्रिक की परीक्षा के लिए जाति प्रमाण पत्र, आय प्रमाण पत्र, आवासीय प्रमाण पत्र आदि निकाल ली थी। उसे मैट्रिक पास का सर्टिफिकेट तत्काल विद्यालय से मिलना था। मुखर्जी साहब ने मोनी के ट्यूटर पोद्दार जी को विद्यालय से प्रमाण पत्र निकालने की जिम्मेवारी सौंप दी। पोद्दार जी ने एक सप्ताह के भीतर 'प्रोवीजनल सर्टिफिकेट' मैट्रिक का मार्कसीट और चरित्र प्रमाण पत्र लाकर मुखर्जी साहब को दे दिया।

ट्रेनिंग के आवेदन पत्र के साथ सभी प्रमाण पत्रों को लेकर मिसेज मुखर्जी सुनीता को साथ लेकर स्वयं डॉ0 मोहन्ती से मिलने गई।

डॉ मोहन्ती– 'नमस्कार मैडम, आप स्वयं आने का कष्ट कीं, किसी के साथ सुनीता को भेज देतीं।'

मिसेज मुखर्जी– 'सोनीं हमारी 'खूब भालो छेली' (अच्छी बेटी) है। सोचा, आप से मिलकर इसे आपके गार्जियनशीप में दे दूँ।'

डॉ0 मोहन्ती–'सचमुच सुनीता आपकी बेटी से कम नहीं है। मुखर्जी साहब ने सुनीता को अपनी दूसरी बेटी बना लिया है।'

डॉ0 मेहन्ती आवेदन पत्र तथा सभी प्रमाण पत्रों की जाँच कर आवेदन पर चीफ मैट्रन जयन्ती राय को प्रशिक्षण में सामिल करने का आदेश दे दिया। उन्होंने मिसेज राय को अपने चैम्बर में बुलाकर आवेदन के साथ सुनीता को

भी उनके जिम्मे कर दिया। मिसेज राय सुनीता को लेकर अपने चैम्बर में गई। मिसेज मुखर्जी भी साथ में गईं। मिसेज राय ने उन्हें बैठाकर चाय पिलाया और सुनीता को दूसरे दिन 8 बजे सुबह बुलाया।

सुनीता दूसरे दिन सुबह 8 बजे एक बैग में एक नोटबुक और कलम लेकर चीफ मैट्रन के चैम्बर में जाकर मिली। उन्होंने उसे ए0एन0एम0 गाईड बुक दिया, उसे अपने पास रखकर अध्ययन करने को कहा। उन्होंने सिनियर नर्स जुलिया हेम्ब्रम को बुलाकर सुनीता को प्रशिक्षण देने की जिम्मेवारी सौंप दी।

सुनीता जुलिया के साथ नर्सेज के कार्य और कृत्य की जानकारी प्राप्त करने लगी। उसे वार्ड में ले जाकर पेसेंट की देखभाल, ब्लडप्रेसर जाँच, इन्टरमस्कुलर तथा इन्टरवेन्स सूई देने की विधि आदि से संबंधित उसे प्रैक्टीकल ट्रेनिंग जुलिया द्वारा दिया जाने लगा। उसे 'फर्स्ट एड्' का भी प्रशिक्षण लेने के लिए कम्पाउन्डर राम सेवक महतो, ओ0टी0 इन्चार्ज से भी जोड़ दिया गया।

सुनीता भी पूरे लगन से प्रशिक्षण लेने में लग गई थी। वह गाईडबुक को काफी ध्यान लगाकर पढ़ती थी। धीरे–धीरे उसे कई मरीजों की जिम्मेवारी दी गई, जिनका व्यक्तिगत हेल्थ चार्ट देखकर उन्हें समय पर दवा, सूई आदि देना पड़ता था। वह अपने कार्य में धीरे–धीरे दक्ष होती जा रही थी। बीच–बीच में चीफ मैट्रन भी उसके कार्यों को सुपरवाईज करती थी। उसे ऑपरेशन थियेटर में ले जाकर सर्जरी के प्रभारी डॉ0 प्रभात रंजन ने उसे वहाँ के कार्य–कलापों की जानकारी ऑपरेशन के मध्य दी। एक सप्ताह उसे ओ0टी0 में ड्यूटी करनी पड़ी थी।

मिसेज मुखर्जी भी उसके प्रशिक्षण के विषय में पूछ–ताछ करती रहती थीं। सुनीता का मन इस प्रशिक्षण में लग गया था और वह ए0एन0एम0 के कार्य और कृत्य को दत्तचित्त होकर काफी तेजी से सीख रही थी।

ट्रेनिंग के अन्त में उसे लिखित और प्रैक्टीकल टेस्ट देना पड़ा जिसमें वह सफल घोषित हो गई। डॉ0 मोहन्ती ने उसे फिमेलवार्ड में पदस्थापित कर दिया था। अब सुनीता ए0एन0एम0 के रूप में किरिबुरू अस्पताल में अस्थायी रूप में सेवा देने लगी थी। डॉ0 मोहन्ती और चीफ मैट्रन मिसेज राय उसके समर्पित होकर अपना ड्यूटी करने और मरीजों की देख–भाल करने आदि कार्यों से काफी सन्तुष्ट थे। बीच–बीच में बोरजो भी उससे मिलकर उसका समाचार लेता रहता था।

सुनीता के ट्रेनिंग की अवधि में बिमल भी उससे दो–तीन बार मिला

था। वह भी आई0टी0आई0 का फाइनल परीक्षा दे चुका था और रिजल्ट की प्रतीक्षा कर रहा था।

एक महीना बाद बिमल का रिजल्ट निकल गया और वह अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हुआ था। रिजल्ट निकलने के बाद मिष्टान्न लेकर वह सुनीता से आकर मिला और दोनों इस खुशी के अवसर पर अपना मुँह मीठा किये। बिमल मुखर्जी साहब और मिसेज मुखर्जी से मिलकर उन्हें जोहार किया और अपनी सफलता से अवगत कराया। दोनों ने उसके उज्जवल भविष्य की कामना की। वह अपने चाचा से भी मिला और वहीं बोरजो से भी उसकी मुलाकात हो गई थी। उस दिन बिमल अपने चाचा के आवास में ठहर गया था।

उसे अब कुछ दिनों के लिए किसी कारखाना में ऑपरांटिस बनकर प्रशिक्षण लेना था। दूसरे दिन बिमल अपने चाचा के साथ मुखर्जी साहब से मिलने गया। उसने कहा– 'सर, मुझे किसी कम्पनी या कारखाना में ऑपरांटिस बनकर प्रैक्टीकल ट्रेनिंग करने को कहा गया है। इसके लिए आप की मदद चाहिए।

मिस्टर मुखर्जी–'तुम चाहो बिमल तो हमारी कम्पनी के वर्कशॉप में तुम अपना ट्रेनिंग पूरा कर सकते हो। तुम आई0टी0आई0 तथा हायर सेकेण्ड्री के प्रमाण पत्र आदि के साथ एक आवेदन दे दो। मैं उस पर आदेश दे दूँगा। तुम्हें ट्रेनिंग पेरियड में स्टाइपेंड भी मिलेगा।'

बिमल अपने चाचा के साथ मुखर्जी को जोहार कर चला गया। वह अस्पताल जाकर सुनीता से भी मिला। सुनीता यह खुशखबरी सुनकर बेहद प्रसन्न थी कि अब बिमल भी किरिबुरू में रहकर ट्रेनिंग करेगा।

बिमल एक सप्ताह बाद आवेदन पत्र एवं प्रमाण पत्रों के साथ मुखर्जी साहब से उनके चैम्बर में मिला। उन्होंने अपने फोरमैन कुशल मोहन केरकेट्टा को बुलाकर बिमल का परिचय कराया। उन्होंने बिमल को ऑपरांटिश के रूप में रखने का निर्देश दिया। साथ ही, अपने प्रधान सहायक से इस संबंध में एक कार्यालय आदेश निकालने को कह दिया।

बिमल उनको नमन कर फोरमैन के साथ चला गया। दूसरे दिन वह कार्यालय जाकर ट्रेनिंग संबंधी आदेश लेकर फोरमैन केरकेट्टा से मिला। उसके चाचा भी साथ में थे, जिनका पूर्व परिचय फोरमैन के साथ था। फोरमैन ने उसे कारखाना ले जाकर दिखा दिया और दूसरे दिन से प्रशिक्षण के लिए 9 बजे बुलाया।

बिमल के चाचा अपने ड्यूटी पर चले गए और बिमल सुनीता से मिलने

चला गया। उस समय सुनीता ओ0टी0 में थी। बिमल थोड़ी देर इन्तजार किया। सुनीता ओ0टी0 से अपने ए0एन0एम0 के ड्रेस में मुँह पर हरा मास्क लगाये निकली तो बिमल उसे पहचान नहीं सका। उसने मास्क हटाकर बिमल से हाथ मिलाया और जोहार किया।

बिमल ने बताया कि कल से वह भी कारखाना में 9 बजे से ऑपरांटिस की ट्रेनिंग शुरू करेगा। उसने मुखर्जी साहब द्वारा निर्गत आदेश दिखलाया। इस समाचार से सुनीता की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसे लगने लगा कि परमेश्वर (सिङबोंगा) अब दोनों को मिलाने का अवसर देकर अपना आशीर्वाद दे दिया। वह सुनीता से साम को मिलने की बात कहकर चला गया। सुनीता भी अपनी ड्यूटी पर वार्ड में चली गई।

संध्या समय बिमल उससे मिलने आया। मिसेज मुखर्जी लॉन में बैठी थीं। बिमल लॉन में जाकर उनको प्रणाम (जोहार) किया और अपने ट्रेनिंग के विषय में बताया। वे बहुत खुश हुई और उसे आर्शीवाद दीं। बिमल को कुर्सी पर बैठाकर भीतर गई और सुनीता को चाय–नास्ता लाने के लिए कहकर वापस आ गई।

मिसेज मुखर्जी–'तुम्हारे विषय में साहब ने मुझे बताया था और मैं बहुत खुश थी। अब तुम दोनों सुनीता और तुम किरिबुरू में रहकर अपने जीवन के साथ–साथ अपने परिवार के भविष्य को अच्छा बनाओगे। तुम यहाँ कहाँ रहोगे?'

बिमल–'माँजी, यहाँ मेरा चाचा काम करता है, जो आप से मिल चुका है। मैं उसी के साथ रहूँगा।'

मिसेज मुखर्जी–'ठीक है बिमल, यदि दिक्कत होगी तो तुम्हें रहने के लिए ऑपरांटिस होस्टल में इन्तजाम करा दूँगी।'

इसी बीच सुनीता प्लेट में नास्ता लेकर आ गई। मिसेज मुखर्जी भीतर चली गई। सुनीता ने बिमल को नास्ता दिया। उसने सुनीता को भी शेयर करने को कहा। नास्ता के बाद वह प्लेट आदि रखकर बिमल को लेकर आउट हाउस चली गई। वहाँ दोनों काफी देर तक अपने जीवन में मिली उपलब्धी के लिए मुखर्जी साहब और मिसेज मुखर्जी की सराहना करते रहे।

सुनीता–'यह ऊपर वाले की कृपा है कि हम दोनों को एक साथ एक स्थान पर अपने स्नेह–संबंध को बनाये रखने के लिए ला दिया। मुझे ऐसा लगा कि पिछले जन्म में भी शायद हम लोग एक साथ थे।

बिमल–'सचमुच सोनी, मेरे मन में भी यह लगा कि हम दोनों का संबंध जन्म–जन्मान्तर से रहा है। अन्यथा इस तरह का संयोग कैसे मिलता कि हम

दोनों एक कारखाना–किरिबुरू में आकर अनायास मिले और दोनों को अपने सौभाग्य का मंजिल मिल गयी।

सुनीता–'तुम ठीक कह रहे हो। तुम्हारी प्रेरणा से मैं कहाँ से कहाँ पहुँच गई। पढ़ाई छोड़ने के बाद गाँव में रहकर बैल–बकरी की चरवाही करती थी। आज सिंङबोंगा और नगेएरा की कृपा से ए0एन0एम0 बन गई। यह सब किसी सुखद स्वप्न से कम नहीं है। कहाँ गाँव वाले 'आंकरिंग तना डिंडा कुई (बेंची गई कुँआरि लड़की)' कहकर हमारे माता–पिता को प्रताड़ित करते थे। आज वही लोग उनकी तारीफ करते हैं।'

बिमल –'तुम ठीक कहती हो सुनीता। किसी के भाग्य को कोई नहीं जानता। अगर उनकी बातों में आकर तुम्हारे पिता गाँव में वापस बुला लेते तो तुम्हारा दुर्भाग्य आजीवन तुम्हें लाचार जीवन जीने को मजबूर कर देता।'

सुनीता–'तुम ठीक कह रहे हो। अभी भी हमारा समाज पूर्व से चली आ रही काफी रूढ़िवादी परम्पराओं में जकड़ा हुआ है। वह आज भी 'दीकू' (गैर–हो) से दूरी बनाये रखना चाहता है। 'गोनोंग' (बधु मूल्य) की परम्परा ने कितनी बहनों को आजीवन 'डिंडा कुइ' बनाकर उन्हें नारकीय जीवन जीने को मजबूर कर दिया है। क्या तुम्हारे आपुत्र–एंगा (माँ–बाप) भी इस परम्परा में बंधे हुए हैं?'

बिमल –'नहीं सुनीता, हमारे माता–पिता थोड़े स्वतंत्र विचार के हैं। वे कोलगुरू लकोबोदरा के सुधारवादी शिक्षा और व्यवस्था को मानते हैं। मेरे पिता गाँव के मुंडा हैं और उन्होंने कई शादियाँ राजी–खुशी से बिना गोंनोंग के करा दी है।

तुम्हारे माता–पिता किस विचार के हैं? क्या वे तुम्हारे 'बपला' में गोनोंग की इच्छा रखते हैं?'

सुनीता–'मेरे माता–पिता अब मेरे ऊपर निर्भर हैं। माँ कहती है कि सुनीता हमारी बेटी नहीं, बेटा है। वह मुखर्जी और मिसेज मुखर्जी को हमारे लिए देवतुल्य पिता–माता की तरह इज्जत करते हैं। आज मेरे चलते उन लोगों की प्रतीष्ठा बढ़ी है। मेरे पिताजी मजदूर थे। अब मुखर्जी साहब के कारण मुंशी (मेठ) बन गए हैं।'

बिमल–'ऐसा लगता है कि हमलोगों की दोस्ती किसी अच्छे और सफल भावी जीवन का संकेत दे रही है। हमारा–तुम्हारा पवित्र संबंध और हमारे–तुम्हारे परिवार का आचार–विचार हम दोनों के सुखद भावी गार्हस्थ्य जीवन का आधार बनेगा।'

सुनीता–'मैं तो पहले से ही तुम्हें अपना मान चुकी हूँ। तुम्हारा जीवन

साथी बनने के लिए मैंने इतना संघर्ष किया और इस संघर्ष में तुम हमेशा मेरा हिम्मत बढ़ाते रहे। आज मैं जिस मुकाम पर पहुँची हूँ, उसके तुम भी भागीदार हो।'

बिमल–'तुम तो अचानक दार्शनिक बन गई। मैं भी तो तुम्हारे प्रेम बन्धन में मूक बनकर बंधा रहा और इसी आशा में संघर्ष करता रहा कि मैं तुम्हारे लिए योग्य और समर्थ बन जाऊँगा? तुम्हारा अटूट–अव्यक्त प्रेम की प्रेरणा से आज मैं इस मंजिल तक पहुँचा हूँ।'

सुनीता–'आज का मिलन बड़ा सुखद रहा है। इतने दिनों की तपस्या अब पूरी होने वाली है। तुम एक बार अपने आपुत्र–एंगा से मुझे मिला दो ताकि उनका विचार मै जान सकूँ। तुम तो हमारे पिता से मिल चुके हो।'

बिमल–'ठीक है, मैं रविवार को छुट्टी के दिन घर जाकर उनसे बात करूँगा।'

बिमल सुनीता से हाथ मिलाकर बोला–'अब तो यह हाथ हमेशा–हमेशा के लिए मेरा हो जायेगा।'

सुनीता–'(मुस्कराकर) सरिगे (हाँ सचमुच)। पर अभी थोड़ा इन्तजार करो।'

बिमल अपने चाचा के पास चला गया था। सुनीता अपने कमरे में लेटे–लेटे बिमल की प्यार भरी बातों में खो गई थी। उसे आशा थी कि हम दोनों के माता–पिता हमलोगों के 'बपला' के लिए राजी हो जायेंगे। इस संबंध में वह भी अपने माँ, बाप और मामा से बात करेगी।

बिमल के चाचा किशुन जामुदा अपने गाँव गए थे। वहाँ बिमल के पिता पांडु जामुदा से मुलाकात हुई। दोनों में बिमल की नौकरी (ऑपरांटिस) के संबंध में भी बातचीत हुई। किशुन ने बताया कि मुखर्जी साहब के घर में रहकर बोरजो की लड़की मैट्रिक पास कर गई। बिमल को कारखाना में रखने के लिए पैरबी की थी। वह भी अभी नर्स का काम कर रही है। वह बहुत ही अच्छी लड़की है। बिमल से उसकी गहरी दोस्ती है। वह उससे बराबर मिलता रहता है। मुझे लगता है कि दोनों में प्यार हो गया है और दोनों एक दूसरे को चाहते हैं। अब तो बिमल नौकरी में ट्रेनिंग के बाद आ जायेगा। मुखर्जी साहब उसे अपने कारखाना में ही बहाल कर देंगे। मिस्टर मुखर्जी की पत्नी सुनीता को बेटी की तरह मानती है।

पांडु–'जब तुम सुनीता और उसके पिता बोरजो को अच्छी तरह जानते हो तो बिमल और सुनीता के बपला के लिए 'अगुआ' बनकर बोरजो से मिलकर दोनों के बपला की बात कर सकते हो।'

किशुन–'एक बार तुम हिली(भाभी) को लेकर किरिबुरू आओ। मैं तुम्हें मिसेज मुखर्जी के बंगला पर ले जाकर सुनीता से मिला दूँगा। यदि वह तुम लोगों को पसन्द होगी तो मैं बोरजो से भी बात करूँगा। बोरजो भी किरिबुरू में ही काम करता है।'

इसके बाद एक रविवार को पांडु अपनी पत्नी (बिमल की माँ) को लेकर किशुन के क्वाटर में जाकर मिला। बिमल भी वहीं रहता था। किशुन ने बिमल को बताया था कि उसके माता–पिता को उसने ही सुनीता से मिलाने के लिए बुलाया है। वे बोरजो से भी मिलेंगे। किशुन उन दोनों को बिमल के साथ मुखर्जी साहब के बंगला पर ले गया। माली ने सभी को जोहार किया। बोला–'किशुन दादा, क्या बात है है कि तुम लोग अभी बंगला पर आ गए।'

किशुन– 'ये दोनों बिमल के माता–पिता हैं। साहब को जोहार करने और धन्यवाद देने आए हैं।'

माली–'आओ आपलोग यहाँ बरामदा में बैठो। मैं साहब को खबर करता हूँ।'

माली ने मुखर्जी साहब को बिमल और उसके माता–पिता की आने की सूचना दी। मिसेज मुखर्जी भी वहीं थीं। वे आप लोगों को जोहार करने आए हैं।

मुखर्जी–'अच्छा, तुम उन्हें बैठाओ, हम लोग आ रहे हैं।'

थोड़ी देर में मिस्टर और मिसेज मुखर्जी बरामदे में आ गए। सभी ने उन्हें 'जोहार सायोब' हाथ जोड़ कर कहा। साहेब ने भी 'जोहार' कर उनका अभिनन्दन किया।

मुखर्जी– 'कहिये, आपलोग कुशल से हैं। आपका बेटा बिमल भी बहुत मेहनती और अनुशासित लड़का है। वह पूरी लगन से ट्रेनिंग कर रहा है।'

पांडु– 'हाँ सायोब, यह आपलोगों का किरिपा है कि मेरा बेटा को किरिबुरू कारखाना में काम मिल गया।'

मुखर्जी– 'यह तो आप लोगों का हक बनता है। यह कारखाना तो आप ही लोगों के रोजगार के लिए है। ट्रेनिंग बाद बिमल को मेकानिक की नौकरी मिल जायगी। मेकानिक की काफी अच्छी तनख्वाह है।'

पांडु–'आप की किरिपा के लिए एसु–एसु (बहुत–बहुत) धन्यवाद।'

इस बीच मिसेज मुखर्जी भीतर जाकर सुनीता को चाय–नास्ता लाने के लिए बोल चुकी थी। थोड़ी देर में वह लोटा पानी लाकर सबको जोहार की। वह बहुत ही सुन्दर सलवार–समीज पहनी हुई थी।

पांडु– 'बिटि सुनीता, तुम्हारे आपुञ–एंगा टीक है न?'

सुनीता–'हाँ काका, दोनों सकुशल हैं। पिताजी तो यहीं काम करते हैं। माँ गाँव में रहकर खेती–बारी देखती है।'

उनसे बातें कर सुनीता भीतर जाकर चाय–नास्ता ले आई। सभी चाय–नास्ता कर सभी को जोहार कर किशुन जामुदा के आवास पर चले गए। बिमल भी सुनीता को जोहार कर उनके साथ चला गया।

पांडु और उसकी पत्नी को सुनीता बहुत ही अच्छी लगी और उन्हें पसन्द आईं। संध्या समय उनलोगों ने बोरजो से मिलने का विचार किया। बोरजो वहाँ थोड़ी दूर पर एक क्वाटर में अपने एक सहकर्मी के साथ रहता था। यह तय हुआ कि किशुन जामुदा उन्हें अपने घर पर खाने पर बुला लेगा।

कुछ देर में किशुन बिमल के साथ बोरजो के क्वाटर में जाकर उसे जोहार किया। उसने बताया कि आज उसके भाई–भाभी गाँव से आए हैं। वे उनसे मिलना चाहते हैं। आज रात में आप हम लोगों के साथ सीमजीलू और मांडी (मुर्गा–भात) के प्रीतिभोज में सामिल होंगे।

बोरजो –एसु बुगिन जगर। आबेन कुपुल एमचेडलगिड् हुजुतना। आञयो खुशी–खुशी आबेन ओवा पा ते सेनोआ।'

(बहुत अच्छी बात है। आप मुझे अतिथि के रूप में सत्कार के लिए बुलाए हैं। मैं प्रसन्नता पूर्वक आपके आवास पर चलूँगा।

किशुन और बिमल बोरजो के आवास पहुँचे। वहाँ पांडु और उसकी पत्नी बासन्ती ने जोहार कर उनका लोटा–पानी से स्वागत किया। किशुन ने सभी को नास्ता कराया। पांडु और बोरजो दोनों एक दूसरे के परिवार, गोत्र आदि के सन्दर्भ में बातचीज करते रहे।

बोरजो– 'पांडु सोमोदि, आबेन होन कोवा बिमोल एसु बुगिन सेपेड मेना।' (पांडुजी, आपका पुत्र बिमल बहुत अच्छा युवक है।)

पांडु–'एना आबेन किरिपा मेना। मुखर्जी सायोब दो किरिबुरू कारखाना रे बुगीन चाकरी एमकेडा।'

(यह आपलोगें की कृपा है। मुखर्जी साहब ने उसे कारखाना में नौकरी दे दी है।)

इसी तरह से सभी अपना–अपना हाल समाचार का आदान–प्रदान करते रहे। सभी बड़े आनन्द पूर्वक मुर्गा–भात खाकर सन्तुष्ट हुए। बोरजो सभी को जोहार कर अपने आवास चला गया।

रात में बिमल की माँ ने बिमल से पूछा– 'आज तुम्हारे सायोब और उनकी एरा (पत्नी) से मिल कर बहुत अच्छा लगा। तुम्हारी दोस्त सुनीता भी बहुत सुगड़ (सुन्दर) डिंडा कुइ (कुँआरी कन्या) है। क्या तुम पसंद करते हो

और 'बपला' करना चाहोगे?'

बिमल– 'माँ, मैं उसे पसन्द ही नहीं, उससे प्यार करता हूँ। मैं उसी से शादी करना चाहता हूँ।'

इसके बाद उसकी माँ ने अपने पति को यह बात बताई। पांडु ने भी सुनीता की बहुत तारीफ की और उसे अपनी किमिन (बहु) बनाने की सहमति दे दी। किशुन तो बिमल और सुनीता के प्यार भरे सम्बन्धों को जानता था। सभी ने यह तय किया कि बपला के सम्बन्ध में बोरजो से कल सुबह बात किया जाये और अगर वह तैयार हो जाता है तो इस सम्बन्ध में उसके घर जाकर गोनोङ् (वधुमूल्य) की बात तय कर बपागे (छेका) का दिन तय किया जाय।

दूसरे दिन सुबह पांडु और किशुन–दोनों बोरजो के क्वाटर गए। बोरजो और उसके साथी ने दोनों को 'जोहार' कर बैठाया। बोरजो ने पांडु से कहा–'क्या बात है मुंडा सोमोदि, सबेरे–सबेरे मिलने आ गए?'

पांडु–'देखो, बोरजो दादा, तुम्हारे आने के बाद हमलोगों ने बिमल के बपला के संबंध में बातचीत की। हमलोग कल आपकी होन कुइ (बेटी) सुनीता को देखा और वह बहुत ही अच्छी हापानुम (युवती) लगी। यह भी मालूम हुआ कि बिमल और सुनीता में अच्छी दोस्ती है। बिमल चाहता है कि उसकी आंदि के लिए सुनीता के संबंध में बातचीत की जाय। इसलिए हमलोग आपका विचार जानने के लिए आ गए।'

बोरजो–'ठीक सोमोदि, मुझे भी मालूम हुआ है और हमने देखा भी है कि दोनों में अच्छी दोस्ती है। दोनों एक दूसरे से बराबर मिलते रहते हैं। सुनीता के कारण ही बिमल को मुखर्जी सायोब ने उसे कारखाना में भर्ती कर दिया है। मैं भी बिमल को बहुत पसन्द करता हूँ, वह बहुत की अच्छा सेपेड (युवक) है। इस संबंध में उसकी एंगा से भी राय लेनी होगी। वह भी सुनीता को देख चुकी है।'

पांडु–'ठीक है सोमोदि, हमलोग चाहेंगे कि आपके गाँव जाकर आपके घर पर इस संबंध में आप की एरा से मिलकर बात करें।'

बोरजो–'एसु बुगिन सोमोदि (बहुत अच्छा मित्र)। आप सभी कुपुल (मेहमान) बनकर अगले रूइवार (रविवार) को हमारे गाँव पधारें।'

इस प्रकार डोबरो से बातचीत कर और सन्तुष्ट होकर पांडु और किशुन अपने क्वाटर वापस आ गए। उन्होंने आगामी रविवार को बोरजो से उसके गाँव जाकर 'बपला' संबंधी बातचीत करने की बात बताई। बिमल की माँ को भी खुशी हुई कि बोरजो बिमल के साथ सुनीता के बपला के लिए तैयार हो

जायेंगे। बिमल की माँ भी अपनी सहमति अवश्य देगी।

पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार किशुन अगुआ के रूप में बोरजो के घर गए। बोरजो की पत्नी ने लोटा–पानी से उनका स्वागत किया। उसने उसका समाचार पूछा और बिमल की नौकरी के बारे में जानकारी ली। उसने किशुन और बोरजो को नास्ता कराया और डियंग भी दिया।

किशुन–'देखो हिलि (भाभी), मैं बिमल के तरफ से 'अगुआ' बनकर आया हूँ। हमलोग चाहते हैं कि बिमल की शादी सुनीता के साथ तय किया जाय। हमलोग जामुदा राज के हैं और आपलोग जोंको राज (गोत्र) के हैं जिसके कारण बपला की बात चल सकती है। आपलोग बिमल से मिल चुके हैं। बिमल के माँ–पिता भी सुनीता से मिल चुके। अब आप और बोरजो दादा से मिलकर हम इसे पूरा करने के लिए अगुआ बनकर आए हैं।

जींगी–'टीक गे एसु बुगिन जगर। आञओ ओन्डो बिमल बाबु को नेलकेडा चि। एसु बुगिन सेपेडमेना चि। अञ ओन्डो बिमल बाबू को अरातिड लगिड् नमेया।' (बहुत अच्छी बात है। मैं भी बिमल को देखी हूँ, वह बहुत ही अच्छा लड़का है। मैं भी उसे अपना दामाद बनाना चाहूँगी।)

किशुन–'बोरजो दादा, मुझे विश्वास हो गया कि अब आप लोगों का सम्बन्ध जुड़ कर रहेगा।'

बोरजो–'जब बिमल की एंगा तैयार है, तो निश्चय यह बपला हो जायेगा।'

किशुन– 'अब मैं 'गोनोङ' के संबंध में आप का विचार जानना चाहूँगा।'

बोरजो–'देखो सोमोदि, जब दोनों लड़का–लड़की मुखर्जी सायोब के किरिपा से नौकरी में लग गए हैं और दोनों एक दूसरे को चाहते हैं, तब उनकी आंदि के लिए 'गोनोङ' बाधक नहीं होगा। फिर भी समाज को दिखाने के लिए तो आपलोगों को कुछ विचार करना होगा।'

किशुन–'आपने बहुत अच्छी बात कही। हमलोगों के समाज में गोनोङ की परम्परा काफी दिनों से चली आ रही है और हमारा समाज इसे प्रतिष्ठा की बात मानता है। इसलिए हमलोग परम्परा से चली आ रही गोनोङ में उरि, मेरोम, टका, लिजा (बैल, बकरा, नगद राशि, वस्त्र) आदि सबकुछ देंगे ताकि गाँव में आपकी प्रतिष्ठा बनी रहे।'

बोरजो– 'आबेन जगर रेया आञा एसु रासायंकेडा' (मैं आपकी बात से बहुत प्रसन्न हुआ)।'

किशुन–'अब हम चाहेंगे कि सुनीता के बपागे (छेंका) के संबंध में दिन तय कीजिये।'

बोरजो–'मैं दिउरी(पुजारी और मुंडा) से बात कर आप को किरिबुरू आकर बता दूँगा।'

इसके बाद सीमजीलु, मंडी, दालि आदि का सुभोजन सभी मिलकर किए। किशुन उनको जोहार कर किरिबुरू के लिए प्रस्थान किया। उसे पूरा विश्वास हो गया कि सिङबोंगा की कृपा से यह बपला बिना किसी अवरोध के सम्पन्न हो जायेगा।

किरिबुरू वापस आकर वह अपने भाई–भाभी को बोरजो से हुई बातचीत का संवाद भेज दिया और पांडु को तीसरे दिन किरिबुरू बुला लिया।

दूसरे दिन (सोमवार) बोरजो भी किरिबुरू आ गया था। उसने गाँव के दिउरि से आंदि (शादी) के लिए शुभ लगन के लिए दिन बताने को कहा था। दिउरि ने मटकम चन्डु (फरवरी) में प्रथम गुरूवार (वृहस्पति) को बपागे (छेका) का दिन निर्धारिरत किया था। आंदि भी इसी महीना में दूसरे या तीसरे गुरूवार को शुभ मुहुर्त बताया था।

किशुन बोरजो से साम को मिला। बोरजो को दिउरि द्वारा बताये गये शुभ मुहुर्त की जानकारी दे दी।

तीसरे दिन पांडु भी किशुन के पास पहुँच गया। किशुन उसे लेकर बोरजो से मिला। बोरजो ने उसका स्वागत किया और बापागे (छेका) और आंदि के लिए शुभ दिन और मुहुर्त संबंधी जानकारी दे दी। यह भी तय हुआ कि संध्या समय हमलोग (तीनों) मुखर्जी सायोब से मिलकर सुनीता की शादी तय होने की खुशखबरी दे देंगे।

संध्या समय पांडु, किशुन और बोरजो मुखर्जी साहब के बंगला पहुँचे। मुखर्जी साहब लॉन में पत्नी के साथ बैठे थे। उन्हें गेट पर देखकर माली ने जोहार कर साहब से पूछकर उन्हें अन्दर बुला लिया। तीनों ने साहब और मेम साहब को जोहार किया। तीनों को कुर्सी पर बैठाया गया।

मुखर्जी– 'क्या बात है कि आप तीनों साम को आ गए?

बोरजो– 'सायोब, हमलोग सुनीता और बिमल की शादी ठीक कर दिए हैं। आपलोगों को यह खुशखबरी देने आये हैं।'

मिसेज मुखर्जी–'एतो भालो समाचार सुनकर बहुत खुशी हुई। सोनी तो हमारी भी छेली (बेटी) है। बिमल को भी हमलोग बहुत प्यार करते हैं। वह बड़ा ही विनम्र, आज्ञाकारी और सुन्दर छेला (लड़का) है। कब शादी होने की बात तय की गई है?'

बोरजो–'माँजी, फरवरी में उसका बपागे। छेका होगा और उसके बाद एक सप्ताह के भीतर आंदि (शादी) हो जायेगी। उसकी शादी बिमल के घर

पर होगी।'

मुखर्जी–'बहुत खुशी हुई कि आपलोग हमलोगों के मन की बात पूरी कर दिए। हमलोग भी चाहते थे कि हमारी सोनी बेटी को मनचाहा पति मिले और वह मिल गया।'

मिसेज मुखर्जी–'मैं भी जानती थीं कि दोनों अच्छे दोस्त और एक दूसरे से प्यार भी करते हैं। अतः इस शादी से मुझे हार्दिक खुशी होगी। मैं सोनी की शादी में जरूर जाऊँगी।'

बोरजो–'सायोब, शादी के लिए सुनीता को दो सप्ताह की छुट्टी देनी होगी। बिमल को भी उतने दिनों की छुट्टी देनी होगी।'

मुखर्जी–'ठीक है। छेका, शादी आदि की तारीख तय हो जाने पर सुनीता को छुट्टी मिल जायेगी। बिमल को भी आवेदन देने को कह देंगे।'

इस बीच सुनीता चाय–बिस्कुट–पानी लाकर सभी को जोहार की। अभी उसे शादी तय होने की जानकारी नहीं थी। हालाँकि उसे मालूम था कि शादीकी बातचीत चल रही है।

थोड़ी देर बैठकर तीनों मुखर्जी और उनकी पत्नी को धन्यवाद तथा जोहार कहकर चले गए। वे डॉ0 मोहन्ती के बंगला पर जाकर उनसे सुबह में मिले और सुनीता की शादी तय हो जाने की बात बताई। डाँ0 मोहन्ती ने सुनीता के विवाह का समाचार सुनकर अपनी खुशी व्यक्त की। उन्होंने बोरजो से कहा–'आप सुनीता को छुट्टी के लिए आवेदन देने को कह देंगे। उसे स्वीकृति हेतु कार्रवाई कर दूँगा। शादी के बाद आकर अपनी ड्यूटी ज्वाइन कर लेगी।'

चार फरवरी से सुनीता और बिमल दोनों छुट्टी लेकर अपने–अपने गाँव चले गए थे। दोनों के घरों को रंग–रोगन से शादी के लिए सजा दिया गया था।

छुट्टी में जाते समय मिसेज मुखर्जी ने सुनीता की शादी के लिए साड़ी, ब्लाउज, साया, चूड़ी तथा श्रृंगार बाँक्स और एक लेदर सूटकेश में दे दी थी। साथ ही साथ 201/–रू0 न्योता के रूप में दे दी थीं। उसकी माँ के लिए साड़ी और बोरजो के लिए धोती भी दे दी थी।

बोरजो ने शादी में आने का निमंत्रण अपने सभी संबंधियों को भेज दिया था। सभी निर्धारित समय पर आ गए थे।

इधर बिमल के यहाँ भी शादी के पूर्व की रश्म की तैयारी कर ली गई थी। 'बपागे' छेका के दिन उसकी हतोम (फुआ), चचेरी बहन(अजि) आदि छेका के लिये लिजा (वस्त्र) आदि लेकर बोरजो के घर पहुँच गए थे। सभी

का स्वागत लोटा–पानी से किया गया और उन्हें आदर के साथ अतिथि कक्ष में बैठाया गया।

थोड़ी देर में सुनीता तैयार होकर अपनी माँ के साथ आकर सभी को हाथ जोड़कर जोहार की। नई साड़ी में वह काफी सुन्दर लग रही थी। वहाँ गाँव का दिउरी गुरूचरण सुम्ब्रुई, मुंडा आदि भी आ गए थे। सुनीता की होनेवाली हतोम अजि(फुआ सास) ने अपने पास बैठा कर उसकी शिक्षा, नौकरी आदि के विषय में जानकारी लेने लगी। उन्होंने सुनीता से कुलिकजि (राय जानने) के तहत पूछा–क्या तुम्हें बिमल से बपला स्वीकार है? सुनीता ने मुस्कराकर कहा– 'इया' (हाँ)। सुनीता की होनेवाली सास तो उसे पहले ही देख चुकी थी।

इसके बाद 'बपागे' (छेका) के लिए लाये वस्त्रादि (साड़ी, हतरमुर्की (कंगन) तथा कुछ नगद राशि सुनीता को भेंट की। सुनीता सभी को पैर छूकर जोहार कर अपने कमरे में चली गई।

इसके बाद सभी अतिथियों को सुस्वादु सिमसांडी जिलु (मुर्गा का मांस मंडि (भात), दालि (दाल) आदि के साथ डियंग देकर बपागे का भोज सम्पन्न कराया गया।

साथ में आये बिमल के चाचा किशुन ने बोरजो से कहा–'अच्छा सोमोदि, गोनोङ हर बपला के लिये आप को बुधवार को पांडु दादा ने आमंत्रित किया है। उस दिन आप बिमल के घर–द्वार को भी देख लेंगे और उसे आर्शीवाद भी देंगे। वहाँ आपको उपहार (गोनोङ) के रूप में एक उरि (बैल), एक मेरोम के साथ–साथ कुछ नगद राशि (टका) भी भेंट किया जायेगा।'

बोरजो–'एसु बुगिन जगर सोमोदि (बहुत अच्छी बात है समधी) हमलोग दिन में 11 बजे तक आपके गाँव आ जायेंगे।'

इस प्रकार बपागे रश्म को पूरा कर सभी अपने गाँव वापस चले गए थे।

निर्धारित दिन को बोरजो अपने संबंधियों के साथ पांडु के गाँव लगभग 11 बजे पहुँच गया था। वहाँ पांडु, किशुन, पांडु के मामु (फूफा) तेयंग कोवा (साला) आदि रिस्तेदार उन लोगों का स्वागत कर बैठाये। सभी को नास्ता–पानी के बाद गोनोङ में दिये जाने वाले उरि(बैल) और मेरोम (बकरा) को दिखलाया गया। सभी ने उसे पसन्द किया। साथ ही, धोती–साड़ी, नगद राशि लाकर बोरजो को दिया। बिमल ने सफारी सूट में आकर अपने होने वाले श्वसुर बोरजो और उनके संबंधियों को पैर छूकर हाथ जोड़कर जोहार

किया। बोरजो ने भी अपने साथ लाये अंगवस्त्र और कुछ नगद राशि आर्शीवाद के रूप में बिमल को दिया।

इसके बाद तिल डियंग रश्म के अनुसार डियंग का आदान–प्रदान हुआ। सभी ने गोनोंङ हर (वधुमूल्य प्राप्ति) के बाद मेहमानों को मुर्गा–भात का सुस्वादु भोजन कराया गया।

इसके बाद आंदि को सम्पन्न करने हेतु बोरजो और पांडु ने गाँव के दिउरी से शुभ लगन के लिए दिन पूछा। दिउरी ने चौथे दिन गुरूहर (गुरूवार) को कन्या को आंदि के लिए वर के घर लाने के लिए शुभ दिन बताया।

इस पर सबकी सहमति बनी कि 'ओर एरा को' (वर के घर कन्या को लाना) रश्म के अनुसार गुरूवार को 11 बजे तक पांडु दो गाड़ी लेकर अपने संबंधियों के साथ बोरजो के गाँव पहुँच जायेंगे। वहाँ 'उलि साखी या साखी सुतम (आम के वृक्ष में कन्या द्वारा कच्चा सूत बाँधना) आदि रश्म को पूरा कर कन्या को बारातियों के साथ आंदि के रश्मों को पूरा करने के लिए वर के धर लाया जायेगा। बोरजो ने इस पर अपनी सहमति दी। कुछ देर बाद बोरजो आदि गोनोङ के सामानों (उरिमेरोम आदि) के साथ पांडु से विदा लेकर अपने गाँव को चल दिए।

निर्धारित तिथि को एक माटाडोर और एक जीप के साथ पांडु, किशुन अपने अन्य संबंधियों के साथ बाजा–गाजा (मान्दर आदि) के साथ विदा हुए। इस शादी में पुरनिया पीड़ के डोबरो मानकी भी सपरिवार बोरजो के घर आये थे। लगभग 11.30 बजे लोग बोरजो के घर पहुँचे। सभी का स्वागत बोरजो, उसके संबंधी, गाँव के मुंडा आदि ने किया। सभी को खाना खिलाया गया।

उधर सुनीता को भी दुल्हन के रूप में सजाया गया था। नई साड़ी और गहनों में वह काफी सुन्दर और आकर्षक दीख रही थी।

वर के घर जाने के पूर्व उसने अपनी माँ आदि के साथ 'साखी सुतम' के तहत गाँव की सीमा पर अवस्थित आम के वृक्ष के पास जाकर हल्दी रंगा कच्चा सूत को सात बार आम की डाल में बाँध कर नमन करते हुए कहा–'हे जहेर एरा ओन्डो देशाउलि बोंगा, आप को नमस्कार करती हूँ। आपकी गोद में मैं खेल–कूद कर बड़ी हुई। अब मैं आप से विदा लेकर दूसरे प्रदेश (गाँव) में आंदि के लिए जा रही हूँ। मेरी शादी बिना किसी बाधा के सुख–पूर्वक सम्पन्न हो जाय, ऐसा आर्शीवाद दें। आंदि बाद मैं फिर आपका दर्शन करने आऊँगी।'

साकी सुतम के बाद सगुन विचार के अनुसार 'ओर एरा को होरा रे (कन्या के ले जाने का निर्धारित मार्ग) के अनुरूप दोनों गाड़ियां चल दी।

लगभग 4 बजे लोग पांडु के गाँव पहुँच गए। वहाँ नगाड़ा–मान्दर के साथ सभी का स्वागत किया गया। आये बारातियों के ठहरने के लिए घर के सामने विद्यालय भवन के पास सामियाना लगाया गया था।

शादी के लिए पांडु के घर के आंगन में साल वृक्ष के डाल से मंड़वा बना कर सजाया गया था। मंड़वा में दिउरि द्वारा पवित्र खोंड (अल्पना) गेलबोरोम के प्रतीक के रूप में बनाया गया था। वहीं पर शादी सम्पन्न करने के लिए बेदी भी बनाई गई थी।

सभी बारातियों को जनवासा में ठहराया गया। वहाँ बारात में आये लोग ढोल–मान्दर पर शादी के गीत गाकर नृत्य कर रहे थे। सुनीता की होनेवाली फुआ सास उसे घर के भीतर एक कमरे में ले गई। वहाँ भी शादी की रश्में शुरू हुई। देर रात तक मंड़वा में बिमल और सुनीता को बैठाकर दिउरी द्वारा मंत्र पाठ कर आंदि की विभिन्न रश्में पूरी की जा रही थीं। देर रात तक शादी रश्में चलती रहीं। अन्त में 'सिन्दूरी रकब' या सिन्दुर दान के तहत बिमल द्वारा सुनीता की माँग मे सुहाग का सिन्दुर लगा कर उसे अपना सुहागिन 'एरा' बनाने की रश्म पूरी की गई। सभी लोग जय–जयकार कर रहे थे। फोटोग्राफर भी फोटो लेने में लगे हुए थे। इस तरह 'सादोर बपला' सम्पन्न हो गया और सुनीता डिंडा कुइ से सुहागिन पत्नी बन गई। उसने मन ही मन अपने पितरों और सभी देवताओं को नमन किया।

इसके बाद बाराती में आये सभी मेहमानों के साथ–साथ गाँव और घर के अतिथियों का प्रीतिभोज सम्पन्न हुआ। सभी थोड़ी देर के लिए जनवासा में विश्राम करने चले गए। महिलाओं के लिए विद्यालय का एक कमरा लिया गया था। रात्रि के अन्तिम प्रहर में सभी सोने चले गए।

दूसरे दिन डियंग के साथ नास्ता कराकर बोरजो सभी के साथ गाड़ी से अपने गाँव आ गया था।

अब सुनीता जोंको से श्रीमती सुनीता जामुदा के रूप में बिमल जामुदा की प्रिय येरा (पत्नी) और पांडु जामुदा मुंडा की किमिन (बहु) बन गई थी। उसे अपने मायके और ससुराल से कई सुन्दर साड़ियों के साथ–साथ आभूषण के रूप में सोने का सकोम (कंगन) हतरमुर्की(कर्णफूल), हिसिर (हार), मुटा (नथिया), दुपिल (मांगटीका), सकोम(अंगुठी) तथा चांदी का अन्दु (पायल) मिला था।

शादी के तीसरे दिन बिमल सुनीता को लेकर एक दिन के लिए अपने ससुराल गया था। सुनीता को सुन्दर साड़ी और गहनों में देखकर उसके गाँव के सभी लोग काफी खुश थे। बिमल भी सफारी सूट में बहुत आकर्षक लग

रहा था। गाँव के मुंडा आदि बोरजो के घर आकर दोनों से मिलकर इस सुन्दर जोड़ी की प्रशंसा कर रहे थे।

दूसरे दिन बिमल अपने घर वापस आ गया था। अब सुनीता को अदिञ (रसोईघर) में पितरों की पूजा कर रसोई घर में प्रवेश कर परिवार के लिए अपने हाथों से मंडि–उतुर (भोजन) बनाकर अपने पूर्वजों को चढ़ा कर सभी को भोजन कराने की रश्म पूरी करनी पड़ी। अब वह इस परिवार के पूर्वजों की मनातिञ (सम्मान) कर उस परिवार की पूर्ण सदस्या बन गई। उसकी हनर (सास) जींगी कुइ और होंयर (ससुर) पांडु मुंडा सुनीता जैसी सुन्दर, सुशील और विनम्र किमिन (बहु) को पाकर काफी सन्तुष्ट थे।

शादी के लिए मिली छुट्टी समाप्त होने के बाद बिमल सुनीता को लेकर किरिबुरू चला गया था। दोनों मुखर्जी साहब के बंगला जाकर मुखर्जी एवं मिसेज मुखर्जी को जोहार किए। दोनों ने उनको आर्शीवाद दिया। मिसेज मुखर्जी ने बिमल से कहा–'तुमी आमार जमाई बाबू। आमार सोनी बीटी के खूब भालो कोरो राखबेन। (तुम अब हमारे दामाद बन गए। हमारी सोनी बेटी को अच्छा से रखोगे)

दोनों को मिसेज मुखर्जी आउट हाउस में लेकर गई जहाँ पहले से एक पलंग पर गद्दा, चादर, तकिया आदि के साथ–साथ एक छोटा लोहे का गोदरेज आलमीरा भी रखा हुआ था। इस प्रकार दोनों के कमरे को मुखर्जी साहब ने पूर्व से ही सुसज्जित करा दिया था। बिमल और सुनीता को लगा कि सचमुच दोनों हमारे धर्म के माता–पिता हैं। दोनों के प्रति उनका हृदय कृतज्ञता से भर गया।

मिसेज मुखर्जी–'अब बिमल तुम जंवाई (दामाद) बनकर यहाँ रहोगे। सुनीता के साथ–साथ तुम्हारा नास्ता–खाना इसी बंगला में होगा।'

दोनों ने पुनः मिसेज मुखर्जी का चरण छूकर आर्शीवाद लिया।

सुनीता रसोई घर में जाकर कुछ नास्ता ले आई। नास्ता कर दोनों अपनी ड्यूटी पर चले गए। संध्या समय सुनीता बिमल को लेकर डॉ0 मोहन्ती के बंगला पर जाकर डॉ0 मोहन्ती और मिसेज मोहन्ती को जोहार किया। उन्होंने दोनों को शादी की बधाई दी और रसगुल्ला खिलाकर उनका मुँह मीठा किया।

दोनों मिलजुल कर मुखर्जी साहब के रसोई से लेकर हाट–बाजार आदि का काम भी सम्पन्न कर देते थे। अब बिमल भी मुखर्जी साहब के घर का एक सदस्य बन गया था। हाट लगने पर दोनों हाट जाकर साग, सब्जी, मछली आदि ले आते। सुबह में ही सुनीता चाय–नास्ता बनाकर दोनों के

साथ–साथ मृणालिनी और वरूण के लंच बॉक्स तैयार कर उनके स्कूल बैग में रख देती।

इस बीच लगभग एक माह बाद किरिबुरू अस्पताल का एक कम्पाउन्डर सेवा निवृत (रिटायर) हो गया था। मुखर्जी साहब ने डॉ0 मोहन्ती से उसे सुनीता के नाम से आवंटित कराने का आग्रह किया था। उन्होंने सुनीता से क्वाटर एलॉट करने का आवेदन लेकर डॉ0 मोहन्ती को भेज दिया था। उन्होंने बहादुर सिंह, ठिकेदार को उस क्वाटर की साफ–सफाई, रंगाई–पोताई का आदेश दे दिया था।

लगभग एक सप्ताह बाद सुनीता बिमल के साथ नये क्वाटर में चली गई थी। दो कमरों के क्वाटर में किचेन, बाथरूम आदि काफी अच्छा और सुविधाजनक बना था। एक बड़ा बरामदा भी था। आंगन में आम और अमरूद के वृक्ष थे।

सुनीता धीरे–धीरे अपनी गृहस्थी के साजो समान बिमल के साथ मिलकर बाजार से ले आई। अब दोनों अपनी नई गृहस्थी पूरी तरह बसा ली थी। बिमल अपने चाचा और ससुर को बुलाकर अपने घर में प्रीतिभोज का आयोजन किया था।

अब बिमल ट्रेनिंग खत्म कर वहाँ का मेकानिक बन गया था। उसे वर्कसॉप के चार्जमैन के साथ ड्यूटी मिल गई थी। सुनीता भी ए0एन0एम0 का काम पूरी दक्षता से निभा रही थी।

इस प्रकार सुनीता एक ऐसी भाग्यशाली डिंडा कुइ साबित हुई जिसने अपने परिश्रम और लगन से अपना तथा अपने परिवार को समृद्धिशाली बना दिया। मुखर्जी साहब की संवेदनशीलता और मानवीय सेवा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता प्रशंसनीय थी। मिसेज मुखर्जी ने अपने स्नेह और अच्छे संस्कार देकर सुनीता को एक योग्य एवं सक्षम जीवन संगीनी बना दिया।

(8)

वास्तुकला के विशेषज्ञ असुर जब असिरिया से प्रव्रजित होकर ई0पू0 लगभग 4000 वर्ष की कालावधि में सिंधु नदी की घाटी में आकर बस गए थे। वहाँ उन्होंने 'ईंट' का निर्माण प्रारम्भ प्रथम बार शुरू किया था। सिन्धु घाटी के हड़प्पा, मोहनजोदड़ो आदि में हुए उत्खनन में इसके साक्ष्य मिले हैं।

सिन्धु घाटी से पलायन कर असुर जब बिहार के गांगेय घाटी में आकर बस गए तो उस क्षेत्र में ईंट का निर्माण कर अपने महल आदि का निर्माण किया। इसका प्रमाण शाहाबाद (भोजपुर) के बक्सर आदि में किए गए उत्खनन में मिला है।

इसी पौराणिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में बिहार में प्रवाहित–जाहन्वी (गंगा) के किनारे दियारा क्षेत्र में परवर्तीकाल में देवेन्द्र सिंह (भोजपुर) के पूर्वजों ने आधुनिक काल में निर्मित चिमनी वाले ईंट भट्ठा के निर्माण कार्य का शुभारम्भ सैकड़ों वर्ष पूर्व किया था, जिसका विस्तार पाटलीपुत्र के नगर फतुहा से मोकामा तक हो गया। इनमें देवेन्द्र सिंह का गंगा के दक्षिण भाग में फतुहा के पास कई ईंट भट्ठे संचालित हैं। इसका प्रमाण ईंट भट्ठों की ऊँची चिमनियों से निकलते धुएँ से दूर–दूर से ही दिखाई पड़ जाता है।

फरवरी के अन्त में झारखण्ड में जब मागे पर्व का समापन हो जाता है, सैकड़ों की संख्या में युवक, युवतियाँ इन ईंट भट्ठा में काम करने चले आते हैं और जून के अन्तिम सप्ताह में पुनः अपने–अपने गाँव लौट जाते हैं। महिला श्रमिकों में अधिकांश 'डिंडा कुइ' (कुँआरी कन्या) होती हैं।

कोल्हान के सारन्डा वन क्षेत्र से अनेकों युवतियों को ईंट भट्ठा में काम करने हेतु लेकर जाने का कार्य उनका मुंशी छोटानागरा क्षेत्र निवासी विजय सवैया करता रहा है। उसके इस कार्य में बलन्डिया क्षेत्र का मनोज सुन्डी भी सहयोग करता है। इस क्षेत्र की कई युवतियाँ वर्षों से उनके ईंट भट्ठा में काम करती रही हैं।

इस भट्ठा में पनमति पुरती और सूरजमनी सुन्डी वर्षों से मनोज सुन्डी के साथ आकर काम कर रही है। दोनों के घर की आर्थिक स्थिति खराब है

और अपने परिवार को आर्थिक सहायता के लिए उन्हें अपने हातु (गाँव) से इतना दूर आकर मजदूरी करना पड़ता है। दोनों वर्षों से हापानुम 'डिंडा कुइ' (जवान कुँआरी युवती) होने पर भी अभी तक उनके बपला (विवाह) के लिए किसी सेपेड डिंडा कोवा (कुँआर युवक) के लिए कोई 'अगुआ' (बिचवान) उनके घर नहीं आया है।

इस बार भी 'मागे चन्डु' (मागे पर्व) के बीत जाने पर विजय को सिंहजी के ईंट भट्ठा के लिए एक नई डिंडा कुइ रेजा को साथ लेकर जाना था जिसका नाम गीता गगराइ था। वह छोटानागरा के निकट की रहने वाली थी। उसके पिता की मृत्यु हो चुकी थी और इस कारण उसे मिडिल पास करने के बाद पढ़ाई छोड़नी पड़ी थी। वह अपने भाई मदनमोहन गगराई को छोटानागरा आवासीय विद्यालय में पढ़ा रही थी। जंगल से लकड़ी, पत्ता आदि लाकर उनको बेचकर अपने घर का खर्च वहन करती थी।

गीता की माँ बसमती गगराई ने विजय से कहा था–'बाबू, इस बार मागे के बीतने पर तुम गीता को भी काम दिलाने के लिए अपने साथ लेते जाओगे। वह भी शहर जाकर कुछ टका–पोयसा कमाना चाहती है।'

विजय –ठीक है काकी, मैं अगले सप्ताह अपने मालिक देवेन्द्र सिंह से मिलने जा रहा हूँ। उनसे गीता के संबंध में बाते करूँगा। सिंहजी से सभी को काम पर ले जाने के लिए कुछ रूपये भी लेना है।

छोटानागरा क्षेत्र में फरवरी माह के भिन्न–भिन्न तिथियों को मागे पर्व का आयोजन किया गया था। गीता के गाँव में दूसरे सप्ताह में मागे पर्व का आयोजन होना था। यह हो का सबसे मरङ् पर्व (बड़ा त्योहार) माना जाता है। इसमें बाहर से रिश्तेदार भी मागे पर्व में कुपुल (मेहमान) बनकर आते हैं। विजय के गाँव में तीसरे सप्ताह में मागे पर्व को मनाने की तैयारी थी।

जनवरी महीनें में विजय फतुहा जाकर देवेन्द्र सिंह से मिला था। उन्होंने उसे तीन हजार रूपये अग्रिम दिए थे और गीता को काम पर लाने की स्वीकृति उन्होंने दे दी थी।

विजय फतुहा से वापस आकर गीता के गाँव जाकर उसकी माँ से मिला था। उसने गीता की माँ को कुछ रूपये दिये थे। गीता की माँ उसे मागे पर्व में खर्च के लिए रूपये मिल जाने से काफी खुश थी। गीता भी विजय से मिली थी और विजय ने उसे भी फतुहा लेकर जाने की बात कही थी। गीता की माँ ने विजय को भी मागे पर्व में आने का न्योता दिया था।

गीता की माँ और गीता ने मिलकर अपने घर को रंगीन मिट्टी से लिप–पोत कर सजा दिया था। मागे पर्व में गीता के भी कई रिश्तेदार आ

गए थे। विजय भी 'मरङ पर्व' के दिन आया था। पूजा–पाठ दिउरी(पुजारी) द्वारा सम्पन्न किए जाने के बाद अखड़ा में सभी युवक–युवतियाँ मागेदुरंग (मागेगीत) के ताल पर नृत्य कर रही थी। विजय भी इसमें सामिल था। काफी देर तक नाच–गान चलता रहा। उसके बाद सीम जीलू (मुर्गा का मांस) मांडी (भात) और डियंग (चावल का पेय पदार्थ) से सभी को मागे का भोज दिया गया।

विजय भी गीता से विदा लेकर अपने गाँव चला गया था। उसने गीता को तीसरे सप्ताह में अपने घर पर मागे में आमंत्रित किया था। उसने बताया कि मागे के बासी पर्व के दूसरे दिन वह फतुहा जाने के लिए तैयार रहेगी।

इस ईंट भट्ठा की स्थापना देवेन्द्र सिंह के स्व0 पिता महेन्द्र प्रताप सिंह द्वारा भोजपुर से आकर वर्षों पहले की गई थी। उस समय देवेन्द्र वाराणसी में अध्ययनरत थे। वे पहलवान के साथ–साथ दबंग टाइप के बाबू साहब थे। ईंट भट्ठा चालू होने के साथ–साथ कुली–रेजा के रहने के लिए ईंट के छोटे–छोटे झोपड़ीनुमा कमरे बनवा दिए थे, जिसका छप्पर फूस और पुआल का बना हुआ था। उस छोटी कोठरी में न धूप का प्रवेश था और न ही हवा जाती थी। उनके साथ आये मैनेजर–मुंशी द्वारा रेजा (महिला मजदूर) का आर्थिक और शारीरिक शोषण भी होता था। सिंहजी के दबंगई और प्रताड़ना का भी शिकार होना पड़ता था। आदिवासी क्षेत्र से उनके दलाल अधिकांशतः गरीब घरों की 'डिंडा कुई' (कुँआरी युवती) को ही रेजा का काम कराने के लिए लाते थे जो कम मजदूरी में काम करने को विवश होती थीं। उनके अत्याचार से पीड़ित कोल्हान क्षेत्र की कई युवतियाँ काम छोड़कर वापस चली गई थीं। उनके उत्पीड़ित जीवन के दुःख–दर्द को हो भाषा के कवि कमल लोचन कोड़ा ने बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया था –

दिन सदुब पइटि कमि,
होम्हो जीबोन रोपोःए सोटोःए
बलेः बलेः सोमोए रेंगेग–डिन्डङ् मयङ् तन।
लइः पेरेः मन्डिरेचा,
जि सुकु पइटि रेचा
एरं गेन्दे पइटि नला होम्हो गोसोतन।
टइन बसा सुकुरि गुयु
कःए बेटए जेटे मरसल
उंगुड बोलो सुकुरि गुयु चिमिन दुकुमा।।

भावार्थ :– ईंट भट्टा में दिन भर काम करने पर भी भरपेट खाना नहीं

मिल पाता है। काम भी मन के लायक नहीं है। भट्ठा मालिक की गाली और फटकार सुनकर उनका शरीर और मन हीन भावना से भर जाता है। उसी झोपड़ी में उन्हें रहना और खाना भी पकाना पड़ता है। उसमें धुआँ भर जाने से उन्हें कई रोगों का शिकार होना पड़ता है। उनके रहने का घर सुअर के खोभाड़ (घर) जैसा होता है, जहाँ सूरज की किरणें भी नहीं पहुँच पाती हैं। इस घर में रहने पर काफी कष्ट उठाना पड़ता है।

परन्तु देवेन्द्र सिंह अपने पिता महेन्द्र प्रताप सिंह की मृत्यु के बाद जब ईट भट्ठा का प्रबन्धन अपने हाथ में लिये तो पूरी व्यवस्था में आमूल–चूल परिवर्तन ला दिये। देवेन्द्र सिंह वाराणसी के बी.एच.यू. से ग्रेजुएशन किये थे। वे काफी मधुर और संवेदनशील युवक थे। उन्होंने कई ऐसे कर्मचारियों को छुट्टी दे दी जो रेजा–कुली के साथ ज्यादती करते थे। उन्होंने अपने मैंनेजर–मुंशी के रूप में पढ़े–लिखे युवकों को रख लिया था जिन्हें हर तरह की सुविधा के साथ–साथ सही पारिश्रमिक का भुगतान समय पर कर दिया करते थे। एक वर्ष के भीतर ही उन्होंने रेजा–कुली के लिए रहने हेतु सुविधा युक्त नये–नये पक्के कमरे बनवाये, जिनमें हवा और धूप के लिए खिड़की की व्यवस्था थी। खाना पकाने के लिए आवासीय कमरों के पास अलग से शेड बनाया गया था, जहाँ लकड़ी और कोयला के चूल्हे पर खाना बनाने की सुविधा थी।

इस नई व्यवस्था के बाद बलन्डिया का मनोज सुन्डी पनमती पुरती और सूरजमनी हसदा के साथ देवेन्द्र सिंह के ईंट भट्ठा में काम करने आ गया था।

उधर छोटानागरा क्षेत्र का विजय सवैया चिड़िया माइन्स में मुंशी का काम करता था। परन्तु युनियन और प्रबन्धन के आपसी झगड़े के कारण अचानक काम बन्द हो गया था। इसी बीच उसकी मुलाकात मनोज सुन्डी से हुई और वही विजय को ईंट भट्ठा ले जाकर सिंह जी से मिलवाया था। विजय मैट्रिक पास था और उसे माइन्स में मुंशी के काम का अनुभव था। अतः सिंह जी ने अपने ऑफिस में उसे रख लिया था। सिंह जी उसके आचार–व्यवहार से संतुष्ट होकर अपने ऑफिस के बगल में आउट हाउस में रहने की व्यवस्था कर दी थी। अब वह सिंह जी का एक विश्वास पात्र मुंशी बन गया था।

इस बार गाँव आने पर उसका परिचय गीता गगराई और उसकी माँ से हो गया था। अब गीता भी ईंट भट्ठा में काम करने के लिए तैयार हो गई थी। पूर्व निर्धारित तिथि को विजय पनमती और सूरजमनी के साथ गीता को

लेकर मनोहरपुर स्टेशन पहुँच गया। वहाँ से सभी चक्रधरपुर होकर बस से फतुहा के लिये रवाना हो गए थे।

विजय तीनों को लेकर तीसरे दिन सुबह में फतुहा पहुँच गया था। वह सभी को लेकर देवेन्द्र सिंह के छोटे भाई वीरेन्द्र सिंह के 'सिंह होटल' चला गया था। वहाँ सभी तैयार होकर नास्ता किये और विजय तीनों के साथ सिंह जी के कार्यालय पहुँच गया था।

विजय ने गीता का परिचय कराया तो गीता ने उन्हें 'जोहार' किया। गीता अभी पहली बार अपने गाँव से बाहर शहरी क्षेत्र में काम करने आई थी। उसे ईंट भट्टा में काम करने का कोई अनुभव नहीं था। सिंह जी ने हाजरी बही में गीता का नाम, पता आदि लिखने का आदेश विजय को दे दिया था। उन्होंने विजय को गीता के रहने के लिए एक खाली कमरा देने का आदेश दे दिया।

विजय तीनों को लेकर गीता के लिए आवंटित कमरे में गया। उसमें लगे ताला को खोलकर कमरे के रैक में गीता को अपना सामान रखने को कह दिया। पनमती और सूरजमनी अपने कमरों की साफ–सफाई में लग गई थीं क्योंकि वे पूर्व से ही उन कमरों में रह रही थी। गीता ने भी चापानल से पानी लाकर कमरे की सफाई कर दी। सभी कमरों में बिजली के बल्ब लगे हुए थे। उसे अपना कमरा काफी अच्छा लगा। उसमें सोने के लिए एक चौकी लगी हुई थी।

अभी सभी गाँव से आये थे। सिंह जी ने विजय को कुछ रूपये देकर फतुहा बाजार से गीता के लिए खाना पकाने, खाने–पीने और पानी रखने के लिये बरतन आदि खरीदने का निर्देश दे दिया था। साथ ही, उन्हें चावल, दाल, सब्जी आदि खाना बनाने की सामग्रियों को भी लेने के लिए सभी को कुछ अग्रिम राशि दे दिए थे।

विजय तीनों को लेकर फतुहा बाजार गया, जहाँ से गीता के लिए बर्तन के साथ–साथ चावल, दाल, नमक, मसाला, तेल, साबुन आदि खरीदे। सभी ने एक होटल में दाल–भात आदि खाये। सभी सामान लेकर लगभग दो घंटे बाद लौटे।

गीता रात के खाने की तैयारी में शेड में बने चूल्हे को लिप पोत कर ठीक किया। पनमती और सूरजमनी भी ऑफिस के स्टोर में रखे अपने बर्तनादि ले आई। यह तय हुआ कि आज रात का खाना तीनों विजय के साथ मिलकर खायेंगी।

थोड़ी देर कार्यालय में काम सम्पन्न कर विजय भी संध्या समय गीता

के कमरे में आ गया। थोड़ी देर में पनमती और सूरजमनी भी गीता के कमरे में आ गई थीं। गीता के लिये उसके जीवन में एक नया अध्याय शुरू हुआ था। वह मन ही मन खुश थी कि वह अपने दोस्त विजय और सहेलियों के साथ सुखी रहेगी।

रात में चारों दाल, भात के साथ आलू–बैगन की सब्जी खाकर अपने–अपने कमरे में सोने चले गये। परन्तु सूरजमनी को गीता अपने कमरे में ही सोने का आग्रह किया। दोनों कुछ देर बातचीत कर सो गई थीं।

दूसरे दिन प्रातः उठकर तीनों गंगा किनारे जाकर शौचादि से निवृत हो नहा–धोकर वापस आ गई। तीनों ने आज एक साथ ही खाना बनाना शुरू किया क्योंकि आठ बजे ईंट भट्ठा जाकर काम शुरू करना था। तीनों माड़–भात और सब्जी खाकर ऑफिस जाकर विजय से मिली थीं। तीनों की हाजरी उसने बना दी। उसने गीता को बताया कि उसे कच्चा सूखा हुआ ईंट को लाकर भट्ठा के चैम्बर में रखना होगा। आज गीता का पहला दिन था। अतः वह अपने दोनों सहकर्मियों के साथ कच्चा ईंट ढोने चली गई थी। वह ईंट ढोने का काम पहले नहीं की थी। अतः एक बार में सिर पर छः ईंट ढोना शुरू की थी। अन्य दोनों दस–दस ईंट ढो रही थीं। ईंट भट्ठा में ईंट ढोने की संख्या पर ही प्रति हजार के हिसाब से रेजा–कुली को पारिश्रमिक का भुगतान किया जाता है।

ईंट भट्ठा से लगभग दो फर्लांग की दूरी पर ईंट पाथने (बनाने) और सुखाने का काम रामजनम और बहोरन नामक मिस्त्री द्वारा किया जा रहा था। आज दो और मिस्त्री नहीं आये थे।

तीनों के अलावे कई अन्य रेजा ईंट ढोने का काम कर रही थी। सभी काफी तेजी से अधिक संख्या में ईंट ढोकर चैम्बर में रख रही थीं। वहाँ तीन चार कुली ईंटों को चैम्बर में सजाने का काम कर रहे थे। सबसे कम संख्या में गीता द्वारा ईंट ढोया जा रहा था।

इस प्रकार दोपहर 1 बजे तक सभी के साथ गीता भी ईंट ढोती रही थी। खाने के लिए एक घंटे का विराम मिला था। तीनों अपने आवास में आ गई थीं। गीता कुछ अधिक थकावट महसूस कर रही थी।

तीनों खाना खाकर थोड़ी देर विश्राम कर पुनः अपने काम में लग गई थीं। लगभग छः बजे तक ईंट ढोलाई का काम चलता रहा। उसके बाद विजय ने हाजरी पंजी में सभी के द्वारा ढोये गए ईंटों की संख्या लिख दिया था। सबसे कम संख्या गीता द्वारा ईंट ढोने की थी।

विजय के अलावा नरेन्द्र सिंह उर्फ नाटा पहलवान भी मुंशी के रूप में

हाजरी बनाने का काम करता था। दोनों रेजा द्वारा ढोये गए ईंट की संख्या के आधार पर मजदूरी की राशि अंकित कर देते थे। प्रत्येक शनिवार को सभी के पारिश्रमिक की राशि का भुगतान कर दिया जाता था। रविवार को छुट्टी के दिन सभी फतुहा बाजार जाकर आवश्यकतानुसार खाने–पीने का सामान खरीदते थे। विजय भी तीनों के साथ बाजार जाकर सभी को आवश्यक सामान खरीदवा कर संध्या समय वापस आता था। संध्या समय चारों गीता के कमरे में बैठकर नास्ता–पानी कर गप्प–सप्प करते थे।

धीरे–धीरे गीता भी ईंट ढोने के काम में अभ्यस्त हो गई थी। कुछ दिनों के बाद वह 8 ईंट ढोने के बाद अब 10 ईंट ढो लेती थी। अब उसकी पारिश्रमिक की राशि में वृद्धि हो गई थी।

विजय का साथी मनोज सिंह जी के दूसरे भट्टे पर मुंशी का काम करता था। साथ ही, सिंह जी के ऑफिस में भी काम किया करता था। फिर भी रविवार को विजय के साथ भी बाजार–हाट जाया करता था।

गीता को फतुहा हाट में एक चीज की कमी खटकती थी और वह था 'डियंग' (चावल से बना नशीला पेय)। कोल्हान के हर हाट में 'डियंग' का एक अलग बाजार ही लगता है जहाँ सभी अपने सहिया, प्रेमी आदि के साथ डियंग पीते थे। हो क्षेत्र में तो 'डियंग' के सम्बन्ध में यह कहावत है–

डियंग बनोः जगर बनोः
जगर बनोः जीबोन बनोः।

भावार्थ –बिना डियंग पीये बातचीत कैसे संभव है और बिना बातचीत के जीवन का अस्तित्व कैसे संभव है?

अर्थात् 'डियंग' हो समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न अंग है।

गीता ने देखा कि इस क्षेत्र में ताड़ के लम्बे लम्बे वृक्ष काफी संख्या में थे। जहाँ ये वृक्ष होते हैं, उन्हें तड़बन्ना कहते हैं। विजय ने बताया कि इस पेड़ से जो रस निकलता है, उसे 'ताड़ी' कहते हैं। पासी जाति के लोग उसे घड़े में जमाकर 'ताड़ी खाना' नाम की दुकान में बेचते हैं। गर्मी के दिनों में इनकी खूब बिक्री होती है। ताड़ीखाना के पास चखना के रूप में चना, पकौड़ी, तली हुई मछली आदि भी बिकते हैं। विजय ने गीता से बताया था कि एक दो–बार वह भी बोतल में लाकर पीया था। पर उसे डियंग की तरह स्वादिष्ट नहीं लगा था।

गीता के आये एक महीना हो गया था और इस बाहा चन्डु (वसन्त पर्व या बा पर्व) में अपने गाँव और घर पर आयोजित 'बा पोरोब' की बहुत याद

आ रही थी। उसे अपने परिवार, रिस्तेदार और सहिया के साथ गाँव के अखड़ा में बा पर्व के गीत और मान्दर के ताल पर सामूहिक नृत्य की यादे काफी उदास कर दी थी।

संध्या समय वह पनमती और सूरजमनी के साथ गंगा किनारे चांदनी रात में मंजर से गदराये आम्र वृक्षों से आती मीठी–सुगंधित हवा के स्पर्श से उसका शरीर रोमांचित हो रहा था। तीनों मिलकर एक पुराने बा पर्व या बसन्त गीत के सस्वर गाकर नृत्य में मग्न हो जाती हैं :–

कुहु कुहु तोआउ दुरंग तनाए,
बा पोरोब दो सेटेर यान्तेयाः
बुगीन खबर एमतनाए।
होयोबा –मोचारे
चापुड तनाए सुआय–सुआयते
हेंदे हेंदे उरू को ना–रासी को
चेपेड तानः बुलावनेते।।

भावार्थ – कुहु–कुहु कोयल बोल रही है और वसन्तागमन का शुभ सन्देश दे रही है। पवन पुष्प के अधरों को हौले–हौले सहला रहा है। काले–काले मतवाले भौंरे पुष्पों के पराग को पी रहे हैं।

तीनों काफी देर तक बा गीतपर बिना मांदर के नृत्य करती रही थी। थोड़ी देर के लिए अपने हो दिसुम (हो प्रदेश) की याद भूल कर बसन्त गीत में खो गई थीं।

उनके सामने चांदनी में गंगा की इठलाती लहरें किसी प्रणयनी की तरह बलखाती चली जा रही थीं, मानो कोई प्रेमी, मिलन की आशा लिए उनकी प्रतीक्षा कर रहा हो।

तीनों वापस आकर खाना खाकर अपने–अपने कमरे में सोने चली गई थीं। विजय आज सिंह जी के किसी काम से पटना गया था। अतः संध्या समय वह गीता से नहीं मिल सका था। गीता को थोड़ी देर में अमराई की मदमाती हवा उसे लोरी सुना कर सुला देती है और वह सपनों की दुनिया में खो गई थी।

अब विजय और गीता की दोस्ती काफी घनिष्ट हो गई थी। विजय प्रायः हर साम को उसके पास आकर साथ–साथ नास्ता करता और अपने घर परिवार की बातें करता। वह गीता के मधुर स्वभाव और अपनापन के व्यवहार से काफी प्रभावित था। अब वह हाट के दिन उसके लिए तेल, साबुन या अन्य श्रृंगार के प्रसाधन अपने पैसे से खरीद कर ले आता था।

उधर नरेन्द्र (नाटा पहलवान) भी गीता से सम्बन्ध बढ़ाना चाहता था। परन्तु वह उस दीकू के आचार–व्यवहार को पसन्द नहीं करती थी। उसने अनुभव किया था कि नाटा की दोस्ती पनमती के साथ अधिक थी। पनमती काफी हँस–हँस कर उससे बातें और 'चकड़' (मजाक) करती थी।

गीता एक बार आधी रात को पनमती के कमरे से चादर ओढ़े एक व्यक्ति को निकल कर जाते देख ली थी। उसे थोड़ा भय भी लगा कि कहीं कोई चोर–उचक्का तो उसके (पनमती के) कमरे में नहीं घुस गया था। वह डर कर काफी देर तक जागती रही थी।

दूसरे दिन जब विजय उससे मिलने आया तो उसने रात की घटना की चर्चा की। विजय ने उसे बताया कि नरेन्द्र (नाटा) कभी–कभी रात में पनमती के कमरे में जाकर रात बिताता है। दोनों में प्रेम का संबंध मेरे आने के पहले से चल रहा है। वह यहाँ की पुरानी डिंडा कुइ रेजा बन गई है। मुझे मालुम हुआ है कि एक बार पनमती गर्भवती हो गई थी तो नाटा ने एक प्राइवेट नर्सिंग होम ले जाकर उसका गर्भपात करवा दिया था। उसको मैंने कई बार समझाया था और नरेन्द्र से मेल–जोल बढ़ाने से मना किया था। परन्तु वह नहीं मानी। गाँव में भी उसकी बदनामी के कारण अभी तक बपला के लिए कोई अगुआ नहीं आया। अब तो वह अधिक उम्र की 'डिंडा कुई' हो गई है। अब शायद ही हो समाज में उसकी शादी हो पायेगी।

धीरे–धीरे गीता का संबंध विजय के साथ एक अच्छे चरित्रवान सहिया (दोस्त) की तरह हो गया था। विजय ने अपने परिवार के संबंध में पूरी जानकारी दे दी थी। उसने बताया कि उसके पिता सिदिउ सवैया बड़बिल में काम करते थे। अब रिटायर होकर खेती का काम देखते हैं। उसकी माँ बसमती काफी अच्छे स्वभाव की है। उसका बड़ा भाई विनय सेना में है और अभी आसाम में आर्मी हेडक्वाटर में उसकी पोस्टिंग है। उसकी हिली (भाभी) सुनीता कुदादा (सवैया) पढ़ी–लिखी और काफी विनम्र स्वभाव की है। उसके मामू (फूफा) सनिका हेम्ब्रम चिड़िया माइन्स में सुपरवाइजर हैं और यहाँ आने के पहले उसे चिड़िया माइन्स में ही मुंशी के काम पर लगा दिये थे। जब चिड़िया माइन्स में हड़ताल हो गया तो माइन्स को बन्द कर दिया गया था। इसी कारण उसे ईंट भट्ठा में आना पड़ा।

इस प्रकार विजय का परिवार काफी सुखी–सम्पन्न और खुशहाल लगा। उसके मन में भी विजय के प्रति प्रेम का बीज अंकुरित हो रहा था। परन्तु वह अभी अपनी भावनाओं को मन में ही दबाकर रखना चाहती थी।

विजय ने गीता को बताया था कि उसके पिता उसके बपला (शादी)

के लिए बात–चीत कर रहे हैं। पर वह अभी आंदि करना नहीं चाहता। उसे अभी भी उम्मीद है कि जब भी चिड़िया माइन्स चालू हो जायेगा, उसे पुरानी नौकरी मिल जायेगी। वह ईंट भट्ठा में अपना भविष्य बिगाड़ना नहीं चाहता। उसे अपनी खेती गृहस्थी की देख–रेख के लिए सारन्डा क्षेत्र में ही रहना होगा।

विजय के उच्च विचार से गीता काफी प्रभावित हुई थी। अब उसकी विजय के साथ काफी आत्मीयता हो गई थी और दोनों एक–दूसरे के भविष्य और सुख–दुःख के बारे में सोचने लगे थे। गीता ने मन में यह सोच लिया था कि ईंट भट्ठा का काम खत्म कर जब वह गाँव वापस जायेगी तो विजय और उसके परिवार के विषय में पूरी जानकारी देगी। साथ ही उसके साथ मेरे बपला के बारे में भी माँ से अपना विचार बतायेगी।

ईंट भट्ठा का काम तेजी से चल रहा था। इसी बीच होली का त्योहार आ गया था। फाल्गुन के पूर्णिमा की रात 'होलिका दहन' की तैयारी चल रही थी। गंगा किनारे होलिका जलाने के लिए युवा वर्ग सूखे पेड़ की डाल, फूस, पुआल आदि जमा कर रहे थे। एक सप्ताह बाद रात में होलिका दहन सम्पन्न हो गया। दूसरे दिन रंगो का त्योहार होली था। होलिका दहन के दिन से ही सभी को छुट्टी दे दी गई थी। बहुत से ईंट पाथने वाले मिस्त्री, रेजा, कुली आदि होली मनाने अपने–अपने घर चले गए थे। दूर के रेजा–कुली आदि यहीं पर होली मना रहे थे। विजय, मनोज, पनमती, सुरजमनी और गीता दिन में मुर्गा–भात बनाकर खाये थे। रात में उनके खाने के लिए सिंह जी की ओर से पुआ, पूड़ी, खस्सी का मांस आदि भेज दिया गया था। इस प्रकार विजय आदि होली का त्योहार एक साथ पकवान और मीट खाकर मनाये।

बाहा चन्दु अथवा चैत्र के महीने के तीसरे रविवार को हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी देवेन्द्र के बगीचे में 'चैता' का आयोजन किया गया था, जिसमें दो दल ढोल, झाल, मजीरा आदि के साथ चैता के गीत गाने के लिए एकत्रित हुए थे। यह शुद्ध भोजपूरी गीतों का कार्यक्रम था। रात में चैता गीत के लिए दो गोल (समूह) के बीच प्रतियोगिता होने वाली थी। यह कार्यक्रम रात के 8 बजे से शुरू होने वाला था। गीता के लिए यह बिल्कुल नया अनुभव था। सभी सात बजे तक खाना–पीना करके घर से चौकी निकाल कर उस कार्यक्रम को देखने और भोजपुरी लोकगीत सुनने के लिए बैठ गए थे। इस कार्यक्रम को देखने महिलाएँ नहीं आई थी और आस–पास गाँव के काफी लोग आ गए थे।

लगभग 9 बजे रात में देवताओं (राम, हनुमान आदि) के भजन से चैता

का कार्यक्रम शुरू हुआ–पहला दल के लोग ढोल आदि के ताल पर भक्तिरस के गीत उच्च स्वर में गा रहे थे–

रामजी जनम लेलन चइत मासे,
हनुमान जी जनम लेलन चइत मासे।
बाजे ला बधावा अवधपुर में चइत मासे,
अंजना के अंगना में बाजेला बधावा, चइत मासे।
दोनों दलों ने इस गीता को बारी–बारी से दुहराया।

इसके बाद व्यंग्य–विनोद से भरा श्रृंगार रस के गीतों की झड़ी लग गई–

हैरान बाड़ी ननदी गवनवा खातीर, हो चइत मासे
बेहाल बाड़ी ननदी गवनवा खा तीर, हो चइत मासे।
जियरा में उठेला बिरह के दरदवा हो चइत मासे
पिया अइलन ना कलकतवा से चइत मासे।
हो रामा चइत मासे ।।2।।

गीतों के आरोह–अवरोह तथा ढोलक–झाल के ताल से पूरा बगीचा गुंजायमान हो रहा था। गीता को भोजपुरी गीत समझ में नहीं आ रहा था और उच्च स्वर और राग से गाये गये गीतों और वाद्य यंत्रों के सुर–ताल से वह रोमांचित हो रही थी। लगभग 11 बजे मनोज, विजय, गीता आदि सोने चले गए थे। विजय ने गीता को बताया था कि गीत में आंदि (विवाह) हो जाने के बाद अपने हेरेल (पति) का विदा कराने हेतु नहीं आने से इरिल कुइ (ननद) काफी दुखी थी। गीत के इस भाव से वह काफी रोमांचित थी। वह सोये–सोये अपने भावी बपला और विजय के हेरेल बनने के बाद अपने होंयर (ससुर) के घर विदा होकर जाने की मधुर कल्पना में खो गई थी और निद्रा की गोद में सो गई थी।

देखते–देखते हेरो चन्दु(धान बुनाई का हेरो पर्व) आ गया था। जून माह के प्रथम सप्ताह से ही ईंट बनाने का काम बन्द कर दिया गया था। सभी कारीगर, कुली, रेजा आदि के पारिश्रमिक का हिसाब सिंह जी अपने मुंशी और मैनेजर से करा दिए। सभी को पूर्व में भुगतान किये गए अग्रिम राशि को काटकर (घटाकर) शेष राशि का भुगतान कर दिया गया। सभी महिला कर्मी (रेजा) को उनकी पसन्द की साड़ी, साया और ब्लाउज अग्रवाल वस्त्रालय (फतुआ) से मंगा कर दे दिया गया था। मनोज और विजय को भी एक–एक टी शर्ट मिला था। गीता ने अपनी माँ के लिए भी साड़ी आदि खरीद ली थी।

विजय आदि को बस भाड़ा के लिए देवेन्द्र सिंह अलग से पैसे दे दिये थे। उन्होंने विजय को पुनः अगले वर्ष काम पर आने का निर्देश देकर विदा किया था। सभी को 'सिंह होटल' में निःशुल्क भोजन करा देने के लिए अपने छोटे भाई वीरेन्द्र को कह दिया था।

विजय, मनोज, गीता, पनमती और सूरजमनी सभी सिंह होटल जाकर खाना खाये और फतुहा बस पकड़ने चले गए। दूसरे दिन सभी चक्रधरपुर पहुँच कर मनोहरपुर होते हुए अपने–अपने गाँव चले गए थे। विजय गीता को लेकर उसे घर तक पहुँचा दिया था। गीता को स्वस्थ और नये वस्त्र में देखकर उसकी माँ बसमती बहुत खुश थी। उसने विजय को नास्ता कराकर विदा किया था। गीता विजय को छोड़ने कुछ दूर तक गई थी। विदा होते समय उसने विजय से हाथ मिलाकर मुस्करा कर कहा था–अगले हाट में छोटानागरा मिलने जरूर आओगे। विजय ने मुस्करा कर अपनी सहमति दे दी थी। इस बार विजय को विदा कर जब गीता वापस घर आई तो वह उदास थी मानो विजय के वियोग ने उसके ह्रदय को छू दिया था। उसकी माँ ने विजय को हेरो पर्व में आने का निमंत्रण भी दे दी थी।

पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार विजय और गीता दोनों छोटानागरा हाट में मिले। दोनों चना का छोला खाकर डियंग भी पीये। गीता ने पूछा–'क्या तुम्हारे पिता जी तुम्हारे बपला के लिये किसी डिंडा कुइ के घर भेजने वास्ते कोई अगुआ ठीक किये हैं?'

विजय पर डियंग का हल्का नशा चढ़ गया था। उसने गीता का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा– 'जब हमारे पास एक सुगड़ (सुन्दर) हापानुम डिंडा कुई आ गई है तो अब दूसरी को खोजने की क्या जरूरत है।'

गीता उसकी प्यार भरी बातें सुनकर बोली –'विजय, क्या तुम सचमुच मुझे पसन्द करते हो? क्या तुम मेरी माँ से आंदि की बात करोगे? क्या तुम्हारे पिता इसके लिए अपनी सहमति देंगे?'

विजय–सच पूछो तो तुम जब ईंट भट्ठा मेरे साथ जाने के लिए मिली थी, उसी समय मेरे मन में तुम्हारे प्रति प्यार जग गया था। अब तुम्हीं मेरी पहली और अन्तिम प्यार हो।

गीता – 'ठीक है, अब अपना वादा भूलना नहीं।'

काफी देर तक दोनों प्यार भरी बातें करते रहे थे। गीता ने कहा– 'अच्छा, अब घर जाना होगा, माँ इन्तजार करती होगी।'

विजय–'ठीक है तुम अपनी माँ से भी बपला संबंधी बात कर उनका विचार जान लोगी।'

दोनों हाथ मिलाकर 'जोहार' कहकर अपने गाँव के लिए चल दिए। गीता देर तक विजय को साल वन से होकर गुजरती मोरम की सड़क पर जाते देखती रही थी। आज उसके जीवन का सबसे हसीन दिन था। अब उसे यही चिन्ता थी कि विजय के अपूञ–ऍंगा (पिता–माता) उसे अपनी किमिन (बहु) बनाने के लिए राजी होंगे या नहीं।

देर साम को विजय जब घर लौटा तो उसकी माँ ने पूछा–'कहाँ गए थे? काफी देर हो गई लौटने में।'

विजय–'गीता से हाट में मुलाकात हो गई थी। उसके साथ उसके परिवार का समाचार लेता रहा। उसके घर जाने के बाद मैं लौटा हूँ।'

माँ(सुकुरमनी)–'क्या गीता तुम्हें पसन्द करती है? क्या तुम भी उसे पसन्द करते हो? उसकी माँ भी तो अब उसकी बपला के लिए सोच रही होगी।'

विजय– 'उसकी माँ अभी इस संबंध में कोई चर्चा नहीं की है। वह मुझे बहुत मानती है। गीता भी मेरे साथ ही आंदि करना चाहती है।'

माँ– 'टीक है, मैं तुम्हारे पिता से बात करूँगी। तुम्हारा भाई विनय भी छुट्टी लेकर आ रहा है। उससे और तुम्हारी भाभी सुनीता से भी इस संबंध में बात करूँगी।'

हेरो पर्व के एक दिन पहले विनय एक महीना की छुट्टी लेकर घर आ गया था। गाँव में काफी धूम–धाम से हेरो पर्व मनाया गया। विजय के कई रिस्तेदार भी पर्व मनाने आ गए थे। विजय के काका (फूफा) भी सपरिवार आ गए थे।

पर्व के बाद विजय की माँ ने अपने पति, विनय और बहु सुनीता से गीता के सन्दर्भ में बात की और बतायी कि विजय उसे पसन्द करता है और उसके साथ बपला करना चाहता है।

विजय के पिता ने कहा– 'अच्छा, इस पर बाद में विचार करेंगे। पहले तुम लोग गीता के बारे में पूरी जानकारी ले लो।'

एक दिन विजय की भाभी सुनीता उसे अपने कमरे में बुलाकर पूछी–'कहिये इरिल कोवा (देवर जी) क्या सचमुच गीता से प्यार हो गया है?'

विजय–'हाँ भाभी (हिलि) वह भी मुझसे बहुत प्यार करती है। उसकी माँ भी मुझे अपने लड़के की तरह मानती है।'

सुनीता–'ठीक है, मैं तुम्हारे भैया से बात करूँगी।'

दो दिन बाद रूइवार (रविवार) को गीता के घर हेरो पर्व मनाने विजय चला गया था। गीता के साथ उसकी माँ भी विजय के आने से काफी खुश

थी। गीता के घर में भी कई मेहमान आ गए थे।

सुबह से दिउरी (पुजारी) हेरो पर्व के पूजा–पाठ में लगा हुआ था। पूजा समाप्त होने पर सभी मेहमानों को खिलाया–पिलाया गया। लगभग चार बजे अखड़ा में ढोल–मान्दर की आवाज सुनाई पड़ने लगी थी।

गीता विजय के साथ अखड़ा में गई थी। वहाँ उसकी सहेलियाँ उसका इन्तजार कर रही थी। युवक–युवतियों के दो दल मान्दर के ताल पर नृत्य प्रारम्भ किये थे। विजय एक दोस्त के साथ हेरो पर्व का गीत मधुर राग में छेड़ दिया था–

आषाड़ा अचड़ा पोनइ हिता–एमे सेया आबु
होयो सोंगे दः गजाते होबना ताबु।
सुकु–सुमुकि सोयता गोवा बोंगा सेवा याबु
देसाउलि जयर सुबारे आकडा।
एंगा गोरोब पोरोब नमां जोनोम जातियाबु
निरंसदि बताउलि दो मुलः ताबु।।

भावार्थ– आषाढ़ महीने की पूर्णिमा को अच्छी फसल के लिए पूंजी के रूप में बाबा (धानबीज) लगाते हैं। हवा और वर्षा के साथ खेती का शुभारम्भ करते हैं। सुख और समृद्धि के लिए गोधन की पूजा के साथ–साथ देसाउलि बोंगा (ग्राम देवता) की पूजा जायरा (पूजा स्थल) में सम्पन्न करते हैं। यह ओते एंगा (धरती माता) का पर्व नए सृजन के रूप में मनाते हैं और बताउलि की पूजा भी सम्पन्न करते हैं।

देर रात तक हेरो का सुसुन–दुरङ (नाच–गान) चलता रहा। अधिक रात हो जाने के कारण गीता की माँ ने विजय को रोक लिया था। दूसरे दिन सुबह सभी को जोहार कर विजय अपने गाँव के लिए चल दिया था। गीता कुछ दूर तक उसे विदा करने गई थी।

विजय ने उससे हाथ मिलाकर 'जोहार' किया। विजय ने गीता से कहा–'देखो मैं तो अपनी माँ से तुम्हारे बारे में बता दिया हूँ। भैया–भाभी को भी मालूम हो गया है। अब तुम अपनी माँ से इस संबंध में बात करना। संभव है, मेरे पिताजी इस संबंध में किसी अगुआ को तुम्हारे घर भेजें। अच्छा, तुम हाट के दिन आओगी तो और बातें होंगी।'

इस प्रकार अपनी बातें पूरी कर वह गीता से हाथ मिलाकर विदा हुआ।

हेरो पर्व के मध्य छोटानागरा हाट में चहल–पहल था। विजय के भैया–भाभी भी हाट में आने वाले थे। उसकी भाभी ने कहा– 'देवरजी, इस बार आपके दादा के साथ मैं भी हाट चल रही हूँ। तुम्हारी गीता भी अवश्य

आयेगी। हम लोग उससे मिलना चाहेंगे।'

विजय–'ठीक है, भाभी, गीता हाट में आयेगी। मैं अवश्य मिला दूँगा।'

इस प्रकार विजय अपने भैया–भाभी के साथ छोटानागरा हाट में आ गया था। दोनों(भैया–भाभी) डाक बंगला में ठहर गए थे। विजय गीता को देखने हाट में चला गया था।

उसने देखा कि एक सरई पेड़ के नीचे गीता एक महिला से बात–चीत कर रही थी। विजय जाकर उससे मिला। गीता ने इस महिला से परिचय कराते हुए कहा –'विजय यह हमारी फुफु (फुआ) लगती है।' विजय ने उन्हें जोहार किया। गीता को अलग बुलाकर कहा –'चलो भैया–भाभी तुम्हारा इन्टरव्यू लेने आ गए हैं। दोनों डाक बंगला में हैं।'

गीता अपने फुआ से विदा लेकर विजय के साथ डाक बंगला के लिए चल पड़ी थी। उसके दिल की धड़कन बढ़ गई थी। उसने विजय से पूछा –'तुम्हारे दादा तो फौज में हैं। जरूर कुछ कड़े मिजाज के होंगे।'

विजय–'तुम गलत समझ रही हो। हमारे दादा बड़े खुश मिजाजी और मिलनसार हैं। वे मुझे बहुत प्यार करते हैं। भाभी भी अच्छे स्वभाव की हैं।'

जब दोनों डाक बंगला पहुँचे, बरामदे में उसके भैया–भाभी कुर्सी पर बैठ कर बातें कर रहे थे। थोड़ी दूरी पर कई कुर्सीयाँ खाली पड़ी थीं।

गीता ने हाथ जोड़कर दोनों को जोहार किया। विजय की भाभी ने कहा–'आओ गीता, बैठो।'

विजय एक कुर्सी लाकर रख दिया था। स्वयं कुछ दूर पर बैठ गया था।

सुनीता ने गीता से उसकी पढ़ाई–लिखाई, घर–परिवार के विषय में पूछा।

गीता ने बताया कि पिता के मरे कई वर्ष हो गए। उनके मरने के बाद मेरी पढ़ाई छूट गई। मेरा छोटा भाई आवासीय विद्यालय में पढ़ता है। घर की आर्थिक हालत खराब होने के कारण मुझे बाहर जाकर काम करना पड़ा।

सुनीता– 'आगे तुम्हारा क्या करने का विचार है?'

गीता–'दीदी, अब मैं गाँव में ही रहकर अपनी माँ की देख–रेख करना चाहती हूँ। मेरे गाँव में एक आंगनबाड़ी केन्द्र खुलने वाला है। गाँव के मुंडा काका ने मुझसे आवेदन लेकर मनोहरपुर बी0डी0ओ0 को दे दिया है। उसमें मुझे सहायिका के पद पर रखने का आग्रह किया गया है।'

सुनीता उसके रूप–रंग उसके मधुर स्वभाव और स्पष्टवादिता से काफी संतुष्ट हुई। उसने कहा–'अच्छा अब विजय के दादा से भी मिल लो।'

सुनीता गीता को लेकर विनय के पास चली गई। विनय ने उसे कुर्सी पर बैठाकर उसकी पढ़ाई–लिखाई आदि की जानकारी ली। विनय भी उसके शील–स्वभाव, मधुर बोली आदि से काफी प्रभावित हुआ। पीतृहीन गीता के मन में उसके प्रति सहानुभूति भी हुई।

बातचीत के बीच में विनय द्वारा दिये गये पैसे से डाक बंगला चौकीदार चार प्लेट नास्ता ले आया। चारों नास्ता किये।

गीता के गाँव की कई सहिया उसे लेने आ गई थीं। सभी ने विनय और सुनीता को जोहार किया। गीता ने अब घर जाने की इजाजत मांगी। वह जोहार कर सहेलियों के साथ चली गई।

उसके बाद विजय भी अपने भैया–भाभी के साथ गाँव वापस आ गया था। साम को गाँव का मुंडा बागुन बोदरा भी विनय से मिलने आ गया था।

विनय ने गीता और विजय के संबंध में बताया। उसने गीता के आचार–व्यवहार की काफी तारीफ की।

मुंडा ने कहा–'गीता का पिता सनिका गगराई मेरा परिचित था। वह वहाँ के मुंडा का डकुआ था और काफी अच्छा स्वभाव का था। एक दुर्घटना में उसकी मृत्यु हो गई थी।'

विनय और सुनीता ने गीता के संबंध में माता–पिता को भी जानकारी दी और उसे विजय के साथ बपला की बातचीत को आगे बढ़ाने के लिये अपनी सहमति दे दी थी।

इस प्रकार सब का विचार हुआ कि हमलोगों की ओर से बागुन काका को अगुआ बनाकर भेजा जाय।

इसके लिये विनय बागुन के साथ गाँव के दिउरी ब्रजमोहन के घर जाकर विजय के बपला के लिये हपानुम गीता के 'नेलनय' (कन्या निरीक्षण) के संबंध में शुभ दिन और लग्न बताने को कहा। दिउरी ने रूइबार (रविवार) को शुभ दिन बताया।

रविवार को बागुन मुंडा को अगुआ के रूप में गीता को देखने के लिए विजय के पिता ने कुछ नगद राशि आर्शीवाद के रूप में गीता को देने हेतु दे दिया।

लगभग 12 बजे बागुन मुंडा गीता के घर पहुँच गया। गीता की माँ घर पर ही कुछ महिलाओं के साथ बातचीत कर रही थी। बागुन ने अपने डकुआ को भेजकर गीता की माँ को अपने आने की पूर्व सूचना दे दी थी। अतः गीता की माँ भी अगुआ के स्वागत के लिए तैयार थीं।

बागुन मुंडा ने गीता की माँ को जोहार किया। उन्होंने उन्हें कमरे में ले

जाकर खाट पर बैठाया। लोटा–पानी से उनका स्वागत किया।

इस बीच गाँव के मुंडा भी आ गए। बागुन मुंडा ने गीता की माँ से कहा–'हिलि (भाभी) आज हम गीता का विजय के साथ बपला संबंधी 'नेलनम' (कन्या देखने) के लिये आये हैं। अतः गीता को इस रश्म के पूरा करने के लिए बुला दें।'

गीता इस संबंध में 'नेलनम' के लिए पूर्व से ही सज–धज कर तैयार थी। वह लोटा–पानी लेकर आई और उनका पैर छूकर जोहार की। मुंडा ने उसे पास रखे गन्डु (मचिया) पर बैठने को कहा। उसके संबंध में कुछ जानकारी ली। अन्त में उसे इस रश्म के तहत 101/– (एक सौ एक) रूपया उपहार के रूप में दिया। गीता हाथ जोड़ जोहार कर चली गई।

बागुन (अगुआ) ने गीता की माँ से कहा– 'अच्छा, आज डिंडा कुइ का 'नेलनम' का रश्म तो हो गया। अब बपागे (छेका) और गोनोङ (बधु मूल्य) आदि तय करने के लिये विजय के परिवार को तो निमंत्रण देना होगा।

गीता की माँ–'हम लोगों ने तो विजय को पसन्द कर लिया है। अब आपलोग ही विजय के परिवार को बुलाने का दिन तय कर लो।'

बागुन ने गीता के गाँव के मुंडा जोगेन बोदरा से विमर्श कर मांगड़हर (मंगलवार) का शुभ दिन बपागे (छेका) के लिय तय किया।

साम को बागुन अपने गाँव लौट गया। उसने विजय के पिता सिदिउ से मिलकर कहा कि गीता की माँ द्वारा मंगलवार को गीता के बपागे (छेका) के लिए निमंत्रण दिया गया है। 'गोनोङ' की बात भी उसी दिन होगी।

विजय जब अपने मित्र से मिलकर लौटा तो उसकी हिलि (सुनीता) ने हँस कर व्यंग्य करते हुए विजय से कहा–'तुम्हारे प्रेम की बंशी में गीता नाम की 'सोय' मछली फंस गई है। अब उसे लाने के लिए तैयार रहो।'

भाभी ने बताया कि गीता 'नेलनम' अगुआ बन कर मुंडा गोमके पूरा कर आये हैं। मंगलवार को हमलोग जाकर गीता का 'बपागे' (छेका) कर देंगे।

विजय ने भाभी को कहा–'आप को एसु–एसु जोहार और धन्यवाद (बहुत–बहुत नमन और धन्यवाद)।' उसको विश्वास हो गया कि उसकी मुराद सिङबोंगा शीघ्र पूरी कर देंगे। उस रात विजय बहुत देर तक गीता की मधुर याद में जागता रहा था।

सोमवार को विनय अपनी पत्नी सुनीता के साथ राउरकेला जाकर गीता के लिए साड़ी आदि के साथ एक पोला (अंगुठी) ले आया। यह भी तय हुआ कि गीता को छेका में कुछ नगद भी दे दिया जायेगा।

मंगलवार को एक जीप ठीक कर विनय 'बपागे' के सामान के साथ

एक घड़ा डियंग भी ले लिया था। उसके साथ मुंडा, उसकी पत्नी सुनीता, उसके रिस्ते में इरिल कुई (ननद) बसन्ती, हतोमहोन (फुआ की बेटी) सोनामुनी, आदि के साथ शुभ मुहुर्त में गीता के गाँव के लिए प्रस्थान किये।

गीता के घर भी मुंडा, दिउरी तथा गाँव की कुछ महिलाएँ आ गई थीं। गीता की सहेलियों ने भी उसे सजा–संवार कर 'बपागे' के लिए तैयार कर दिया था।

विनय आदि के पहुँचते ही गीता की माँ आदि आकर सभी का स्वागत कर कमरे में ले गई। सभी का लोटा पानी से स्वागत किया गया और कुछ नास्ता कराया गया।

उसके बाद जोगेन बोदरा (मुंडा), दिउरी आदि की उपस्थिति में गीता की सहेलियां उसे लेकर 'बपागे' के लिये ले आई। गीता की माँ आदि उसे फर्श पर बिछे दरी पर लाकर बैठा दी थीं। बैठने के पहले गीता ने हाथ जोड़कर सभी को 'जोहार' किया।

उसके बाद बपड (छेका) का रश्म शुरू हुआ। दिउरी ने इस निमित्त कुछ गोआरि का मंत्र पढ़कर वस्त्रादि गीता को सुनीता द्वारा प्रदान किया गया। गीता उपहार के वस्त्र, नगद राशि, अंगुठी आदि प्राप्त कर पुनः सभी को जोहार कर सिर झुका कर दूसरे कमरे में अपनी सहिया के साथ चली गई थी।

इसके बाद बागुन मुंडा ने गीता की माँ से गोनोङ सिङ् बपला (शादी के लिए वधु मूल्य) के संबंध में कहा–'अच्छा हिली, छेका हो गया अब 'गोनोङ' के संबंध में आप कुछ कहो।'

गीता की माँ ने कहा–'देखो गोमके, मेरे पास थोड़ा ओते (खेत) है। मैं गोनोङ में उरि या गुंडि उरि (बैल या गाय) लेकर क्या करूँगी। यह बपला विजय और गीता के आपसी रजामन्दी (राजी खुशी) से हो रहा है। इसलिए आप लोग जो गोनोङ देंगे, उसे हम स्वीकार करेंगे। शादी के बाद तो विजय मेरा अरातडि (दामाद) के साथ ही कोआ होन (बेटा) जैसा हो जायेगा।'

गीता की माँ की बातें सुनकर सभी बहुत खुश और सन्तुष्ट हुए। यह तय हुआ कि गीता और विजय की आंदि (विवाह) विजय के घर पर ही सम्पन्न होगी।

इसके बाद दोनों ओर से 'तिल डियंग' की रश्म पूरी की गई। 'बपड' के सम्पन्न होने की खुशी में सहभोज का आयोजन किया गया, जिसमें दोनों पक्ष के लोगों को मेरोमजिलु (खस्सी का मांस), मांडि(भात), दालि (दाल) उतु (सब्जी) आदि के साथ डियंग भी चला।

प्रीतिभोज के बाद दोनों पक्षके लोग बैठकर बपला के आगामी कार्यक्रम को सम्पन्न करने पर विचार करने लगे। दिउरि के साथ आंदि एरे को (शादी के लिये सगुन विचार) पर चर्चा हुई।

चूँकि विजय के दादा (भाई) विनय को दो सप्ताह बाद अपनी ड्यूटी पर आसाम लौट जाना था। अतः उसके पहले ही विवाह को सम्पन्न कराने का निर्णय लिया गया।

गीता की माँ ने कहा– 'आप लोग घर वापस जाकर विजय के माता–पिता से बात कर आंदि का जो भी शुभ दिन तय करेंगे, उसी को हम लोग भी मान लेंगे।'

इस प्रकार विनय गीता की माँ, मुंडा, दिउरी आदि को जोहार कर सभी को लेकर जीप से गाँव के लिए प्रस्थान किया।

घर पर सभी लोग उन लोगों के खुशी–खुशी वापस आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। वापस आकर विनय ने अपने पिता और माँ से यह खुश खबरी सुना दिया कि यह आंदि बिना गोनोङ के ही तय हो गया। गीता की माँ ने इसी हेरो चन्डु में शादी सम्पन्न करने की सहमति दे दी है। अब अपने दिउरी गोमके से आंदि का शुभ लगन और मुहुर्त की जानकारी लेकर गीता की माँ को सूचित कर देना होगा।

बुधवार को गाँव के दिउरी और मुंडा को बुलाकर सिदिउ ने शादी के लिए शुभ दिन तय करने को कहा। उन्होंने एरेको (सगुन विचार) विचार करते हुए आगामी सोमवार पोनइ (पूर्णिमा) को आंदि के लिए सबसे अधिक शुभ दिन बताया और एराको (विवाह का) रश्म भी उसी दिन सम्पन्न करना तय हुआ। उसी दिन रात में एराओःती गुसिञ (पाणी ग्रहण संस्कार) को सम्पन्न करने का निर्णय लिया गया। इसकी सूचना निमंत्रण के रूप में गीता की माँ को मुंडा के डकुआ द्वारा दूसरे दिन भेज दी गई।

सिदिउ दूसरे दिन विनय, विजय और सुनीता को राउरकेला जाकर गीता के लिए विवाह के सभी लीजा (साड़ी आदि) तथा आभूषण लाने हेतु भेज दिया। आभूषण में सकोम (कंगना) इतर मुरकी (कर्ण फूल), मुटा (नथिया) हिसिर (गले का हार), दुपिल सोना (मांगटीका) तथा अन्दु (पायल) लेने की सूची दे दिया था। संध्या समय राउरकेला से वस्त्र, आभूषण आदि खरीद कर तीनों वापस आ गए थे।

तीसरे दिन विनय वस्त्रादि गीता के घर जाकर उसकी माँ को दे दिया था। विनय ने गीता की माँ को बता दिया कि गीता और परिवार के अन्य सदस्यों–रिश्तेदारों को विजय के गाँव ले जाने के लिए सोमवार को एक जीप

भेज दी जायगी। एक और जीप बारातियों के लिए भी आ जायेगी। इसके बाद विनय नास्ता कर संध्या समय अपने गाँव लौट गया था।

वस्त्र, आभूषण आदि देखकर और सोमवार को विजय के घर जाने और विवाह सम्पन्न होने के शुभ समाचार से गीता काफी रोमांचित थी।

पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार सोमवार को लगभग 12 बजे दो जीप गीता के घर के पास आ गई थी। सभी लोग अतिथियों के खाना–पीना कराने में लग गये थे। गीता की सहेली उसे आंदि के लिए नये वस्त्र, आभूषण आदि से सजा रही थीं। उसके कई रिश्तेदार आज ही आये थे।

लगभग 3 बजे गीता, उसकी माँ, दीदी, फुआ, भाई आदि जीप से विजय के घर के लिए प्रस्थान किये। गाँव की सीमा पर जीप रूक गई। वहाँ गीता, उसकी माँ आदि के साथ 'उलि साकी सुतम' (आम्र वृक्ष में पवित्र धागा बांधना) के धार्मिक अनुष्ठान को गीता ने आम की डाल में पीले रंग का सूत बांधकर जयरएरा (देवी) और देशाउलि बोंगा(ग्राम देवता) से गोआरि (प्रार्थना) करते हुए कहा–'हे देवी माँ और ग्राम देवता, आज मैं आपलोगों से दूर अपने आंदि के लिए जा रही हूँ। आप कृपाकर आर्शीवाद दें कि मैं आंदि के बाद खुशी–खुशी आपका फिर दर्शन करूँ।'

गीता को लेकर लगभग 4.30 बजे जीप विजय के घर पहुँच गई। उन सभी को एक कमरा में ठहराया गया था। बाराती भी ढोल, नगाड़ा, मांदर आदि के साथ लगभग 5.30 बजे आम के बगान में लगाये गये सामियाना में पहुँच गए थे।

विजय के आंगन में सरई (साल) की डाल से बनाया गया मंडवा शादी के लिए सज–धज कर तैयार था। वर–वधु के लिए लीप–पोत कर वेदी तैयार की गई थी। गेलबोरोम का प्रतीक अल्पना भी दिउरी द्वारा बना दिया गया था।

बाराती जब जनवासा में पहुँचे तो नगाड़ा मांदर, रूतु आदि के ताल पर सुसुन (नृत्य) शुरू हो गया था।

लगभग 6.30 बजे वर पक्ष के लोग भी बाजा–गाजा के साथ बारातियों के सम्मान में नाचते–गाते जनवासा में पहुँच गए थे। सभी मिलकर आंदि के गीत गाकर नृत्य करने में व्यस्त और मस्त थे। लगभग 7.30 बजे बाराती को लेकर विजय के घर आ गए। सभी विवाह के गीत गाकर मस्ती में नृत्य कर रहे थे।

विजय भी वर के वेश में नये वस्त्र में सज–धज कर तैयार था। वर–कन्या को मंड़वा में आंदि के धार्मिक अनुष्ठान के लिए बैठाया गया।

दिउरी द्वारा निर्विघ्न विवाह सम्पन्न कराने के लिए सभी बोंगा, एरा और रोआ की पूजा मंत्रपाठ से सम्पन्न किया जा रहा था। इसके बाद 'सिन्दूरि रकब' (सिन्दूर दान) का पवित्र रश्म वर के रूप में विजय द्वारा वधु गीता के मांग में सिन्दूर लगाया गया। इस प्रकार विजय और गीता विधिपूर्वक हेरेल–येरा (पति–पत्नी) के पवित्र बन्धन में बंध गए।

आंदि सम्पन्न होने के बाद विवाह का सहभोज सम्पन्न हुआ। सभी प्रेम पूर्वक मेरोमजीलु, बुगिन मन्डी, दालि, उतु आदि खाकर सन्तुष्ट हुए। कई घड़ा डियंग भी पीते–पीते समाप्त हो गया। रात भर खाना–पीना के बाद भी नाच–गान चलता रहा।

इस प्रकार 'ईंट भट्ठा' से शुरू हुआ विजय और गीता के प्यार का सफर पूरा हो गया। 'दहेज रहित' यह एक आदर्श विवाह था। अब दोनों को अपने दाम्पत्य जीवन की चिर प्रतीक्षित मंज़िल मिल गई थी।

दूसरे दिन बारात लौट गई थी। दो दिन बाद गीता अपने भाई और विजय के साथ एक दिन के लिए अपने मायके गई थी। वापस आने के बाद उसने विधिवत 'अदिञ' (पूर्वजों का पूजा स्थल) में अपने हाथ से बनाया खाना (चावल आदि) सभी पूर्वजों को अर्पित की। अब गीता विजय के कुल–गोत्र में सम्मिलित हो गई थी।

आंदि सम्पन्न होने के बाद विनय अपने ड्यूटी पर आसाम आर्मी हेडक्वार्टर के लिए प्रस्थान कर गया था। गीता गगराई से अब श्रीमती गीता सवैया बन गई थी। उसके होंयर (ससुर), हनर (सास), अजि हनर (जेठ सास), बउ होंयर (जेठ) इरिल कुइ (ननद) आदि उसके आचार–व्यवहार और गृहस्थी के कार्य से काफी खुश और सन्तुष्ट थे।

गीता का सिदिउ सवैया के घर में किमिन (बहु) बनकर आना इतना शुभ था कि दो महीना के भीतर चिड़िया माइन्स का काम पुनः शुरू हो गया। उसके फूफा की पैरबी से विजय को भी मुंशी (मेठ) के काम पर अगस्त के प्रथम सप्ताह में योगदान के लिए नियुक्ति पत्र आ गया था। यह गीता के दाम्पत्य जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि थी।

❐❐❐

डॉ. आदित्य प्रसाद सिन्हा

शैक्षणिक योग्यता—एम.ए. (हिन्दी), पी.एच.डी. (हो भाषा) पत्रकारिता में डिप्लोमा।

आई.सी.डी.एस. में बेसिक प्रशिक्षण तथा उन्मुखीकरण प्रशिक्षण।

सरकारी सेवा—कल्याण विभाग (बिहार-झारखण्ड) में सहायक कल्याण पदाधिकारी/ अनुमण्डल कल्याण पदाधिकारी/ जिला कल्याण पदाधिकारी / परियोजना पदाधिकारी / सहायक निदेशक (जनजातीय कल्याण शोध संस्थान) के पद पर 33 वर्षों तक कार्यरत रहकर सेवा निवृत्त।

वर्तमान कार्य-कलाप—अध्यापन, लेखन, प्रकाशन, पत्रकारिता, शोध-निर्देशन, परामर्शी कार्य। श्री कृष्ण लोक प्रशासन संस्थान तथा एकेडेमिक स्टाफ कॉलेज, राँची में आमंत्रित व्याख्याता। जे. पी. सामाजिक एवं औद्योगिक अध्ययन संस्थान, राँची में लगभग 2 वर्षों तक निदेशक का कार्य सम्पादन। 'एट ए ग्लांस' न्यूज एण्ड इन्फॉर्मेशन सर्विसेज, लालपुर थाना के निकट, राँची के लिए पटकथा लेखन एवं शोध परामर्श।

शोध कार्य—1. हो लोक कथाओं का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन, 2. लघु वन पदार्थों के व्यापार में टी.सी.डी.सी. की भूमिका (टी.आर.आई.), 3. जनजातीय क्षेत्र में 'डायन प्रथा' का प्रचलन (राष्ट्रीय महिला आयोग द्वारा प्रायोजित)

पुस्तक लेखन—(1) हो लोक कथा : एक अनुशीलन (2) हो भाषा और साहित्य का इतिहास (3) ''खरवार'' जनजाति का मोनोग्राफ (जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, रांची द्वारा प्रायोजित) (4) फेतल सिंह खरवार : एक जीवनी (जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, रांची द्वारा प्रायोजित) (5) पतझर और पलाश (त्रिभाषी काव्य संग्रह) (6) हो कोआः कजि जुड़ि कजी को (हो भाषा की कहावतें आदि) (7) लोक जीवन के सांस्कृतिक प्रसंग (जनजातीय प्रथा, परम्परा, संस्कृति, लोक विश्वास आदि विषयक निबंध संग्रह)। (8) 'चौथा चूल्हा' एवं 'आरण्यक' (कहानी संग्रह) (9) संबंधित पत्र-पत्रिकाएं :—आज/प्रभात खबर/हिन्दुस्तान/दैनिक जागरण/ आदिवासी / चौमासा (आदिवासी लोककला अकादमी, भोपाल/तरंग भारती) आदि।

वृतचित्र निर्माण हेतु पटकथा लेखन / शोध निर्देशन :—

(क) नियोन फिल्मस, राँची के लिए :—1. अरण्य धर्मा सौरिया पहाड़िया, 2. अरण्य धर्मा माल पहाड़िया, 3. अरण्य धर्मा बिरहोर, 4. प्रकृति की अराधना : करम का त्योहार, 5. यात्रा के पचास वर्ष। (असुर/ बिरहोर/ कोरवा/ बिरजिया/ परहिया/ सवर/ हिलखड़िया/ सौरिया पहाड़िया/ माल पहाड़िया/ हो)। (कुल 9 एपिसोड) (ख) 'एट ए ग्लांस के लिए विभिन्न विषयों पर विभिन्न विभागों के लिए वृतचित्र का प्रस्ताव / पटकथा लेखन एवं शोध परामर्शी सेवा। (ग) श्रुति विजुअल इन्फॉर्मेशन प्रा. लि., लालपुर, राँची के लिये परामर्शी (वृत चित्र निर्माण/ शोध संबंधी)। (घ) राँची दूरदर्शन केन्द्र / आकाशवाणी के वार्ताकार।

सामाजिक संगठन से सम्बद्धता :—

1. आजीवन सदस्य, भारतीय रेडक्रॉस सोसाइटी, राँची। 2. सचिव, प्रज्ञा शोध एवं अध्ययन केन्द्र, राँची।

3. मुख्य संरक्षक, झारखण्ड राज्य पेंशनर समाज, राँची।

पता—हेसल, पो. हेहल, राँची-834005, मोबाइल : 07352139017

ISBN : 978-93-82695-89-9